मछली मरी हुई

मछली मरी हुई

- राजकमल चौधरी

मछली मरी हुई

राजकमल

अर्थ-चक्र और 'लेस्बियाँ' के विषय में

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

राजकमल चौधरी

मछली मरी हुई

भारतीय राजदूतावास
उपहार
काठमाडौं

राजकमल प्रकाशन

H
891.433
CHA/M

नेपाल-भारत सांस्कृतिक केन्द्र पुस्तकालय
नं. 13692
दि. ....

प्रकाशक :
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण : १९६६

© १९६६, राजकमल चौधरी, पटना

कलापक्ष :
हरिपाल त्यागी

मूल्य : ५ रुपये

मुद्रक :
नवीन प्रेस,
दिल्ली-६

श्री

"बरसात हुई। जल भर आया···
सूखी पड़ी नदी में
नीली मछली मरी हुई,
जी उठी···"

आदरणीय बन्धु
श्री रेवतीरमण झा
(मेरी एक पुरानी रचना 'एक ही वृत्त की रेखाएँ'
आपको बहुत पसन्द थी !)
की सेवा में,
सप्रेम···

१६६२ (जून-जुलाई) में, हमारे एक मित्र-परिवार की दो स्त्रियों को एक साथ मानसिक उत्तेजना और विक्षेप के कारण, अस्पताल भेजा गया था।...यह उपन्यास उन्हीं दिनों लिखा जा रहा था। हम लोग कलकत्ते में 'मूर-एवेन्यू' से लगातार 'फ्री-स्कूल स्ट्रीट' के इलाक़ों में आवारा घूमते रहते थे और ऐसी ही अविश्वसनीय, काल्पनिक एवं अकर्मण्य वस्तुओं में विश्वास करते थे।... ललित शर्मा, उमा सहगल, परमेश, सूर्यदेव सिंह अमर, मंजू हालदार, अभय जैन, मदनलाल सेठी, मानव गुप्त, ओमप्रकाश मनचन्दा, चम्पा कुलश्रेष्ठ, अरुन्धती मुखर्जी, बैजू शाह—हम लोग कई चौराहों पर इकट्ठे होते थे, कई दूसरी गलियों में अलग होने के लिए। इन सबके प्रति आभार प्रकट करना न तो उचित है और न आवश्यक।...और न यह कहना ही आवश्यक है कि किसी भी व्यक्ति-विशेष का चित्र, चरित्र अथवा परिचय 'मछली मरी हुई' में नहीं है। उपन्यास में वर्णित सूचनाएँ संयोग और कु-अवसर से प्राप्त हुई हैं, इच्छित अनुभव से नहीं !...कलकत्ते में 'कल्याणी-मेन्शन' कहीं नहीं है।

—राजकमल चौधरी

'कामायनी'
सैदपुर-भिखना पहाड़ी
पटना-४

मरी हुई मछलियों के बारे में

एक

'लेस्बियाँ'···अर्थात् समलैंगिक यौनाचारों में डूब गई हुई स्त्रियों के बारे में, खासकर हिन्दी में, बहुत कम ही लिखा गया है। भारतीय स्त्रियों के निजी चरित्र को नंगी आँखों से देखने का अवसर और 'संयोग' हम लोगों को नहीं मिल पाता है। कहीं पर्दादारी के कारण, और कहीं दूसरी जगह बे-पर्दगी के कारण।

दो

१९५९ (अगस्त) में 'लहर' पत्रिका, अजमेर के कहानी-विशेषांक में मेरी एक कहानी प्रकाशित हुई थी, 'बारह आँखों का सूरज'। 'विनोद' पत्रिका, कलकत्ता के वार्षिक अंक (१९६१) में, मैंने एक दूसरी कहानी लिखी, 'सामुद्रिक'। इन दो कहानियों के सिलसिले में मुझे

होमोसेक्सुअलिटी के बारे में सूचनाएँ और घटनाएँ एकत्र करनी पड़ीं। ...लेकिन, 'मछली मरी हुई' लिखने के समय मैंने महसूस किया कि निर्मल पद्मावत की 'दास्ताने-हम्ज़ा' बयान करते हुए इन घटनाओं-सूचनाओं का उपयोग किया जा सकता है।

विदेशी भाषाओं में भी इस विषय पर गिनती की ही किताबें लिखी गई हैं। 'फ़ीमेल सेक्स पर्वर्शन' (डॉ० मौरिस सिडेक्ल) १९३८ में, और 'सेक्स वैरिएन्ट्स' (डॉ० जार्ज डब्ल्यू० हेनरी) १९४१ में प्रकाशित हुईं। स्त्रियों के समलैंगिक यौनाचार के बारे में, इन्हीं दो किताबों में पहली बार बातें की गईं। और, इस यौनाचार को एक मानसिक रोग की 'स्वीकृति' मिली।

१९५१ में 'द होमोसेक्सुअल इन अमेरिका' (रोनाल्ड वेब्सटर कोरी) प्रकाशित हुई, और 'द सेकेन्ड सेक्स' (सिमॅन द बोवुआँ) १९५२ में। फिर, १९५४ में इस विषय पर पूरी एक किताब 'फ़ीमेल होमोसेक्सुअलिटी' (फ्रैंक एस० कैप्रिओ) आई। इन किताबों के अतिरिक्त, डॉक्टर किन्से की पुस्तक 'सेक्सुअल बिहेवियर इन द ह्यूमेन फ़ीमेल' है। कुछ उपन्यास, कहानियाँ और आत्मकथाएं भी अँग्रेजी-साहित्य में हैं। डायना फ्रेडरिक्स की आत्मकथा १९३९ में प्रकाशित हुई, जिसकी ओर विश्व-भर के बुद्धिजीवियों और मानसशास्त्रियों का ध्यान आकृष्ट हुआ।

यह कहना ग़ैरज़रूरी है कि मैंने ये सारी पुस्तकें पढ़ी हैं।

तीन

संसार के लगभग सभी 'सभ्य' देशों में पुरुषों का समलैंगिक आचरण क़ानून द्वारा वर्जित है। स्त्रियों को, अधिकतर देशों में यह स्वाधीनता अब तक मिली हुई है। पेरिस, न्यूयार्क, टोकियो जैसे शहरों में सम्पन्न और स्वाधीन स्त्रियों ने अपने लिए ऐसे 'क्लब' और आरामघर बनाए हैं, जहां अपनी 'प्रेमिका' के साथ एकत्र होकर, वे विभिन्न उपायों और उपचारों से समलैंगिक सहजाचार करती हैं। क़ानून इन्हें रोक नहीं पाता।

प्रतिष्ठित ग्रमरीकी जज, मौरिस प्लोसोव ने ग्रपनी किताब 'सेक्स एण्ड द लॉ' में यह सवाल उठाया है। पुरुषों के लिए जो सहजाचार वर्जित है, स्त्रियों को उसकी ग्राज़ादी क्यों मिली हुई है ?

इस प्रकार के यौन-सम्बन्धों के प्रति प्लोसोव ग्रौर ग्रन्य ग्रनुदार विद्वानों ग्रौर विशेषज्ञों के मन में ग्रादर नहीं है, उदारता भी नहीं। लेकिन, ये ग्रौरतें इच्छित ('पर्वर्शन' की हद तक) यौन-कार्यों की स्वाधीनता माँगती हैं···

चार

हमारे देश में जनाना 'क्लब' नहीं हैं, ग्रौर न ही यहाँ की 'देसी' ग्रौरतों को ग्राधुनिक तौर-तरीकों से यह सब करने-सहने की जानकारी ही है।

हमारे देश की ग्रौरतें समलैंगिक ग्राचरणों में लिप्त रहकर भी, ग्रधिकांशतः समझ नहीं पातीं कि वे क्या कर रही हैं, ग्रौर किस मतलब से कर रही हैं···करती हैं ग्रवश्य, लेकिन नींद में, नशे में, ग्रनजाने कर लेती हैं। ग्रौर, ग्रपने कुसंस्कारों ग्रौर ग्रन्धेपन में जकड़ी हुई, ग्रधिक 'धार्मिक' ग्रौर ग्रधिक 'संत्रस्त' बनी रहती हैं।

पाँच

पिछली बड़ी लड़ाई के बाद, कलकत्ता शहर में नई पीढ़ी के व्यापारियों की एक जमात एक सुबह सोकर उठने के बाद, ग्रचानक पूँजी, प्रभुत्व ग्रौर उद्योग-धन्धों की बन्द तिजोरियाँ खोलकर, नये-से-नया व्यापार करने के लिए चौरंगी, डलहौज़ी-स्क्वायर, महात्मा गाँधी रोड, धर्मतल्ला ग्रौर पुरानी क्लाइव-स्ट्रीट में, ग्रमरीकी शैली के ऊँचे दफ़्तरों में बैठ गई।

···निर्मल पद्मावत इसी जमात का एक व्यापारी है। इतनी बड़ी पूँजी, ग्रौर इतने बड़े 'कल्याणी-मेन्शन' का मालिक हो ज़ाने के बाद भी, निर्मल काले संगमरमर की 'मूर्ति' बनकर, वहीं-का-वहीं रुका क्यों रह

गया···यह मेरे इस छोटे-से उपन्यास का विषय नहीं है। विषय यह भी नहीं है कि शीरीं पद्मावत को एक साधारण पुरुष की साधारण पत्नी बनकर जीवित रहने का अधिकार मिला या नहीं !···इस उपन्यास में विषय नहीं है, विषय-प्रस्ताव है···मात्र विषय-प्रस्ताव !

राजकमल चौधरी
२०-७-६५

पुनरुक्ति : पांडुलिपि प्रेस में जाने से पूर्व, एक बार फिर से देख जाने का अवसर प्रकाशकों ने मुझे दिया है, मैं उनका आभारी हूँ।

राजकमल चौधरी
१३-१२-६५

१

इस वक्त यहाँ कौन आया है ? कौन है वह ? कैसी नक़ाब लगाकर आया है ? काली-पीली नक़ाब ? और वह हम लोगों से क्या चाहता है ?

दरवाज़े की घंटी लगातार बजने लगी। घंटी नहीं बज रही है— डॉक्टर रघुवंश ने अपने मन को यह भ्रम देने की कोशिश की। घंटी बज नहीं रही है। दरवाज़े के बाद सीढ़ियों पर खड़ा कोई अजनबी प्रतीक्षा कर नहीं रहा है। कोई अजनबी नहीं ! लेकिन भ्रम स्थापित नहीं हो सका। आवाज़ बहुत तेज़ गूँजती है और समाधि तोड़ देती है। ध्यान जम नहीं पाता। रोशनी बिखर जाती है, फूटे हुए बल्ब की तरह ! कान जख़्मी हो रहे हैं। आवाज़ ध्यान तोड़ देती है।

प्रिया दरवाज़ा खोलने ही जा रही थी कि पिता ने कहा, "अर्जेन्ट

केस नहीं हो तो कहना, सुबह आइए।"

डॉक्टर रघुवंश जितने श्रेष्ठ सर्जन हैं, उतने ही सज्जन भी हैं। शीतलदास मेडिकल कॉलेज में इतना सधा हुआ हाथ किसी के पास नहीं। पत्नी नहीं है। परिवार में और कोई नहीं है। सिर्फ़ अठारह-बीस साल की यह प्रिया है, मेडिकल कॉलेज में ही पढ़ती है थर्ड-इयर में। तेज़ लड़की है। आज्ञाकारिणी और अभिमान से भरी हुई। स्वभाव में माँ पर गई है। डॉक्टर साहब शासन नहीं करते, स्वाभाविक विकास में आस्था रखते हैं। साधारण भारतीय पिताओं की तरह उपदेश भी नहीं देते कि ओढ़नी का पल्लू गले में साँप की तरह लटकाना नहीं चाहिए, कमीज़ का ऊपरी हिस्सा अच्छी तरह ढँककर रखना चाहिए।

प्रिया को इन उपदेशों की आवश्यकता नहीं है। वह समझदार है, कॉलेज के लड़कों से मिलना-जुलना पसन्द नहीं करती। अलग रहती है, औरों पर भारी और गम्भीर बनी रहती है। माँ का रूप और स्वभाव मिला है उसे, और पिता का व्यक्तित्व!

अक्ल और अनुभवों के साथ स्वाभाविक रूप से विकसित होती हुई लड़की, प्रिया अचानक ज़ोर से चीख़ पड़ी। प्रेत-आतंक की बीमार औरतें कभी-कभी इसी तरह नींद में चीखती हैं। दरवाज़े पार करके, बरामदों में गूँजती हुई, दीवारों से टकराती, चोट खाती हुई उसकी वह लम्बी और सुनसान चीख डॉक्टर रघुवंश के एकान्त कमरे में तड़पने लगी। टेबुल लैम्प की रोशनी धीमी पड़ गई। सामने दीवार पर टँगे आदमक़द फ्रेम में मुसकराती हुई ऑयल पेण्टिंग की कल्याणी चुप हो गई। डॉक्टर रघुवंश ने सिर उठाकर दरवाज़े की तरफ़ देखा।

वे ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन के जरनल में उलझे हुए थे। कैंसर के इलाज की सम्भावनाओं पर एक महत्त्वपूर्ण निबन्ध प्रकाशित हुआ है। निबन्ध के लेखक डॉ० रोमोनोफ़ कई महीने तक उनके साथ न्यूयार्क के नेशनल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में थे। लेकिन प्रिया की चीख अब तक उनके कमरे में तड़प रही है। चश्मा सँभालकर वे उठे और गम्भीर स्वर में बोले,

"क्या बात है ? प्री, क्या हो गया ?"

प्री यानी प्रिया हाँफती हुई, लगभग बेहोश होती हुई ग्राई ग्रौर ग्रपने पिता के भारी शरीर से लिपट गई। सीढ़ियों के सिरे पर, दरवाज़े के पास बारह गज़ का एक रॉयल-बंगाल टाइगर खड़ा था। ग्रलादीन के चिराग़ से निकला हुग्रा एक काला जिन्न ! "बोलो ग्रलादीन, क्या चाहते हो ? फारस की शहज़ादी ? कामरूप की देवदासी ? मिस्र की···!" लोक-कथाग्रों का चीनी जादूगर, काला लबादा पहने हुए, हाथ में जादू की काली छड़ी लिये, सिर में काला रूमाल लपेटे, दरवाज़े पर ग्राकर खड़ा हो गया था।

लड़की का यह हाल देखकर, डॉक्टर रघुवंश चिन्ता में पड़ गए। कल्याणी की यह निडर लड़की किस ग्रावाज़ से बेहोश हो रही है ? प्रिया का सिर ग्रौर पीठ सहलाते हुए मन-ही-मन ग्रपने देवता का नाम लेते हुए उन्होंने कहा, "होश में ग्राग्रो ! देखो प्री, मैं क्या पूछ रहा हूँ ? देखो···"

प्रिया डॉक्टर रघुवंश की छाती से लिपटी थी। ग्रपनी बाँहों से उसने ग्रपने पिता को कसकर बाँध लिया था। लेकिन वह काँप रही थी, तेज़ हवा में दीये की लौ की तरह। थोड़ी देर बाद उसने लगभग सिसकती हुई ग्रावाज़ में कहा, "पापाजी, दरवाज़े का बल्ब फूट गया है। वहाँ ग्रँधेरे में एक काला हब्शी खड़ा है जिन्न की तरह। उसकी ग्राँखें टार्च की तरह जल रही हैं ग्रौर पापाजी, उसके हाथों में राइफल है !···हो सकता है, वह हब्शी नहीं हो, कोई जिन्न···"

बायाँ पाँव ज़रा खराब है। छड़ी की ज़रूरत पड़ती है। वाल-नट की काली छड़ी के बिना 'कल्याणी-मेन्शन' का मालिक निर्मल पद्मावत कहीं नहीं जाता। राइफल नहीं, उसके बाएँ हाथ में हमेशा छड़ी ही होती है।

डॉक्टर रघुवंश हँसने लगे। उनका ठहाका पूरे फ्लैट में चमकने लगा। रोशनी तेज़ हो गई। निर्मल कमरे के ग्रन्दर ग्राकर खड़ा हो चुका था। प्रिया शरमा गई। स्वस्थ हो गई। यह ग्रादमी भूत-प्रेत नहीं है। ग्रादमी ही है। लेकिन एक ही क्षण बाद प्रिया को गुस्सा ग्राने लगा। निर्मल ने

कहा, "डॉक्टर, बेबी तो मुझे देखकर डर ही गई थी···!"

यह आदमी मुझे 'बेबी' क्यों कहता है ? किस आधार पर ? लेकिन प्रिया ने अनुभव किया कि वह इस अपरिचित आदमी के सामने एकदम छोटी हो गई है। प्लास्टिक की नन्हीं-सी जापानी गुड़िया बन गई है। डरी हुई, शरमायी हुई और एक क्षण बाद गुस्से में भरी हुई। गुड़िया वह निर्मल को सीढ़ियों पर देखकर ही बन गई थी। स्तब्ध। हतप्रभ। उसकी छातियों के पिंड पत्थर बन गए थे। उसने देखा था, सामने खड़ा यह आदमी तेईस हाथ लम्बा है, और इसकी आँखों में नीलम के बड़े-बड़े बेडौल टुकड़े जगमगा रहे हैं। हाथों में नंगी राइफल और चेहरे पर इतना आदिम, इतना जख़्मी गुस्सा, कि अब यह आदमी अपनी राइफल की नली प्रिया की टाँगों के बीच डाल देगा और थ्री-नॉट-थ्री की गोलियों से टुकड़े-टुकड़े होकर वह अपने घर के दरवाज़े पर माँस का लोथड़ा और ख़ून के धब्बे बनकर फैल जाएगी। प्रिया चीख़ती हुई अपने पिता के कमरे में भाग आई थी, प्राण-रक्षा के लिए।

धीमे क़दमों से चलता हुआ और लगभग मुसकराता हुआ निर्मल प्रिया के पीछे-पीछे डॉक्टर रघुवंश की 'स्टडी' में चला आया था। प्रिया कमरे से बाहर जाने लगी। पिता ने कहा, "निर्मल, यही मेरी लड़की है, प्रिया। हर बात में अपनी माँ पर गई है। और सुनो, प्री, निर्मल पहली बार यहाँ आए हैं। निर्मल पद्मावत ! पिछले महीने इन्हीं के लिए मुझे वियेना जाना पड़ा था। इन्हें जानती हो न ?"

निर्मल पद्मावत ने पचीस लाख रुपए दान-खाते में देकर शीतल-दास हॉस्पिटल का नया न्यूरो-सर्जिकल डिपार्टमेंट खुलवा दिया है। प्रिन्सेस स्ट्रीट में तीस मंज़िल की ऊँची और विराटकाय बिल्डिंग, 'कल्याणी-मेन्शन' अभी तक कलकत्ता शहर की सबसे ऊँची बिल्डिंग है, सबसे बड़ी। इतने लम्बे-चौड़े 'स्काई-स्क्रैपर' की कल्पना भी अपने देश में की नहीं जाती थी। निर्मल ने अपनी कल्पना को साकार किया। निर्मल ने शहर के पन्द्रह-सौ मध्यवित्त परिवारों को अपने साथ रहने की जगह दी।

लेकिन इसके साथ ही तरह-तरह की निन्दाएँ और तरह-तरह की प्रशंसाएँ, शहर की सोसाइटी में निर्मल पद्मावत के बारे में फैली हुई हैं। 'कल्याणी-मेन्शन' की एक लड़की कहती है, "निर्मल बाबू तन्त्र की साधना करते हैं। जादू जानते हैं। जो उनकी बात नहीं मानता है, उसे मौत आ घेरती है।" ऐसी ही हज़ार अफ़वाहें। निर्मल बाबू 'क्रिमिनल' हैं। इतना रुपया, इतनी दौलत, इतनी बड़ी जागीर उन्होंने भयानक कुकर्मों से अर्जित की है। ···निर्मल बाबू अपने दफ़्तर के बदमाश कर्मचारियों को और शहर के उँचे इलाकों से उठाकर लाई गई जवान औरतों को कतार में खड़ी करके नंगी कर देते हैं और चाबुक से पीटते रहते हैं। बदमाश कर्मचारी चीख-पुकार तक मचा नहीं पाते। औरतें नंगी होकर पिटने से पहले ही बेहोश हो जाती हैं···मर जाती हैं।

'हाऊ डू-यू-डू' कहने का साहस प्रिया को नहीं हुआ। अपनी भारी पलकें उठाकर वह मुसकरा भी नहीं सकी। पिता की छाया में रक्षित-सुरक्षित खड़ी रही। फिर अचानक किसी अज्ञात आश्वस्ति के साथ, चंचल होती हुई कहने लगी, "आप लोग बैठिए। मैं देखती हूँ, चाय-कॉफी, कुछ भी, मिल सकती है, या नहीं···महरी तो सो गई है···"

निर्मल मुसकराया और एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। वह समझ रहा था कि प्रिया उसकी तेज़ और कठोर निगाहें बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। चाहती है छुटकारा। निगाहों का घेरा तोड़कर, बाहर भाग जाना चाहती है। प्रिया भाग सकेगी ? क्या यह ताक़त कल्याणी की तरह इस लड़की में है ? निर्मल अनायास ही दूसरों का मन समझ जाता है।

इसके लिए उसे कोई प्रयास करना नहीं पड़ता। यह शक्ति उसे प्राप्त है। मन ही नहीं, सामने खड़े व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व की प्रदक्षिणा वह पलक झपकते ही कर लेता है। उसने सारा जीवन यही किया है। इससे अधिक कुछ करने और पाने की उसे कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

प्रीतमसिंह की आँखें गाड़ी के 'मिरर' पर जमी हुई हैं, लेकिन वह

तय कर रहा है कि अपनी बीवी को वह फिर कभी अपने साथ अपने मालिक की लम्बी 'शिवर्ले' कार में घुमाने नहीं ले जाएगा। मालिक शहर में नहीं हों फिर, भी नहीं !···मिसेज़ चक्रवर्ती 'क्लब' में पिंग-पाँग खेल रही हैं और वेस्टर्न ट्यूब कम्पनी के अपने सारे शेयर ऊँचे-से-ऊँचे दाम में निर्मल पद्मावत के हाथों बेच देना चाहती हैं। निर्मल उनसे कहता है, "मैं टेनिस नहीं खेलता, मिसेज़, टेबुल पर भी नहीं ! टेबुल-टेनिस आपको पसन्द है, मुझे नहीं !"···सेठ विल्वमंगल दास हँसने लगेगा और अपनी कुर्सी से उठकर, सीधा बाथरूम में चला जाएगा। बाथरूम का एक दरवाज़ा अन्दर हवेली में भी खुलता है। दरवाज़े पर खड़ी अपनी बीमार दिखती हुई पत्नी से वह पूछेगा और वह 'हाँ' कर देगी। निर्मल जानता है, सेठानी इन्कार नहीं करेगी, क्योंकि वह निर्मल को जानती है।

निर्मल पूरी खुली हुई सीपियों की तरह दो आँखों का स्वामी है, जिनमें काले मोती चमक रहे हैं। इन मोतियों को बर्दाश्त करना प्रिया के लिए सम्भव नहीं। और सिर्फ़ आँखें नहीं हैं, निर्मल का आबनूसी व्यक्तित्व है। वह आबनूस से भी ज़्यादा काला है। चाइना-इंक की सैकड़ों गाढ़ी परतें उसके समूचे शरीर पर चढ़ा दी गई हैं। सिर्फ़, सफ़ेद हैं आँखें !

इन आँखों में पद्मावत की बुद्धिमत्ता, ईमानदारी, सादगी, अभिजात्य और कुटिलता, मक्खन की नरमी और पत्थर का कड़ापन, सारा कुछ स्पष्ट है। स्पष्ट, और फिर भी अप्रकट। वह पारदर्शी शीशा भी है और इस्पात की मोटी दीवार भी। इसलिए उसे दूर से जाननेवाले उसका आदर करते हैं, उससे नफ़रत करते हैं और मन-ही-मन डरते हैं। कुछ लोगों ने मोन्टोक्रिस्तो के 'काउन्ट' के बारे में अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा का प्रसिद्ध उपन्यास पढ़ा है। कुछ लोगों ने ब्रिटेन के काली वर्दी वाले राजकुमार आर्थर की कहानियाँ सुनी हैं और कुछ लोगों को यह आदत भी होती है कि सच को बढ़ाकर लम्बा-चौड़ा करके देखा, सुना और बताया जाए।

"मैं कॉफ़ी ले आती हूँ," प्रिया ने अपने पिता से कहा और बचती हुई निगाहों से एक बार निर्मल की ओर देखकर दरवाज़े से बाहर चली

गई। डॉक्टर रघुवंश मुसकराने लगे। पद्मावत ने कहा, "बिना बताए, इतनी रात को चला आना···अच्छा नहीं हुआ !"

"मैं जानता था, तुम आज ही आओगे," सहज स्वर में डॉक्टर ने उत्तर दिया। यह उत्तर देने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि आज से ग्यारह साल पहले, कुल ग्यारह साल पहले निर्मल पद्मावत पहली बार इस शहर में आया था। एशिया का सबसे अजीबोग़रीब और अजनबी शहर कलकत्ता ! उस दिन पद्मावत इस शहर में खुद अजनबी था। अजनबी, और अपने अजनबीपन में खोया हुआ।

वह कौन था ? और इस शहर में किससे क्या चाहता था ? उसे यहाँ किसने बुलाया ?

२

प्रिया की माँ को पार्क-स्ट्रीट की 'सिमेट्री' में दफ़न करके डॉक्टर रघुवंश अपने घर लौट रहे थे। छः-सात साल की छोटी-सी लड़की प्रिया साथ थी। लेकिन अपनी माँ के लिए रो नहीं रही थी। मचल रही थी कि 'क्वालिटी' में आइसक्रीम लेगी। पानी बरसने लगा है। कलकत्ते में बरसात का कोई ठीक नहीं। कभी कोई ठीक नहीं।

डॉक्टर के हाथ में एक सफ़ेद रूमाल था। कोने पर बना हुआ है, रेशमी धागों का नन्हा-सा एक फूल। प्रिया आइसक्रीम के लिए मचल रही है।

पार्क-स्ट्रीट में शाम की भीड़ और गाड़ियाँ जमा हो रही हैं। एक

13692
नेपाल-भारत सांस्कृतिक केन्द्र, पुस्तकालय

गोरी मेमसाहब ने ज़रा रुककर, डॉक्टर को नमस्ते किया, और आगे बढ़ गईं। हाथ-रिक्शा पर बैठकर मेमसाहब गणेशचन्द्र एवेन्यू के किसी होटल में चली जाएँगी। हर शाम जाती हैं। डॉक्टर रघुवंश मुसकराते हैं। उनका हर मरीज़ उनकी यह मुसकराहट पहचानता है। एक उम्र-दराज़ डॉक्टर की मीठी, उदार और उदास मुसकराहट जो फैलकर किसी भी हालत में ज़्यादा चौड़ी और नमकीन नहीं होती।

'क्वालिटी' के बरामदे में प्रिया का हाथ पकड़े हुए डॉक्टर रघुवंश कई मिनट तक खड़े रहे। सभी जानते हैं, डॉक्टर साहब की पत्नी का देहान्त हुआ है, आज ही सुबह; लेकिन आस-पास से गुज़रनेवाला कोई भी परिचित-अपरिचित सहानुभूति और सान्त्वना के चार-छः शब्द नहीं कहता है। एक मिनट रुकना, औपचरिकता के एक-आध वाक्य कहना और कोई एक चुटकुला; फिर मुसकराते हुए आगे बढ़कर अपने रेस्तराँ, अपने होटल, अपने कारबार की तरफ़ चल देना, पार्क-स्ट्रीट में शाम का क़ायदा यही है।

जापानी पर्यटक टाको यूशीकुरा ने अपने यात्रा-संस्मरण (१९५०) में लिखा है कि इतनी छोटी-सी होकर भी इतनी ज़्यादा ख़ूबसूरत सड़क दुनिया के किसी और शहर में नहीं है। पार्क-स्ट्रीट छोटी सड़क है। अब चौरंगी में गांधीजी की आदमक़द ब्रोंज-प्रतिमा के पास से शुरू होकर यह सड़क फ्री-स्कूल स्ट्रीट और लोअर सर्कुलर रोड में मिलकर ख़त्म हो जाती है। एशियाटिक-सोसाइटी की नयी बिल्डिंग, मोटरकार-कम्पनियों के लगातार शो-रूम, एक कोने में छिपा हुआ आधुनिक चित्रकला-संगम 'आर्टिस्ट्री-हाउस,' पेपिंग-चाइनीज़ रेस्तराँ, ट्रिंका रेस्तराँ, 'क्वालिटी' रेस्तराँ, बरामदों में बिछी हुई अँग्रेज़ी पत्र-पत्रिकाएँ और इन पत्रिकाओं के कवर पर किसी-न-किसी जवान और अधनंगी औरत की तसवीरें, 'इंडिया हेयर-कटिंग एण्ड ड्रेसिंग सैलून' की 'डनलपिलो' गद्दी पर मिसेज़ फाटकावाला को नींद आ जाती है। मिस्टर कपूर एक बार 'ओलम्पिया' बार में घुसते हैं और ग्यारह बजे रात से पहले नहीं निकल

पाते। 'करनानी-मेन्शन' सारी रात खुला रहता है। सारी रात लाल, नीली और सफ़ेद रोशनियों के घेरे में, अपने देश का यह सबसे बड़ा एपार्टमेंट-हाउस सारी रात मद्धिम आग में सुलगता रहता है।

कहते हैं, पार्क-स्ट्रीट की रात बारह बजे के बाद शुरू होती है, जब डलहौज़ी-स्क्वायर, चौरंगी और आस-पास की छोटी-बड़ी गलियों और होटलों से अपनी और अपने दोस्त की छोटी-बड़ी गाड़ियों में लोग निकलते हैं और पार्क-स्ट्रीट के किसी-न-किसी मकान में, फ्लैट में, अँधेरे-में, नीली रोशनी में घुसने की कोशिश करते हैं। सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज के इलाक़े में सन्नाटा होता है और हाथरिक्शा वाले अपनी घंटियाँ उँगलियों में फँसाकर रिक्शा की बाँह में टुन-टुन, ठन-ठन-ठन ठोकते हुए, पाँव-पैदल सैर करने वालों को इशारा करते हैं।

एक ऐसा इशारा जो अब इशारा नहीं रह गया है। सारे लोग समझते हैं। पार्क-स्ट्रीट की रात सुबह होने से चार घंटे पहले शुरू होती है और सुबह होने के चार घंटे बाद खत्म होती है। नौकरी के लिए कोई दफ़्तर खोजती हुई मिस लवलीना दासगुप्ता, किराये के इस कमरे में साथ रहने वाली मिस रॉडरिग से कहती है, "एक चारमीनार मुझे दे सकती हो? लाओ!" अपने बिस्तरे में मिस रॉडरिग अँगड़ाई लेती है। मसहरी उठाकर बाहर आती हुई अपनी सहेली को बताती है, "तुम्हारा आँख लगने के बाद, तुम्हारा दोस्त बहुत देरी तलक हमारे से बात करने लगा। लेकिन हम उसको बोला, तुम्हारा फ्रेंड सो गया, तुम अब जाओ।" दोनों सहेलियाँ, नौ बजे दिन में, चाय-सिगरेट पीती हुई, सुबह की प्रार्थनाएँ पढ़ती हैं।

ऐसी प्रार्थनाएँ जो अब भी प्रार्थनाएँ ही हैं, गाली नहीं बनी हैं। प्रार्थनाएँ हैं, लेकिन सुबह नहीं है और प्रार्थना कहने का मौसम नहीं है। कल्याणी की मृत्यु के वक़्त डॉक्टर रघुवंश ने ऐसी ही एक प्रार्थना की थी। मौसम नहीं था। उनकी प्रार्थना सुनी नहीं जा सकी। आज थोड़ी देर पहले पार्क-स्ट्रीट 'सिमेट्री' में भी नहीं। डॉक्टर को कोई नहीं सुनता।

है। सभी उन्हें ऐसी चीज़ें देना चाहते हैं, ऐसे प्रतिफल, ऐसी सम्भावनाएँ, जिनकी कोई उपयोगिता उनके लिए नहीं है। कल्याणी के बदले यह छोटी-सी लड़की का साथ लेकर वे क्या करेंगे ? यह प्रार्थना उन्हें नहीं चाहिए।

पानी रुक गया। प्रिया मचलने लगी कि वह और कुछ नहीं, लेकिन आइसक्रीम लेगी। माँ नहीं है, तो नहीं है। वह आइसक्रीम लेगी। 'मौनोलिया' के फुटपाथ पर खड़ी उनकी गाड़ी में बैठी नर्स के हवाले प्रिया को करके डॉक्टर रघुवंश अपनी लड़की और अपनी दुनिया से अलग हो गये। नर्स से उन्होंने कहा, "इसे आइसक्रीम खिलाकर, तुम इसके साथ घर चली जाओ। गाड़ी मुझे नहीं चाहिए। देर से आऊँगा।"

लेकिन उसी उम्र में अपने पिता का गुस्सा, ऊब और झुँझलाहट वहसमझ गई। बोली कुछ नहीं। वे गाड़ियों से बचते हुए सड़क पार कर रहे थे और प्रिया एकटक उन्हें देख रही थी।

लगातार बीस वर्ष तक किसी एक प्यार में डूबे रहने के बाद, अचानक नींद खुल जाए, नशा टूट जाए, तो आदमी अपने टेबुल पर स्कॉच की बोतल क्यों नहीं रख ले ? क्यों नहीं अपना सिर बोतलों से तोड़ लेने की कोशिश करे ? आदमी क्यों नहीं आखिरी बार तय कर ले कि वह किसी अजनबी और नाराज़ ताक़त के आगे बेबस है और इस बेबसी को तोड़ने से पहले अपना सिर तोड़ लेना होता है। लेकिन पारसी-थियेटरों के शीरी-फरहाद की तरह नहीं, रामकृष्ण परमहंस की तरह। मृत्यु के रहस्य को पहले समझना पड़ता है···

हुगली नदी के घाट पर अपनी नाव रोककर, राजकुमारियों जैसी दिखती हुई एक युवती दक्षिणेश्वर-मन्दिर के अहाते में चली आई। परमहंस अपनी प्रार्थना के उपवन, पंचवटी में बैठे हुए उसे देख रहे थे। राजकुमारी धीमे क़दमों से, सिर झुकाये हुए, मुसकराती हुई चली आ रही थी, उन्हीं की ओर। परमहंस को अनुभव हुआ, वह युवती गर्भवती है और जैसे-जैसे वह निकट आ रही है, उसका गर्भ बढ़ता जा रहा है।

उनसे थोड़ी दूर पर रुककर, उसने एक बच्चे को जन्म दिया। फिर, उसे गोद में लेकर बैठ गई। परमहंस ने अपनी आँखों से देखा, उस अपरिचित राजकन्या ने वहीं पंचवटी के किनारे बैठकर अपने बच्चे को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और उसकी हड्डियाँ, माँस, रक्त, हाथ, पाँव, सिर, उसका एक-एक अंग खा गई। इसके बाद वह उठी और हुगली की ओर वापस लौट गई।

मृत्यु का सारा रहस्य रामकृष्ण परमहंस के सामने स्पष्ट उद्भासित हो गया। कल्याणी ने स्वयं यह कथा डॉक्टर को सुनाई थी। उसने कहा था, "मृत्यु और जन्म में अधिक भेद नहीं है, न स्थान का और न काल-पात्र का! भेद जीवन में है, जन्म और मृत्यु के बीच पतले धागे से बँधी राजा जनक की तलवार की तरह...और हम लोग इस तलवार के नीचे सोये हुए हैं, डरते हुए!"

डॉक्टर रघुवंश काफ़ी इत्मीनान और मज़बूती के साथ एक 'अँग्रेज़ी' शराबघर में चले आये। वे जब कभी शराब पीते हैं, ज़्यादातर 'स्कॉच'!

तीसरे या पाँचवें या आठवें पेग के बाद, पता नहीं कब, एक आदमी उनके टेबुल के पास आकर खड़ा हो गया। दो-एक मिनट तक तो डॉक्टर ने उसकी ओर देखा भी नहीं। वे कल्याणी की बातों में उलझे हुए थे। वह विचित्र-विचित्र घटनाएँ और कहानियाँ कहती रहती थी। कोई चुपचाप सुनता रहे, सच और झूठ की तलाश नहीं करे, तो वह बहुत अच्छी बातें सुनाती थी, मृत्यु, प्रेम और देवी-देवताओं के बारे में।

मगर टेबुल के पास आकर कोई आदमी खड़ा हो जाए, तो उसकी ओर देखना ही होगा। बरसात के कारण शराबघर खाली-खाली था। बैरे लोग दरवाज़े पर खड़े बातचीत कर रहे थे। दूर एक कोने में एक बूढ़ा आदमी बियर के गिलास पर नागफनी की टूटी हुई डाल की तरह झुका हुआ सिसक रहा था। जीन्स और रेशमी बनियान पहने हुए दो लड़के नीले गिलासों में कोकाकोला पी रहे थे, या शायद, 'थ्री-एक्स'-रम! एक एंग्लो-इंडियन लड़की काउन्टर पर खड़ी, बार-हाउस के

मैनेजर से बातें कर रही थी और डॉक्टर रघुवंश के टेबुल की ओर इशारा करके खिलखिला रही थी ।

डॉक्टर नाराज़ हो जाते, लेकिन वह आदमी मुसकराने लगा। उसकी आँखों के काले मोती अपनत्व की मिठास से चमकने लगे । वह अजनबी नहीं रहा । उसने साफ़ और खूबसूरत लहज़े में कहा, "डॉक्टर रघुवंश !"

और इतना कहकर वह सामने की कुर्सी पर बैठ गया । उसे बैठने के लिए इजाज़त माँगने की ज़रूरत नहीं पड़ी । उसने टेबुल पर पड़े हुए, डॉक्टर की दाईं हथेली को अपने दोनों हाथों से थामकर कहा, "मौत का अपमान न कीजिए···यह स्कॉच कल्याणी का अपमान करती है ।" निर्मल पद्मावत के मुँह से कल्याणी का नाम सुनकर डॉक्टर रघुवंश चौंक पड़े । एक अनजान दहशत से उनका चेहरा सर्द हो गया ।

पौराणिक राक्षस-देशों के राजपुत्र की तरह दीखता है निर्मल । नीग्रो-गायकों की तरह मधुर कंठ-स्वर । काले पत्थर के ग्रीक-देवताओं जैसा चेहरा···यह आदमी रिल्के, और रांबे की तरह मृत्यु और स्मृति और इनके अपमान की बातें क्यों करता है ? कौन है यह आदमी ? डॉक्टर ने पूछा, "आप ?"

"दो साल पहले एक ब्रेन-ऑपरेशन के सिलसिले में आपकी तसवीर 'टाइम' अखबार में छपी थी। तब मैं न्यूयार्क में ही था । आपको जानता हूँ···आज सुबह कलकत्ता आया हूँ मैं ! थोड़ी देर पहले शाम के अखबारों में मिसेज़ रघुवंश का न्यूज़···और 'ओबिटुरी' पढ़ी है । अभी यहाँ आया हूँ, तो आपको इस टेबुल पर···" निर्मल ने बहुत ही सीधे तरीके से, धीमी आवाज़ में इतनी बातें कह दीं, और बैरे को बुलाने लगा ।

डॉक्टर रघुवंश ने इसके बाद परिचय का कोई सवाल उससे नहीं पूछा, उसका नाम तक नहीं । वे चुपचाप बैठे रहे । निर्मल ने 'ओल्ड-स्मग्लर' की एक पूरी बोतल मँगवा ली । उसने डॉक्टर का साथ दिया । काउन्टर पर खड़ी औरत ने बैरे की मार्फ़त पूछा, "मैं आपके पास आ

जाऊँ ?" निर्मल ने हाथ हिलाकर इन्कार किया, तो वह औरत डर गई और काउन्टर से अपना बैग उठाकर तेज़ कदमों से शराबघर के बाहर चली गई। डॉक्टर रघुवंश अब अपनी पत्नी के बारे में कुछ भी याद नहीं कर सके। इस आदमी की उपस्थिति ने अकस्मात् उनकी समस्त यातनाएँ और व्यथाएँ समाप्त कर दीं। कल्याणी नहीं है, प्रिया भी नहीं है। सामने की कुर्सी पर काले पत्थर की चट्टान की तरह बैठा हुआ, सिर्फ़ यह आदमी है और मुसकरा रहा है। वे चुप हैं और उनकी आँखें डूब रही हैं।

ब्रेन-ऑपरेशन···न्यूरो-सर्जरी···कैन्सर···हैमोरेज···सफ़ेद वर्दियों में प्रेत-छायाओं की तरह दीखती हुई नर्सें···ऑपरेशन-थियेटर···माथे पर जलता हुआ फ्लड-लाइट···टेबुल पर बेहोश पड़ी औरत हलके दर्द में कराहती है···देर-देर तक कराहती रहती है।

ब्लड-प्रेशर। कन्वल्ज़न। यूरेमिया। डायबटीज़। ट्यूमर। ब्रेन-ट्यूमर। एक-एक शब्द एक-एक अलग तसवीर की तरह है। काले फ्रेम में बँधी तसवीर की तरह! ···"नहीं डॉक्टर, ब्रेन-ट्यूमर नहीं है। ···स्पाइन को पंचर करके देख लिया गया है···प्रेशर ऊँचा है, लेकिन फ्लुइड एकदम साफ़ है···सेरेब्रोस्पाइनल फ़्लुइड एकदम नॉर्मल···सेल्स नहीं हैं और डिस्क भी जैम नहीं है,···फ्लैट है!···एन० पी० एन० और क्रियेटिन भी नॉर्मल हैं।"

"नही डॉक्टर, ब्रेन-ट्यूमर नहीं है।"

"फिर क्या है? ब्रेन-ट्यूमर नहीं है, तो मेरी पत्नी को क्या है? क्या हो गया है उसे? क्या इस बीमारी का कोई नाम नहीं है? कोई दवा नहीं है?"

"···डॉक्टर रघुवंश! हम प्रतीक्षा करने के सिवाय और कुछ भी कर नहीं सकते···।"

डॉक्टर रघुवंश अपनी पत्नी को बचाने के लिए कुछ भी कर नहीं सके। शीतलदास सेठ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के ऑपरेशन-थियेटर में 'फ़्लड'-रोशनियों के नीचे, कल्याणी बेहोश लेटी रही। शहर के सारे

मशहूर सर्जन और डॉक्टर जैसे प्रार्थना करते हुए, कल्याणी के शरीर पर झुके रहे, तमाशा देखते रहे। स्टाफ़-नर्स मालती बाई ने हाउस-सर्जन जतीनदास गुप्ता से कहा, "इतना 'कम्प्लेक्स' केस अपने यहाँ पिछले दस साल से नहीं आया...डॉक्टर रघुवंश ने डॉ० विधानचन्द्र राय को फ़ोन किया था'। वे दिल्ली गये हैं। विधान राय होते तो शायद, मिसेज़ रघुवंश ठीक हो जातीं..."

यह सच है कि हकीम अजमल खाँ के बाद वैद्यक-शास्त्र की जानकारी में पश्चिमी बंगाल के मुख्यमन्त्री, विधानचन्द्र राय का ही नाम लिया जाता है। लेकिन विधान राय नहीं थे और शहर के बाकी डॉक्टर कल्याणी की बीमारी का यह रूप पकड़ ही नहीं पा रहे थे। फिए कोई उपाय नहीं है। प्रिया की माँ अपने पति का हाथ थामे हुए डॉक्टरों की उदास और पराजित आँखों के सामने अपनी आख़िरी नींद में डूब गई।

प्रिया की माँ को 'सिमेट्री' में दफना दिया गया। प्रिया रोई नहीं। जब कल्याणी को ताबूत में रखने लगे, प्रिया ने समझा वह सो गई है और उसे बिस्तरे में डाल रहे हैं। एक ऐसी मुसकराहट इस लाश के चेहरे पर थी, जो सिर्फ़ नींद में डूबी हुई आँखों और प्यार में गीले होंठों पर होती है और इस मुसकराहट ने प्रिया को रोने नहीं दिया था। लोग बताते हैं मरने के बाद, केवल संन्यासियों का चेहरा विकृत नहीं होता। लेकिन कल्याणी ने तो अपने लम्बे जीवन और अपने लम्बे-चौड़े शरीर में कभी कहीं भी संन्यास धारण नहीं किया। वह रस लेती रही, जैसे पौधा धरती से रस लेकर जीवित रहता है। उसने दूसरे लोगों और अपने शरीर में रस लिया। रस की लालसाओं को वह अपने अन्तरंग और बहिरंग से कभी मिटा नहीं पाई।

फिर क्यों उसका चेहरा एक नीली आभा में चमक रहा है, मृत्यु के उपरान्त ? क्यों ? प्रिया 'क्वालिटी' में आइसक्रीम खा रही है। उसके पास बैठी नर्स सोच रही है कि अब उसके साहब, डॉक्टर रघुवंश क्या करेंगे ? नई शादी ? किसी नर्स या लेडी-डॉक्टर से रोमान्स ? निर्मल-

पद्मावत इस शराबघर में चुप है और डॉक्टर के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। उसने एक मिनट पहले डॉक्टर से पूछा था, "कल्याणी देवी ने छह साल पहले एक लड़की को जन्म दिया था··· ?"

प्रिया 'क्वालिटी' में आइसक्रीम खा रही है—वे यह बात निर्मल को बता नहीं सके। वे सोचने लगे कि यह आदमी मेरे बारे में इतनी सारी बातें कैसे जानता है ? क्यों जानता है ? और यह सब जान लेने के बाद, कल्याणी की मृत्यु के बाद ही क्यों मेरे पास आया है ?

मृत्यु अब रहस्य नहीं है। फ्रांसीसी अस्तित्ववादियों ने और रूसी वैज्ञानिकों ने अब मृत्यु के विषय में कुछ भी सोचना-विचारना बन्द कर दिया है। मृत्यु क्या है ? अब यह सवाल कोई नहीं पूछता। सभी जानते हैं। मृत्यु, ईश्वर, संयोग, आतंक, धर्म, प्रणय और इस 'आकार' की कोई भी वस्तु अब रहस्य अथवा अज्ञेय नहीं है। आत्म-प्रतिभा को आत्मा, अर्थात् 'विल' को परमात्मा मान लेने में आधुनिक युग के किसी भी सन्त और मसीहा को एतराज़ नहीं होगा। अपने-अपने तरीके से दुनिया का हर आदमी अपना एक निजी ईश्वर, निजी प्रणय और अपनी मृत्यु की एक निजी तिथि का निर्णय करता है। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी एक अमरीकी शिष्या से कहा था, "ईश्वर की पुस्तक में नये-नये अध्याय जुड़ते जाएँगे। हमेशा नये सत्यों और नये रूपों का उद्घाटन होता रहेगा···मैं प्रार्थना करता हूँ कि एक सम्प्रदाय से सैकड़ों सम्प्रदाय बनें और ऐसा समय आ जाए, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने एक निजी सम्प्रदाय का साथी बने।"

अपने सम्प्रदाय का साथी, और अपने ईश्वर का स्रष्टा !···"कल्याणी ने छः साल पहले एक लड़की को जन्म दिया था ?"···कल्याणी ने अपने ईश्वर की सृष्टि कर ली थी। वह प्रिया बन गई थी। प्रिया ? प्रिया ही नहीं, और नहीं केवल कल्याणी; विश्व-प्रपंच का प्रत्येक जीवधारी अपनी ही मृत्यु से अपनी रचना करता है। तो क्या कल्याणी ने प्रिया की रचना की ?

३

शराबघर से बाहर निकलते वक़्त निर्मल ने डॉक्टर रघुवंश को दरवाज़े पर रोककर, कुल तीन बातें कहीं—(१) वह ग्राज ही इस शहर में ग्राया है ग्रौर ग्रब वह यहीं रहना चाहता है; (२) ग्रपने देश में 'न्यूरो सर्जरी' का विकास नहीं हुग्रा है ग्रौर कल्याणी सर्जरी की इसी विवशता का शिकार बनी है; ग्रौर (३) वह वायदा तो नहीं करता है, क्योंकि ग्रभी उसके पास हज़ार, पाँच हज़ार रुपये भी नहीं हैं···लेकिन···लेकिन, वह कोशिश करेगा···

विलायती तरीक़े से हाथ मिलाकर, झूठी मुसकराहटों में क़ैद होकर ग्रलग होते हुए डॉक्टर ने महसूस किया, निर्मल पद्मावत के पंजे गोश्त से भरे हुए ग्रौर मज़बूत हैं ग्रौर उसके हाथ ग्रस्वाभाविक रूप से गरम हैं, जल रहे हैं। निर्मल ने उन्हें कुछ कहने का मौक़ा नहीं दिया। बोला, "मैं ख़ुद ग्रापके पास ग्राऊँगा, डॉक्टर!"

रघुवंश ग्रब होश में थे। शराब उनकी नसों में बीत चुकी थी। ग्रौर वे इस ग्रजनबी को थोड़ा-थोड़ा पहचानने लगे थे। उन्होंने कहा, "मैं 'वेट' करूँगा। तुम्हारा घर है, तुम चाहे जब ग्रा जाग्रो।" निर्मल एक हाथरिक्शा रोककर बैठ गया। डॉक्टर प्रिया को देखने के लिए 'क्वालिटी' चले गये। वह रो नहीं रही थी ग्रब। ख़ुश थी। यहाँ का वातावरण उसे पसन्द है। यहीं उस कोने में वह ग्रपनी माँ के साथ बैठती थी। 'जूकबॉक्स' में गाने बजाये जाते थे। वह ख़ुश हो गई। उसने डॉक्टर रघुवंश से कहा, "पापाजी, एक गाना बजाऊँ?"

पैसा डालते ही एक एल० पी० रिकार्ड ऊपर उठा, झूमने लगा, फिर सतह पर ग्राकर पूरे रेस्तराँ में गूँजने लगा। ग्रंग्रेज़ी गाने की पहली कड़ी का ग्रर्थ होता था, "शहरी लड़कियाँ बड़ी बेवफा होती हैं···उनसे तम्बाक़ू

रखने की डिबिया माँगो, तो बढ़ा देती हैं लाल टमाटर !" डॉक्टर रघुवंश देर तक यह गाना सुनते रहे और प्रिया अड़ोस-पड़ोस की रंगीन लड़कियों को देखती हुई, खिलखिलाती हुई, अपने 'पापाजी' से इस गाने का मतलब पूछती रही। डॉक्टर मतलब बताने लगे।

निर्मल पार्क-स्ट्रीट सिमेट्री की ओर बढ़ गया। मिनट-भर के लिए ही सही, भावुक और कवि बन जाना होगा। उसके लिए इतना ज़रूर करना चाहिए। कल्याणी की कच्ची क़ब्र के पास खड़े होकर मन-ही-मन कहना, "मैं आ गया हूँ, कल्याणी, मैं तुम्हारे पास···"

किन्तु उल्टी 'V' आकृति में बने हुए लकड़ी के हरे गेट पर आकर वह रुक गया। उसके हाथों में सफ़ेद फूलों का गुलदस्ता नहीं है। वह न्यूयार्क या फ्रांसीसी 'रिवेरिया' का कोई किस्सा दुहराने नहीं आया है। फिर वह इस कल्याणी को फूल क्यों दे ? एक मिनट के लिए उसे इच्छा हुई कि वह सीमेन्ट-पत्थरों से बनी उस कच्ची क़ब्र के पास खड़ा होकर कल्याणी को बाहर निकल आती हुई देख ले। वह कहे, "चलो, आज सारी रात टैक्सी पर घूमते रहेंगे।" वह कल्याणी के बर्फ़ीले, सर्द हाथ थामकर पार्क-स्ट्रीट में निकल आये, उसे यह इच्छा हुई। लेकिन वह रुक गया। गेट के पास रुककर उसने फ़ैसला किया कि कल्याणी मर गई है। उसे जगाना नहीं चाहिए।

फूलों के गुलदस्ते बेचनेवाले कई लड़के उसके पास आकर खड़े हो गए। "नहीं चाहिए !" उसने इतनी बार और इतनी ताक़त से कहा कि लड़के डर गए। शायद यह काला साहब पागल हो गया है। "न-हीं चा-हि-ए !" निर्मल ने आखिरी बार कहा और वह वापस लौट गया। फ्री-स्कूल स्ट्रीट के चौराहे पर बीन बज रही है और मजमा जमा हुआ है।

इस मजमे के लिए निर्मल अजनबी है। पाइस-होटल, 'खोलाबाड़ी' की बस्तियाँ और कालीघाट, किसी बंगला-उपन्यास में निर्मल ने पढ़ा था कि कलकत्ता में कुल यही तीन चीज़ें देखने के लायक़ हैं। उसने अब

तक यह शहर नहीं देखा है।

सिनेमाघरों की टिकट-खिड़कियों में सिर डालकर हज़ारों-हज़ार आदमी सो गए हैं। ऑक्टरलोनी मोनूमेंट के गुम्बद में फाँसी की हज़ारों तख्तियाँ तराजुओं की तरह लटकी हुई हैं और इन तख्तियों में खिलौनों की साइज़ के मकान, रेडियोग्राम, ह्विस्की की बोतलें और सरकारी फ़ाइलों के अम्बार, छोटी-बड़ी रस्सियों से बँधे हुए झूल रहे हैं। तेरह हज़ार किरानी 'राइटर्स बिल्डिंग' की छत से नीचे कूदकर अपने हाथ और बाँहें तोड़ बैठे। हाईकोर्ट के सामने का विशालकाय उद्यान, जिसे 'अदन का बाग' बताया गया है, जहाँ आदम ने पहली बार वर्जित सेव तोड़ा था, अब बीमार औरतों की पथरीली पुतलियों में जगमगा रहा है। शामबाज़ार-बेलगछिया से एक जुलूस, ए० बी० सी० डी० ई० एफ० पढ़नेवाले छोटे बच्चों का कम्पनी के राजाओं ने शुरू किया था; वह अब जादवपुर, सोनारपुर, दुर्गापुर तक पहुँच गया है।

भूख, कूल्हों के बीच में कैंसर, अधनंगी युवतियों की तसवीरों से भरे हुए रिसाले-अख़बार, काली-मन्दिर, तिरपन काली-मन्दिर, अपने दूरबीन-कैमरों में आँखें लगाये हुए विदेशी यात्री···'लालबीवी' किसे कहते हैं?···ह्वाट-इज़-'गुलाबछड़ी', माई फ्रेंड?···डलहौज़ी-धर्मतल्ला-चौरंगी के हर फुटपाथ पर देसी फाउन्टेन-पेन नीलाम करते हुए नौजवान 'हल्ला गाड़ी' आने के पहले ही अपने 'माल' के साथ बग़ल की गलियों में ग़ायब हो जाते हैं···यह 'हल्ला गाड़ी' क्या है? और क्या है शेयर-बाज़ार?

इस शहर के लोगों की भाषा और धर्म, जीवन-व्यवस्था और इतिहास, फ़ैशन और क़ायदे-क़ानूनों का कुछ भी पता निर्मल को नहीं है। लेकिन वह फराऊनों की दौलत, अठारह साल की जवान रानी क्लियोपैट्रा और नील-नदी पर कब्ज़ा जमाने के लिए यहाँ आया है।

यहाँ सबसे बड़ी ताक़त शेयर बाज़ार है। बाज़ार की बग़ल में सुनहरे कंगूरों वाले मन्दिर, गन्दी बस्तियाँ और हवाबन्द, रोशनीबन्द

ऊँची बिल्डिगें हैं। और यहाँ सबसे कमज़ोर हैं स्त्रियाँ, जो 'खानगी' वेश्या अथवा मध्यकुलीन पत्नियाँ होकर एक-जैसी ज़िन्दगी बिताती हैं; गर्भवती होने, और फिर से गर्भवती होने और फिर से गर्भवती होने की ज़िन्दगी! वह इस ज़िन्दगी से अजनबी है।

परिचय का एकमात्र सूत्र थी कल्याणी। वह भी नहीं रह गई है। निर्मल ने शहर में क़दम रखा, दमदम-एयरपोर्ट से उतरकर 'ग्रेट-ईस्टर्न' होटल के फ्लैट में पहुँचा, और कल्याणी चली गई। क्यों चली गई? क्या ऑपरेशन-टेबुल पर आधी बेहोश, आधी पागल पड़ी हुई कल्याणी को कोई 'टेलिपैथिक' इशारा मिला? क्या वह जान गई कि निर्मल आ गया है?

इसे एक 'संयोग' कहकर टाल दिया जाए। क्योंकि इन घटनाओं के कारण और अर्थ ढूँढने की सुविधा अब नहीं है, अवकाश भी नहीं। लेकिन निर्मल पद्मावत संयोग पर विश्वास नहीं करता। वह 'कैलकुलेशन' अर्थात् हिसाब लगाने में विश्वास रखता है। जिसे सबसे ज़्यादा प्यार करो, उसी को नफ़रत करना पड़े, तो दिमाग़ खराब हो जाएगा। मानसिक कुंठाएँ उपजेंगी। दिल कमज़ोर होगा, रोगग्रस्त होगा मस्तिष्क। स्वाभाविक है कि मृत्यु हो जाएगी। कल्याणी की मृत्यु हुई। लेकिन क्या मरे हुए के पास जाना, पास बने रहना, सम्भव नहीं है?

केलिफोर्निया में एक बंगाली 'सिद्ध' से निर्मल की मुलाक़ात हुई थी। रोज़ी-रोटी और ऐश-आराम के लिए वह सिद्ध-पुरुष मृतात्माओं को अपने टेबुल पर बुलाता था। निर्मल उसका दोस्त बन गया। फिर निर्मल ने उसे बताया कि यह धन्धा ठीक नहीं है। यह धन्धा नहीं है, 'क्राइम' है। सिद्ध-पुरुष ने उत्तर दिया, "ऐसा क्या बच गया है, जो 'क्राइम' नहीं है? जनतन्त्र? व्यावसायिक उपनिवेशवाद? युद्ध? हम जो कुछ करते हैं, उसी की आज्ञा से करते हैं, अर्थात्, हम जो करते हैं, दर-असल हम नहीं करते, वही करता है हमारा पिता, हमारा ईश्वर!"

सिद्ध-पुरुष, शासन करने वाले राजनीतिज्ञ और साड़ी बाँधने और साड़ी खोलने की विद्या में प्रसिद्ध स्त्रियाँ—निर्मल ने तय किया कि ये ही

तीन व्यक्ति बीसवीं सदी के किसी भी बड़े शहर में 'आत्मज्ञान' और 'मोक्ष' प्राप्त करते हैं। ये ही तीन व्यक्ति और इनके पीछे-पीछे हाथ बाँधे, सिर झुकाए, आँखें बन्द किए, चलती हुई व्यापारियों और उनके कर्मचारियों की श्रद्धालु भीड़···

मैं इस भीड़ का हिस्सा नहीं बनूँगा, गैलीलियो, अथवा अफ़लातून की तरह निर्मल ने अपने बंगाली सिद्ध-पुरुष के हवाबन्द दफ़्तर से बाहर आकर फ़ैसला किया था। यह फ़ैसला उसने कभी बदला नहीं, डॉक्टर रघुवंश के घर में आकर, प्रिया को देखने के बाद भी नहीं।

"डॉक्टर, मैं भीड़ का जख़्मी हिस्सा नहीं हूँ, इसीलिए मैं इससे पहले तुम्हारे यहाँ नहीं आया। मैं व्यस्त था, मुझे फुरसत नहीं थी। फुरसत अब भी नहीं है और सेहत भी ठीक नहीं हुई। दिमाग़ में पत्थर तोड़ने वाली बड़ी मशीनें घड़घड़ाती रहती हैं। तुम वक़्त पर वियेना आ नहीं जाते, तो उस बार पिलबर्ग-होम वाले डॉक्टर मुझे मार ही डालते। उन्हें आश्चर्य होता था, एक-सौ-पाँच टेम्प्रेचर में भी मैं होश में क्यों हूँ···मैं डिलिरियम में अपनी दास्तान क्यों नहीं कहने लगता हूँ···! अब भी हालत वही है। मशीनें घड़घड़ा रही हैं। लेकिन मैं खुश हूँ कि मैं यहाँ तक आ गया हूँ। इस झरने के पास, इस नीली नदी के पास जिसे लोग प्यार और प्रतिष्ठा कहते हैं।"

निर्मल की शान्त-स्निग्ध दृष्टि ने डॉक्टर रघुवंश को ये सारी बातें कह दीं। डॉक्टर ने सुन लिया। किताबों के 'रैक' के ऊपर कल्याणी की एक पुरानी तसवीर टँगी हुई है। निर्मल की निगाहें झिलमिलाती हैं। निर्मल चुप बैठा रहा। वह बहुत कम बोलता है। डॉक्टर ने कुछ पूछा भी नहीं। वे अपने मरीज़ों से भी ज़्यादा सवाल नहीं करते। सिर्फ़ देखते हैं, और जान लेते हैं। दोनों के स्वभाव में यही एक समानता है। डॉक्टर किसी ग्रीक दार्शनिक की तरह वृद्ध और खल्वाट दीखते हैं। पद्मावत किसी भी रोमन महारथी की तरह तेजस्वी और पराक्रमी है। पद्मावत का स्वभाव है आक्रमण और युद्ध। और वह विजयी सिर्फ़ इसलिए होता

है कि वह पराजय को ध्रुव मानकर ही युद्ध करता है। क्रोध, उत्साह और साहस की अस्थिरता से नहीं, निर्णय की समानान्तर स्थिरता से ही वह पहला वार करता है।

डॉक्टर रघुवंश ने पूछा, "मिसेज़ सान्याल तुमसे मिली थीं ? काम हो गया…?"

"मैंने ओवर्सीज़-बैंक में कह दिया है। फ्रांस में जो भी फॉरेन-एक्सचेंज वे चाहेंगी, मिल जाएगा।" निर्मल से सिर झुकाये हुए उत्तर दिया। मिसेज़ सान्याल 'आर्टिस्ट' हैं। अपने चित्रों की प्रदर्शनी करने के लिए पेरिस जा रही हैं। वहाँ उन्हें काफ़ी रुपये चाहिए। वे शीतलदास कॉलेज में डॉक्टर रघुवंश की छात्रा थीं। होम-डिपार्टमेंट के एक ऊँचे अफसर से विवाह करके 'आर्टिस्ट' बन गईं। अब अकेली रहती हैं। गोविन्दवल्लभ पन्त की होम-मिनिस्ट्री ने घूस लेने के अपराध में मिस्टर सान्याल को बर्खास्त कर दिया। मिसेज़ सान्याल भी अपने गहने-ज़ेवर और तलाक़ के रुपये लेकर अपने पति से अलग हो गईं। कोई भी ईमानदार आर्टिस्ट किसी भी घूसखोर अफ़सर के साथ नहीं रह सकती है…!

"वे मुझे बहुत परेशान कर रही थीं। कोई उपाय नहीं रहा, तभी उन्हें तुम्हारे पास मैंने भेज दिया था। शी वाज़ माई स्टूडेण्ट…मेरी स्टूडेण्ट थी वह !"

"उन्होंने बताया था।"

"तुमने उनकी पेण्टिग देखी है ? बढ़िया तसवीरें बनाती हैं ?… या, सिर्फ़ फ़ैशन के लिए ?"

"वे अपनी तसवीरें साथ लाई थीं। लेकिन मैंने कोई तसवीर नहीं खरीदी। मेरे कमरे में तसवीरों के लिए जगह नहीं थी।…मैंने उनका काम कर दिया है।"

डॉक्टर रघुवंश अपने इस नौजवान दोस्त की बात समझ गए और मुसकराने लगे। पद्मावत सिगरेट जलाने लगा। प्रिया एक नर्स के साथ आई और टेबुल पर कॉफ़ी रखने लगी। वह निर्मल की निगाहों से बचने

की कोशिश कर रही थी। नर्स ने डॉक्टर से पूछा, "साब, आपको एक बार हॉस्पिटल जाना होगा। वह ब्रेन-ट्यूमर वाला केस···"

सुबह नौ बजे मिसेज़ सान्याल अपनी आठ-दस तसवीरें साथ लेकर निर्मल के फ्लैट में आई थीं। 'कल्याणी-मेन्शन' की छत पर चार कमरों का एक शीत-ताप-नियन्त्रित फ्लैट निर्मल ने बनवा रखा था। डॉक्टर रघुवंश, खानसामा अली, प्राइवेट-सेक्रेटरी धनवन्त लाल और निर्मल के अल्सेशियन-कुत्तों के सिवाय किसी को भी इस फ्लैट में आने की इजाज़त नहीं थी।

निर्मल के फ्लैट में 'प्रेस-ट्रस्ट' का टेलिप्रिन्टर था, रेडियोग्राम, स्टील के बड़े-बड़े आलमीरे, फ्रिज, टेलीफ़ोन की लाइनें और ऐसी ही छोटी-बड़ी मशीनें। वज़न तौलने की एक छोटी मशीन। दीवार-से-दीवार तक, चित्रकार रोरिक के हिमालय की एक बड़ी-सी तसवीर। सोने के कमरे में एक सादा पलंग था और दीवार पर दक्षिण-काली की एक मूर्ति, लाल जीभ बाहर निकली हुई, एक हाथ में खड्ग, दूसरे हाथ में क्षमा, तीसरे हाथ में नर-मुण्ड।

यह दक्षिण-काली नेपाल-तराई के किसी मन्दिर से उठकर निर्मल पद्मावत के बेड-रूम में आई थी। निर्मल इसी मूर्ति के सामने सोता था। इसी मूर्ति के सामने नींद टूटने पर अँगड़ाई लेता था। और कमरे से बाहर आकर, शहर के सबसे ऊंचे मकान की खुली छत पर घूमता हुआ निर्मल रात के दो बजे, नीचे सोये हुए शहर को देखता रहता था। दीवार पर, एक फ्रेम में खड़ी दक्षिण-काली कभी मुसकराती थी और कभी रक्त-वासना से विक्षिप्त होकर अधिक कुरूप, अधिक नंगी और अधिक काली हो जाती थी। कोहरे में डूबे हुए 'विक्टोरिया-मेमोरियल' की ओर देखकर, निर्मल सोचता था—इस मकबरे और 'कल्याणी-मेन्शन' में कितने वर्षों और कितनी सभ्यताओं का अन्तर है? कोणार्क का सूर्य-मन्दिर, अजन्ता की बौद्ध-गुफाएँ, आगरा शहर का ताजमहल, ऑक्टरलोनी का विजय-स्तम्भ और यह 'कल्याणी-मेन्शन', निर्मल इन

सारे मक़बरों को एक रेखा, एक परिभाषा में देखना और महसूस करना चाहता था। एक मक़बरा है 'कल्याणी-मेन्शन'।

रात के दो बजे, हर रात निर्मल पद्मावत अपने पलंग से नीचे उतर-कर, खुली छत पर चला आता है। घूमता रहता है। हुगली नदी की साँवली जलधारा ड्रेजरों-जहाज़ों की रोशनी में रंग बदलती है। नये सचिवालय की दरवानुमा छोटी-छोटी खिड़कियाँ। कोहरे में, फैले हुए मछली-जाल की तरह हावड़ा-ब्रिज। मार्कोविच-सिगरेट कम्पनी के नियॅन-साइन विज्ञापन में बड़ी आँखोंवाली एक लड़की सिगरेट पी रही है। इस पार दक्षिणेश्वर, उस पार बेलूर-मठ। मैदान ही मैदान। छोटे-छोटे पार्क। और भी छोटी गलियाँ। गलियों के बाद गलियाँ। मकान, और लगातार मकान। महाजाति-सदन का अण्डाकार गुम्वद। जैन-मन्दिरों का स्वर्ण-शिखर चाँदनी रात में चमकता रहता है, अब भी धर्म नहीं मिटा है, और आदमी के अन्तरंग से प्यार भी मिट नहीं पाया है।

मछुओं-मल्लाहों की रानी, रासमनि, अपने देवता के लिए एक मन्दिर बनाती है। एक बूढ़ा अँग्रेज़ अपनी मृत पत्नी की क़ब्र पर संग-मरमर की एक पट्टी डालता है और उस पर लिखता है, 'आई लव्ड हर, शी वाज़ माई वाईफ़।'--मैंने उसे प्यार किया, वह मेरी पत्नी थी। वह बूढ़ा आदमी कोई मक़बरा नहीं बना पाता है, अपने प्यार के लिए। वह सिर्फ़, पत्थर के एक टुकड़े पर लिख देता है, 'आई लव्ड हर।' धर्म और प्यार, पत्थर के इन्हीं दो टुकड़ों पर आदमी अपनी बात लिखता है, कोई भी ऐसी बात जिसके लिए वह जीवित है और जीवित रहना चाहता है।

निर्मल पद्मावत पत्थर के टुकड़ों पर मकबरों पर खड़ा है और देख रहा है कि दक्षिण-काली में और कल्याणी कोई अन्तर नहीं है। दोनों एक ही मातृसत्ता के दो अंश हैं, दो आँखों की तरह, दो स्तनों की तरह। और यह देख लेने के बाद, 'द्वैत' से 'अद्वैत' की ओर वापस आकर निर्मल अपने सोने के कमरे में लौट आता है। दक्षिण-काली के सामने खड़ा होकर वह कल्याणी की आरक्त आँखों में डूब जाता है। इस तरह

डूब जाने के बाद, उसे किसी निर्जन द्वीप की तरह नीलेपन के समुद्र में उग आने की इच्छा नहीं होती है। लेकिन आदमी अपनी शारीरिक सीमाओं में विवश है। समय आने के पहले वह किसी ताक़त से भी शरीर की सीमाएँ तोड़ नहीं पाता।

सीमाएँ कल्याणी ने तोड़ी थीं। निर्मल उन्हें फिर से जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

पार्क-स्ट्रीट 'सिमेट्री' के फाटक से लौटकर निर्मल सीधा अपने होटल चला आया। अपने फ्लैट के बैरे से उसने कहा, "फ्लास्क ले जाओ। कॉफ़ी लाना होगा। और सुनो, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

बैरे ने समझ लिया यह साहब कलकत्ता में सिर्फ़ 'बिज़नेस' करने आया है, तफ़रीह करने नहीं। होटलों के बैरे ऐसे मुसाफिरों को पसन्द नहीं करते। जो साहब किसी औरत के साथ आता है, बीवी के सिवाय, उसे बड़े होटलों के बैरे अपना 'गुडलक' समझते हैं। 'ग्रेट-ईस्टर्न' के स्तर के होटलों में पत्नी के साथ ठहरने की आदत कम लोगों में होती है। लेकिन अकेले आनेवाले लोग ज़्यादातर ऐसे होटलों में नहीं आते। दफ़्तर की 'रिसेप्शनिस्ट' साथ आती है। कोई भी 'आधुनिक' मन-मिजाज़ की स्टेनो-लड़की। "मेरी सेक्रेटरी से मिलिए···शी इज़ माई इन्सपिरेशन। माई 'टच-मी-स्वीट' गर्ल। मेरी इन्सपिरेशन।" एक कम्पनी का मालिक, 'ईस्टर्न' के सदाबहार बरामदे में बैठकर, 'ओल्ड-स्मगलर' की नाव में तैरता हुआ, दूसरी कम्पनी के मालिक से कहता है। थोड़ी देर बाद, दोनों मालिक अपनी-अपनी सेक्रेटरी या स्टेनो, या रिसेप्शनिस्ट लड़की की कमर में हाथ डालकर, जूट, चाय, इस्पात और लोहे-कोयले की बातें करते हुए, टैक्स पर टैक्स लादने वाली सरकार के सात पुरखों को गालियाँ निकालते हुए, रात्रि-भोजन के लिए बने बड़े 'हॉल' में चले आते हैं। वक़्त मिलते ही, एक स्टेनो दूसरी स्टेनो से पूछती है, "तुझे क्या पगार मिलती है? कितनी बार तू 'एबार्शन' करा चुकी है? तेरी यह साड़ी कितने की आई है?"

निर्मल के पास स्टेनो नहीं है। वह टाईप करना जानता है, मिनट में अस्सी शब्द वह आसानी से निकाल लेता है। अपने टाइपराइटर की पटरियाँ उसे अपनी उँगलियों से कम पसन्द नहीं हैं। बैरा कॉफ़ी का 'फ्लास्क', और एक टिन सिगरेट दे गया। निर्मल खिड़की के पास, टेबुल पर बैठा हुआ सारी रात जगा रहा। सफ़ेद और हरे कागज़ के लम्बे-लम्बे टुकड़ों पर वह तरह-तरह के चार्ट बनाता रहा। चार्ट, और ग्राफ़ और डायग्राम, रेखाओं के और अंकों के। सीधी-टेढ़ी लकीरों के लगातार शतरंज। कागज़ी योजनाएँ। कम्पनी। लिमिटेड कम्पनी। पब्लिक लिमिटेड कम्पनी। पूँजी, शेयर, सूद, डाइरेक्टरों के बोर्ड। पार्टनर। डमी। ब्लू-प्रिन्ट। टैक्स, फण्ड, इन्कम-टैक्स, ब्लैक फण्ड। सीधी-टेढ़ी रेखाओं के लगातार शतरंज।

निर्मल पद्मावत दूसरों की आमदनी और दूसरों की हैसियत का हिसाब लगा रहा था।

ठीक सात बजे सुबह उसे प्रभास बाबू से मिलना था और यह मुलाक़ात उसे इस शहर के सबसे बड़े चौराहे पर ऊँचा खड़ा कर सकती थी। प्रभासचन्द्र नियोगी इस चौराहे पर पहुँचने का रास्ता जानते हैं। अपना रास्ता उन्होंने खुद बनाया है।

निर्मल ने न्यूयार्क में ही तय किया था कि वह अपने देश लौटने पर सबसे पहले नियोगी से ही मिलेगा। प्रभासचन्द्र नियोगी—यह नाम जैसे उसने स्वप्न में ही सुना था। नाम सुनकर उसकी नींद टूट गई थी। खिड़की के फ्रेम में तेज़ नीली रोशनी झिलमिलाने लगी थी और एक क्षण के लिए निर्मल को लगा था कि इस नीली रोशनी में देवनागरी-अक्षरों में लिखा गया है—प्रभासचन्द्र नियोगी! इससे पहले निर्मल ने नियोगी का नाम सुना तक नहीं था। लेकिन इस चमत्कार को 'चमत्कार' या 'विज़न' नहीं कहा जा सकता। क्योंकि चमत्कार हमेशा धार्मिक चमत्कार होते हैं, जैसे सावित्री यमराज से प्रश्न और प्रार्थना करती हुई, स्वर्गलोक के द्वार तक चली गई थी। निर्मल ने जो चमत्कार देखा,

वह मात्र एक व्यावसायिक चमत्कार था।

हीराशाह पब्लिशिंग कम्पनी ने मोटे आर्ट पेपर पर एक सचित्र पुस्तक प्रकाशित की थी, अँग्रेज़ी में जिसका नाम था, 'हू-इज़-हू इन कैलकटा-बिज़नेस-इन्डस्ट्री'; और इसी पुस्तक में पहली बार निर्मल ने प्रभासचन्द्र नियोगी के जीवन और व्यवसाय-कार्यों के विषय में पढ़ा था। उन दिनों वह मकान, पुल, कारखाने और कार्यालय बनाने वाली एक प्रसिद्ध फर्म में ड्राफ्ट्समैन था। लेकिन वह हर रोज़ 'इंडिया-सेन्टर' जाता था। उन होटलों में जाता था, जहाँ हिन्दुस्तान के अमीर और उमराव न्यूयार्क में ठहरा करते थे। लाइब्रेरी में जाकर अपने देश के अखबार पढ़ता था। हरलालका-कम्पनी ने दक्षिण-भारत में तीन नये कारखाने खोले हैं। डालमिया-ग्रुप पर आयकर-विभाग की तीसरी आँख खुल गई है। विश्वेश्वरी कॉटन मिल्स के मालिकों ने अपने मज़दूरों की तीन महीनों की लम्बी हड़ताल असफल कर दी है।

अमरीका आनेवाले प्रत्येक भारतीय उद्योगपति-पूँजीपति के बारे में निर्मल छोटी-बड़ी सारी खबरें जमा करता था। देशी पूँजीपतियों ने बड़े पैमाने पर विदेशी पूँजीपतियों के साथ गठबन्धन करके 'संयुक्त' पूँजी के धन्धे शुरू नहीं किये थे। लेकिन देश में विदेशी पूँजी का आगमन शुरू हो चुका है। पूर्वी एशिया के देशों में अपनी पूँजी का विस्तार चाहने वाले अमरीकी उद्योगपति भारत को लालचभरी निगाहों से देख रहे थे। सरकारी पैमाने पर अमरीकी मशीनें और मशीनों की देखभाल, खोज-खबर रखने के लिए अमरीकी इंजीनियर भारत आने लगे थे। अमरीका, रूस, ब्रिटेन, पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी सभी देशों की मशीनें और कल-पुर्ज़े! प्रभासचन्द्र नियोगी कभी अमरीका नहीं आये। कलकत्ता के 'चैम्बर-ऑफ़-कॉमर्स' की एक विशेष सभा में नियोगी बोले थे, "पहले हम सिर्फ़ ब्रिटेन की महारानी के दास थे। लेकिन अब हम लोग अपने देश में विदेश के विभिन्न देशों की पूँजी की स्थापना करके उन सारे देशों के गुलाम बन जाएँगे। मशीनें देकर, तकनीकी शिक्षा और यन्त्र देकर,

जंगी हथियार, जहाज, ट्रैक्टर, मोटर गाड़ियाँ और दवाएँ देकर और वक़्त पर गेहूँ, सूखा दूध और किताबें देकर, बदले में वे लोग हमारा अर्थ-तन्त्र और व्यापार-तन्त्र ख़रीद लेंगे। अपने देश के उद्योग-व्यापार और कल-कारखानों में लगी हुई सारी पूँजी और इंजीनियरी अपने देश की होनी चाहिए।"

यह 'भविष्यवाणी' करने वाले उद्योगपति प्रभास बाबू ने कभी किसी पराई ताक़त और पूँजी के साथ गठबन्धन नहीं किया था। पुराने सामन्तों की तरह वे अपने व्यवसाय में एकाधिपति और स्वाधीन थे। अखबारों और संवाददाताओं की मदद से निर्मल को प्रभासबाबू के विषय में उतनी जानकारी ज़रूर थी, जो क्लाइव-स्ट्रीट कलकत्ता के अन्य उद्योगपतियों के पास थी। दूसरों से अधिक सिर्फ़ एक बात निर्मल को मालूम थी कि प्रभासचन्द्र नियोगी ने कुल ग्यारह-बारह साल की उम्र से अपनी विधवा माँ और भाई-बहनों का पालन-पोषण शुरू कर दिया था, होटलों में काम करके छोटी दूकानों और छोटे दफ़्तरों में काम करके।

निर्मल की एक और सूत्र थी कल्याणी, जो पन्द्रह लाख रुपये सालाना से ऊपर की आमदनी वाले भारत के हर आदमी को नजदीक से जानती थी। निर्मल अपने देश की कई भाषाएँ जानता था, इसीलिए वह न्यूयार्क में भी दया मेहता से गुजराती में और प्रशान्त बरुआ से असमिया में बातचीत करता था। फिर उसकी छलहीन मुसकान उसके लिए हर मकान में जगह बना देती थी।

न्यूयार्क में उसके लिए मुसीबत सिर्फ़ एक थी कि घोर काले रंग की वजह से वह अक्सर अमरीकी नीग्रो समझ लिया जाता था। सफ़ेद होटलों और सफ़ेद बार-हाउसों में उसे सफ़ेद जनता के गुस्से का सामना करना पड़ता था। जनता जब साबित कर लेती थी कि यह आदमी हिन्दुस्तान से आया है, इंडियन है, रेड-इन्डियन नहीं है, तो शरमाकर माफी माँग लेती थी। इस परिस्थिति ने उसे सहनशील और संयत बना दिया था। वैसे वह बड़े ही उग्र स्वभाव का है। ग़ैर-ईमानदारी और

नाजायज़ घमंड वह सह नहीं पाता। एक काली औरत की रक्षा में एक बार उसने दो गोरे अमरीकियों का सिर तोड़ दिया था। अदालत में बुलाये जाने पर उसने कहा था, "मेरे सामने अब भी किसी ब्लैक औरत को अपमानित किया गया, सिर्फ़ इसलिए कि वह ब्लैक औरत है, तो मैं अपमान करने वाले का सिर फोड़ दूंगा। मैं स्वयं काला आदमी हूँ। आई एम ब्लैक! और मैं कालेपन को बदसूरत या गुनहगार नहीं समझता हूँ।"

नियोगी नाटे क़द के, बेतरह मोटे और चँदले आदमी हैं। चेहरा रक्त की वृद्धि से लाल हो रहा है। नाक बीच से, लगता है, टूटी हुई है। चश्मे के फ्रेम से उस टूटी हुई जगह को छिपाने की कोशिश नहीं करते। आकृति कोमल और भावुक। आँखें बेहद ठंडी और निस्तेज, बर्फ़ के नीचे से तुरन्त निकाली गईं। साठ-पैंसठ की उम्र के बावजूद नियोगी फुर्तीले और 'स्मार्ट' हैं। कभी बीमार नहीं होते।

अठारह साल की उम्र में नियोगी ने 'शेयर-मार्केट' में प्रवेश किया था। घर की हालत अच्छी नहीं थी। गबन के एक मामले में नियोगी के पिताजी जेल गये थे। वहीं मर-मिट गये। वापस नहीं आये। किस मुँह से अपनी पत्नी के सामने आते? नियोगी की माँ पूजा-पाठ और साधू-सन्तों में रहने वाली औरत थी। एक छोटी बहन भी थी, सरला। वह फ्रॉक पहने रहकर भी बूढ़ी और अनुभवी दीखती थी, और सारा दिन पड़ोसियों के घरों में घुसी रहती थी। कभी रुपया, कभी आठ आना, चार आना माँग लाती थी। मुहल्ले के बुजुर्गों में सरला अत्यन्त लोकप्रिय थी, क्योंकि वह नासमझ थी। उसने कभी कोई पाप नहीं किया। पाप की बात ही कभी उसके मन में नहीं उठी। बड़े-बूढ़ों के पास बैठती रही, उनकी उँगलियाँ और पीठ तोड़ती रही।

लेकिन, फिर भी, प्रभासचन्द्र नियोगी ने अपने जीवन में सबसे अधिक स्नेह अपनी उस अधपगली बहन को ही दिया, जिसने किसी दिन भी अपना आँचल सँभालकर रखना सीखा नहीं। हर साल वह एक ८।८

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

गर्भवती होती रही और तमाशा खतम होने से पहले ही पागल हो गई। पागल होकर, वह वापस अपने भाई के घर आ गई। विधवा हो गई। सरला के पाँच बच्चे थे। छह साल के अन्दर पाँचों बच्चे मारे गये।

(अब वह काशी में रहती है और गंगास्नान और शिव-मन्दिरों में पूजा चढ़ाती है। नियोगी कहते हैं, "सरला से ज़्यादा बदक़िस्मत औरत बीसवीं सदी में पैदा नहीं हुई!" और इतना कहकर, वे हर महीने अपनी बहन को आठ सौ रुपयों का एक 'चेक' भेजते रहते हैं। लेकिन, 'चेक' काटने की यह ताक़त उनके पास लम्बे-लम्बे छब्बीस सालों की लड़ाई और कशमकश के बाद आई है। दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू होने पर, नियोगी ने शेयर-बाज़ार छोड़ दिया। मिलिटरी की ठेकेदारी शुरू की। बर्मा, नेपाल, सिक्किम, नागा प्रदेश की सीमाओं पर बिछी हुई फौजी छावनियों में अनाज, कपड़े, वर्दियाँ, तम्बू, मनोरंजन का सामान और लड़कियाँ पहुँचाना। उन दिनों जब भी किसी लड़की पर प्रभासचन्द्र नियोगी गुस्सा होते थे, तो उसे किसी-न-किसी बहाने लड़ाई के 'फ्रन्ट' पर भेज देते थे।)

जब युद्ध होता है, सबसे बड़ी मुसीबत किसानों और शहरी औरतों के लिए होती है। किसान बन्दूक उठाकर लड़ने चले जाते हैं। खेत बंजर रह जाएँ, गाँव-का-गाँव अपने चूल्हे सुलगा नहीं सके, पूजा और त्योहार के दिन भी ढोल-मंजीरे चुप रहें; और उनकी औरतें रोएँ नहीं, सिसकती नहीं रहें और अपने चेहरों पर स्याही पोतकर शहर चली आएँ—बाज़ारों में नंगी घूमने के लिए।

पिछले महायुद्ध में यही हुआ था। नियोगी हर सप्ताह बर्मा-फ्रन्ट के जांबाज सिपाहियों के लिए तीस हज़ार मुर्गियाँ और चूज़े, पन्द्रह हज़ार 'रम' की बोतलें और पचीस नर्सें भेजते थे। इन्हीं नर्सों के बारे में 'अकबर' इलाहाबादी ने लिखा था, "नर्सें सब-कुछ जानती हैं, डॉक्टर चक्कर में है···एक 'चक्कर' के लिए, सारा जहाँ चक्कर में है···"

जिस दिन जापान का पतन हुआ, जिस वक़्त हिरोशिमा पर अमरीकी

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

एटम बम गिराये जाने की सूचना प्रसारित हुई, प्रभासचन्द्र नियोगी के मुन्शीजी एकाउंटेंट ने हिसाव जोड़कर बताया कि अब उन्हें 'करोड़पति' मान लेने में किसी भी महाजन को इन्कार नहीं होगा और नियोगी ने उत्तर देते हुए कहा, "मुन्शीजी, आप कमला देवी डान्सर को फ़ोन कर दीजिए। रात में यहाँ चली आएगी।" कमला उन दिनों कलकत्ता शहर की सबसे प्रसिद्ध नाचने-गाने वाली औरत थी। नियोगी ने एक बार उसे 'मोती महल' थियेटर के स्टेज पर देखा था, कई साल पहले। लेकिन मन-ही-मन उन्होंने तय किया था।

करोड़पतियों की छोटी-सी क़तार में शामिल होने के बाद, प्रभास-चन्द्र नियोगी ने जीवन में पहली बार 'पर-स्त्री' का स्वाद लिया। इससे पहले उन्होंने आराम और नींद को महसूस नहीं किया था। कभी महसूस किया भी तो उसे पेट के नीचे दबा लेने की शक्ति उनमें थी। इसलिए नियोगी ने नींद नहीं, चाँदी और सोना पसन्द किया। सिल्वर-मार्केट और गोल्ड-बुलियन-मार्केट—बीसवीं सदी के भारतीय जीवन का, शरीर का 'हृत्पिंड' यहीं है। आत्मा यहीं बसती है। प्राणों में रस-संचार यहीं से शुरू होता है। नियोगी बचपन से ही ये बातें समझते थे। अपनी समझ का उन्होंने सही उपयोग किया।

४

ग्रीक-योद्धाओं की काली मूर्तियों में कोई एक मूर्ति, निर्मल पद्मावत! ग्रीक दार्शनिकों की सफ़ेद मूर्तियों में कोई एक मूर्ति प्रभासचन्द्र नियोगी। दोनों में एक भी आधुनिक नहीं, 'अप-टु-डेट' नहीं।

निर्मल ड्राइंग-रूम में बैठा ही था कि सफ़ेद पाजामा और सफ़ेद रेशमी कुर्त्ता पहने हुए, सादा लिबास और सादा चेहरे में लिपटे हुए नियोगी आ गए। निर्मल उठ खड़ा हुआ और मुसकराया। उसके उजले-उजले दांत चमकने लगे। नियोगी ने कोई औपचारिकता नहीं की। सीधा एक सवाल उन्होंने किया, "न्यूयार्क से तुम्हारा केबुल मिला था। चौथे दिन वहीं थे तुम !"

"मैं कल ही आया हूँ। अब यहीं रहूँगा। आपको मैंने लिखा था···" निर्मल ने उत्तर दिया। नियोगी ने एक बार ग़ौर से उसकी ओर देखा। वे निर्मल को अपनी निगाहों में वज़न कर लेना चाहते हैं। नहीं, निर्मल हल्का आदमी नहीं है। उसकी आवाज़ में भारीपन है। उसकी आंखों में ईमानदारी। वह अविश्वास नहीं करता है। उसे विश्वास है। अपनी ताक़तों पर उसे आस्था है। "तुम्हारा पत्र मैंने नहीं पढ़ा···बोलो, क्या बात है ?" नियोगी ने मीठे स्वर में पूछा।

"आपको फ़ुरसत नहीं मिली होगी।"

"फ़ुरसत नहीं रहती है···देखो न, अभी नौ बजे के प्लेन से मुझे बम्बई जाना होगा। जो कहना हो···बात क्या है ?"

"मुझे मालूम है, आप बम्बई जा रहे हैं। शनिवार को वापस आएँगे।"

"बात क्या है ?"

नियोगी ने अपनी उदासीनता से निर्मल को छोटा करना चाहा। लेकिन, निर्मल छोटा आदमी नहीं है। उसने नियोगी के स्वर को अपना अपमान नहीं स्वीकार किया। उसने कहा, "आपको बताता हूँ। दस-पन्द्रह मिनट वक़्त लूंगा, ज़्यादा नहीं। आप मेरी बातें सुनें···"

निर्मल उत्तर बिहार के एक छोटे-से गांव में पैदा हुआ था। पिता के मरने के बाद उसकी मां ने पैतृक मकान बेच डाला और एक 'लॉरी' वाले ड्राइवर के साथ भाग गई। वह कुल दस साल का लड़का था। मां के भाग जाने का दुःख उसे नहीं हुआ। मकान बिक जाने की तकलीफ़ उसे ज़रूर हुई। मां को आदमी की ज़रूरत थी; अच्छा किया जो चली

गई। लेकिन, मकान क्यों ले गई ?

…गाँव से भागकर निर्मल सीधा कराची चला गया। कराची से लाहौर। सियालकोट के एक मुस्लिम होटल में प्याले धोने लगा। फिर उसी होटल में बैरा हो गया। शाम की ड्यूटी उसे मिली। चार बजे से बारह बजे रात तक वह इस टेबुल से उस टेबुल पर चक्कर काटता था। "कलेजी लाओ, तन्दूरी लाओ ! ऐ काले छोकरे, तुसी क्या करदा है, एक पैकेट कैंची-सिगरेट लाओ !" एक इत्र बेचने वाले मौलाना से उसकी दोस्ती हो गई थी। मौलाना की हरी दाढ़ी उसे बहुत पसन्द थी।

…लेकिन मौलाना इसरारुल हक़ उसे एक दिन अपने कमरे में ले गये, तो वह चाकू निकालकर खड़ा हो गया। सब्ज़ी काटने वाला चाकू। …इस चाकू के बाद, कोई आदमी उसे अपने कमरे में नहीं ले गया। मौलाना ने सारे ग्राहकों के सामने होटल के मालिक, फतेहसिंह से कहा, "तुम्हारा यह लड़का, कसम से, हरामज़ादे की औलाद है, बादशाह ! मैंने औलाद की तरह इसकी दुआएं लीं, तो मेरे दोस्तो, मुझे ही चाकू दिखाने लगा…!" होटल के टेबुलों पर बैठे हुए लोग कहने लगे, "आजकल की औलाद ही ऐसी होती है, मौलाना ! अपने वालिदों का प्यार भी नहीं चाहती !"

…निर्मल शाम को होटल में काम करता था और सुबह-दोपहर अखबार बेचता था। पुराने अखबारों के ठोंगे और खिलौने बनाता था। काग़ज़ के खिलौने और फूल। कुछ ही दिनों के बाद उसने आज़ाद रोड पर अखबारों का स्टाल शुरू किया। उन दिनों आजाद रोड का नाम था इज़ाबेला रोड। एक अंग्रेज कमिश्नर की बीवी थी इज़ाबेला। भगतसिंह के साथियों ने इसी सड़क पर इज़ाबेला को गिरफ़्तार किया था और अपने साथ ले भागे थे। वह स्वाभिमानिनी अंग्रेज़ युवती फिर कभी अपने शौहर के पास वापस नहीं आई। कहते हैं, वह उन्हीं क्रान्तिकारियों में शामिल हो गई थी।

"मैं कभी सियालकोट नहीं गया। लेकिन यह संयोग है कि इज़ाबेला

रथफोर्ड से मेरी मुलाक़ात हुई थी, यहीं कलकत्ता में। उन दिनों मैं सेठ जमनादास हरनामदास वालों के यहाँ काम करता था। इज़ाबेला अपने शक्ति-आश्रम के लिए चन्दा लेने आई थी…जानते हो, निर्मल ! क्रान्तिकारियों का साथ छोड़कर वह अँग्रेज़ लड़की तान्त्रिकों के चक्कर में पड़ गई थी।" प्रभासचन्द्र नियोगी ने कहा।

निर्मल मुसकराने लगा। फिर जैसे अपने बीते दिनों के 'रोमान्स' की याद करता हुआ बोला, "मुझे मालूम है। मुझे इज़ाबेला के बारे में सारा कुछ मालूम है।"

…अखबार-रिसालों के छोटे-से स्टाल के साथ ही उसने एक चायखाना भी कर लिया। खुद एक मौलवी साहब से उर्दू-हिन्दी पढ़ने लगा। उसकी दूकान पर कांग्रेसी, क्रान्तिकारी, मुस्लिम-लीगी, आर्य-समाजी—सभी पास-पास बैठकर चाय पीते थे और बहस-तक़रार करते थे। एक दिन पुलिस आ गई। कहा गया, निर्मल की दूकान क्रान्तिकारियों का अड्डा है। और निर्मल के पास देशी बम बनाने की चीज़ें भी पकड़ी गईं। उसे चार साल की सज़ा मिली।

…जेल में चोर-डाकुओं और देशभक्त जन-नेताओं की संगति उसे मिली। ज्ञान और अनुभव प्राप्त करना सबसे ज़रूरी काम है, यह उसने जेल में ही सीखा। उसने अपने-आपसे सवाल किया कि वह क्या चाहता है ? इस सवाल के बाद उसने कांग्रेसी नेताओं से अर्थशास्त्र और इतिहास पढ़ना शुरू किया। क़ानून, धर्म, विज्ञान और राजनीति, इन चारों का उद्देश्य एक ही है—आदमी को सुखी और सम्पन्न करना। जो वस्तु, जो व्यवस्था आदमी को दरिद्र करे, अपाहिज करे, उसे तोड़ देना चाहिए। अरस्तू सही आदमी था और सही आदमी था कार्ल मार्क्स !

…जेल से निकलकर निर्मल बम्बई चला आया। एक माल-जहाज़ की 'कैन्टीन' में बैरा होकर उसने कई बार पूरी दुनिया का सफ़र किया। टोकियो, हांगकांग, पीकिंग, मास्को, वारसा, बुडापेस्ट, बर्लिन, वियेना, पेरिस। उसने महायुद्ध और महायुद्ध में टूट-फूटकर बिखरा हुआ यूरोप

देखा। जर्मनी के आवारा नात्सी बच्चे। बर्लिन की काँटेदार दीवार, जिसे लोग मनुष्य की मूर्खता का सबसे महान् उदाहरण मानते हैं। ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के सिपाही फिर कभी 'गृहस्थ' नहीं बन सके। समूचा यूरोप जैसे टूटे हुए 'काँच' के सहारे चल रहा था, लाशों से भरी हुई फुटपाथों पर।

···पेरिस की बूढ़ी वेश्याएँ और अमीर विधवा औरतें 'काफ़्का' की कहानियाँ और पाल वैलरी की पुरानी कविताएँ पढ़ती थीं और आँसू बहाती थीं। हमारा नेपोलियन कहाँ है? कहाँ है हमारी कद्दावर महारानी···? ऑक्सफोर्ड और लन्दन के बुद्धिजीवी बियर की बोतलों के साये में, सारी दुनिया से तौबा करके 'बाइबिल' की ऋचाएँ दुहरा रहे थे। निर्मल अमरीका में आकर रुक गया। बहुत दिनों के लिए रुक गया। यात्राएँ हो चुकीं, अब थोड़ी देर कहीं बैठकर एक घर बनाने की बातें तय की जाएँ। एक घर, और घर के बरामदे में मौसमी फूलों के गमले।

न्यूयार्क के समुद्र-तट पर स्वाधीनता की देवी हाथों में मशाल लिये खड़ी थी। उसके माथे पर सूरज का किरीट। निर्मल मुग्ध हो गया। जब 'रिज'-होटल के बरामदे में इज़ाबेला से उसकी मुलाक़ात हुई···जब उसने पहली बार अपने काले रंग को अपनी ताक़त और अपना स्वार्थ महसूस किया···जब उसने कल्याणी से बातचीत करके यह समझ लिया कि बर्नार्ड शॉ ग़लत नहीं था और उसने 'स्फिंक्स' की आड़ में छिपी हुई चौदह-पन्द्रह साल की डरी हुई लड़की, क्लियोपैट्रा, और पचपन साल के बूढ़े सिपहसालार, जूलियस सीज़र की कहानी एकदम सच-सच लिखी थी···निर्मल मुग्ध था और नशे में था।

निर्मल ने इसी नशे की हालत में अमरीका की अर्थ-व्यवस्था का अध्ययन किया। श्रम, उत्पादन, पूँजी, वितरण, लाभांश, 'फ्री-ट्रेड' और सरकारी टैक्सों का हिसाब-किताब उसने देखा और समझना चाहा। निर्मल ने ऊँचे दफ़्तर देखे और उन छोटे आदमियों को भी देखा, जो नहीं जानते कि वे क्यों ज़िन्दा हैं। अपना पाप उन्हें मालूम नहीं है। अपना

पाप नहीं, अपने जीने-मरने का कारण भी नहीं !

"...मैं आपके साथ बिज़नेस करना चाहता हूँ। मेरे पास पूँजी नहीं है, फिर भी ! आप मुझे...मदद नहीं कीजिए, मेरे साथ व्यापार का समझौता कीजिए।" निर्मल पद्मावत ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

नियोगी की पत्थर जैसी वेजान-वेहरक़त आँखों में, यह सवाल सुनकर क्रोध की या ऊब की रेखाएँ तैरने लगीं, निर्मल समझ नहीं सका। नियोगी कुछ बोले नहीं, उसकी आँखों में देखते रहे। वह सीधा तनकर बैठ गया। उसने कहा, "मुझे आपके बैंक से तीस हज़ार रुपयों का कर्ज़ चाहिए। दो महीने के अन्दर मैं सूद-सहित सारे रुपए वापस कर दूँगा। ये रुपए मुझे एक सप्ताह के अन्दर ही चाहिए।"

इतनी देर बाद, प्रभासचन्द्र नियोगी पहली बार प्यार से मुसकराए। उनकी मुसकराहट फैलती गई, चौड़ी होती गई। निर्मल को अनुभव हुआ कि नियोगी की मुसकराहट ने समूचे कमरे को रोशनी और धुएँ से भर दिया है। और यह धुआँ जलती हुई अगरबत्तियों से निकल रहा है—कोयले की भट्ठी से नहीं। इज़ावेला ने एक बार निर्मल से कहा था, "कोई भी आदमी हमारा अपरिचित नहीं होता है, निर्मल। इस जन्म में नहीं तो पूर्व-जन्म में, अथवा उससे भी पूर्व-जन्म में, किसी-न-किसी रूप में हम उससे परिचित रहते हैं। पूर्व-परिचय के विना नई मुलाक़ात सम्भव नहीं है..."

निर्मल इस मुसकराहट को पहचानता है। इज़ावेला इसी तरह मुसकराती थी और उसका चेहरा सुबह के फूलों की तरह खिल उठता था। लेकिन दो क्षण बाद सुबह के फूल मुरझा गए। नियोगी ने इस्पात के खम्भे की तरह सीधा और मज़बूत एक प्रश्न सामने खड़ा कर दिया, "किसी की ज़मानत दे सकते हो ? कोई सिक्योरिटी ?"

"अपने दिमाग़ के सिवाय मेरे पास कोई पूँजी, कोई ज़मानत नहीं है," निर्मल ने यह आत्मविज्ञापन नहीं किया। उसने सिर झुका लिया।

दाएँ पाँव पर बायाँ पाँव डालकर बैठा रहा। चेहरा उसका सख्त हो गया। आँखें चमकने लगीं। वह सावधान हो गया और उसकी इस मुखमुद्रा से अन्दर-ही-अन्दर नियोगी डरने लगे। "इतने रुपयों से क्या बनेगा ? क्या करोगे ?" उन्होंने सँभलकर पूछा। ज़मानत के सवाल के बदले निर्मल यही सवाल सुनना चाहता था।

लेकिन उसने यह बताया नहीं कि मालिकों की मूर्खता, कर्मचारियों की ग़ैर-ईमानदारी और मज़दूरों की हड़ताल के कारण 'नेशनल जूट मिल' पिछले दो सालों से बन्द है। कई मशीनें बिक गई हैं। थोड़ा-बहुत कर्ज़ भी कम्पनी के सिर पर चढ़ गया है। पन्द्रह हज़ार रुपए 'एडवान्स' देकर निर्मल पद्मावत यह जूट मिल खरीद लेगा, 'लीज़' के तौर पर। उसने हिसाब देख लिया है, बीच के दलालों को तैयार कर लिया है···निर्मल ने कहा, "मैं बिज़नेस करूँगा···अभी इससे ज़्यादा क्या कह सकता हूँ !"

ड्राइंग-रूम में सन्नाटा फैल गया। निर्मल हिसाब लगा चुका था, इसलिए चुप था। नियोगी हिसाब लगा रहे थे। यह आदमी, इस आदमी का दिमाग़, इस आदमी की क़ीमत···! नियोगी कमरे में चक्कर काटने लगे। इस आदमी ने उन्हीं को क्यों चुना है ? कालीन पर खुशनुमा फूल-पत्ते बने हैं। दीवार पर जगन्नाथ महादेव का 'पट' टँगा हुआ है। कैलेन्डरों में फ़िल्म-अभिनेत्रियाँ साबुन, तेल और दन्तमंजनों की मुसकराहटों में बदसूरत दीखती हैं। एक बूढ़ा नौकर दो गिलास शर्बत दे गया। निर्मल सिगरेट पीने लगा। नियोगी कई बातें एक साथ सोचते रहे और मुसकराते रहे। फिर बोले, "तुम्हें मालूम है, मैं कितनी मुसीबत में हूँ ? जानते हो ?"

निर्मल जानता है। इन्डस्ट्री-मिनिस्टर इन दिनों नियोगी के खिलाफ़ हैं। इन्कम-टैक्स वाले पीछे पड़ गये हैं। 'प्रभासचन्द्र कॉटन मिल' में हड़ताल चल रही है। दुर्गावती-ट्रस्ट पर सरकार ने 'रिसीवर' बिठा दिया है। लेकिन असली मुसीबत इन बातों से बड़ी है। निर्मल जानता है।

प्रभासचन्द्र नियोगी की सबसे छोटी लड़की अभी कुल छह साल की है। माँ नहीं है। उसकी देखभाल के लिए एक नर्स रखी गई थी। और इस नर्स, मिस सपना सरकार ने मान-हानि, 'फोर्जरी', शील-भंग और बलात्कार के तीन-तीन केस एक साथ नियोगी के खिलाफ़ बैंकशॉल-कोर्ट में कर दिए हैं। और इसीलिए प्रभासचन्द्र नियोगी की 'क्रेडिट' और नियोगी के 'वेस्ट-बंगाल बैंक' की 'क्रेडिट' बाज़ार से टूटने लगी है। 'वेस्ट-बंगाल बैंक' के शेयरों की दर पचासी रुपए प्रति शेयर से गिरकर तीस रुपए हो गई है। शायद बैंक फेल हो जाए, इस डर से कारबारी लोग 'वेस्टं-बंगाल बैंक' से अपना खाता-पत्तर समेट रहे हैं। असली मुसीबत यही है। निर्मल जानता है।

"आप सपना सरकार से शादी कर लीजिए। वह विधवा है। राज़ी हो जाएगी। केस उठा लेगी। समाज में आपका सुनाम फैलेगा। विधवा-विवाह करेंगे आप, तो समाज-सुधारक माने जाएँगे। 'क्रेडिट' वापस आ जाएगी। मिस सरकार को मिसेज़ नियोगी बना लेने में आपका कोई नुक़सान नहीं है, नियोगी साहब!···आप यह अच्छा कर रहे हैं कि फ़र्ज़ी नामों से अपने ही बैंक के शेयर मिट्टी के भाव खरीद रहे हैं। यही कीजिए। शेयरों की दर कुछ ही दिनों बाद सौ रुपए हो जाएगी। तीस रुपए की चीज़ सौ रुपए में बिकेगी। आप समझ रहे हैं न?" निर्मल पद्मावत ने अपना एक-एक शब्द अपने होंठों के धनुष पर बिठाकर, शब्दवेधी तीर की तरह नियोगी की तरफ़ फेंका। और इस तीरन्दाज़ी के बाद वह चुप हो गया। ऐश-ट्रे में सिगरेट की राख झाड़ने लगा। ···यह दुनिया ऐसी ही है। बकरियों के झुण्ड की तरह जिधर हाँक दीजिए, सिर झुकाए, आपके पीछे चली जाएगी। अगर आपमें ताक़त है···सबसे बड़ी बात है ताक़त। और उससे भी बड़ी बात है, ताक़त का सही इस्तेमाल···

प्रभासचन्द्र नियोगी सोफ़े के एक किनारे बैठ गए और उन्होंने अपनी निगाहें नीचे झुका लीं। निर्मल के बारे में नहीं, वे सपना सरकार के

बारे में सोच रहे थे। कहीं कोई एक जगह है, जहाँ आकर नियोगी कमज़ोर हो जाते हैं, यह बात सपना समझ गई थी और अब निर्मल भी समझ गया था।

औरत की देह नहीं, अकेलेपन की दीवारें तोड़ने के लिए कोई बहाना। नियोगी को अपनी छोटी लड़की की होशियार और सजी-सँवरी रहने वाली नर्स से प्यार नहीं हुआ था। लेकिन वे अकेले थे। अकेले रहते हैं। धीरे-धीरे सपना सरकार उनके लिए कभी गर्म कॉफ़ी का प्याला, कभी नींद की दवाएँ लाने लगती है। अच्छा लगता है। यह सब अच्छा लगता है।

कोई व्यक्ति नौकर-खानसामा बनकर नहीं, परिवार का व्यक्ति बनकर सेवा करने लगे, रात में वापस जाने के समय, सोने के कमरे में आकर, देह पर रजाई डाल दे, दवा खिला दे, बिजली की रोशनी बुझाकर 'नमस्ते' करे···अच्छा लगता है। प्रभासचन्द्र नियोगी ने ऐसे ही छोटे-छोटे सुखों के कारण सपना सरकार की तरफ़ अपने मन और अपने शरीर को ढीला कर दिया।

और तब एक दिन सपना ने उन्हें बताया कि वह नर्स नहीं रहना चाहती है। वह फ़िल्म-स्टार बनेगी। फ़िल्म-स्टारों और फ़िल्मों से नियोगी को बेहद घृणा है। वे कभी सिनेमा नहीं जाते। वे इस काम में सपना सरकार की कोई मदद नहीं करेंगे। अगर वह दोबारा फ़िल्मों के नाम लेगी, फ़िल्म-कम्पनियों के नाम लेगी, तो नियोगी अपनी लड़की के लिए कोई नई नर्स तलाश करेंगे। "मुझे फ़िल्म-स्टार नहीं बना सकेंगे, तो मुझसे शादी कर लीजिए," सपना ने कहा था, तो वे चौंक गए थे।

लेकिन यही बात जब निर्मल पद्मावत ने कही, तो वे आश्चर्यचकित नहीं हुए। उन्हें ग़ुस्सा नहीं आया। उन्होंने तय किया, वे निर्मल को कलकत्ता में बसाने की कोशिश करेंगे।

५

हर छोटी सड़क के बाद एक बड़ी सड़क। हर छोटे चौराहे के बाद एक बड़ा चौराहा। हर छोटी मंज़िल के बाद एक बड़ी मंज़िल। इमारतें इसी तरह ऊपर उठती हैं। दायरे श्रौर जाविये फैलने लगते हैं, तीनों श्रायाम में। 'नेशनल जूट-मिल' खरीद ली जाती है। 'मिलर-एण्ड-मिलर कम्पनी' के कारखाने का इन्तज़ाम श्रपने हाथ में किया जाता है। बड़ा बाज़ार श्रौर कॉटन-स्ट्रीट के व्यापारी कहते हैं, "यह श्रादमी···निर्मल पद्मावत ज्योतिष जानता है···रूई, जूट, चाय श्रौर लोहे की दरों श्रौर बाज़ारों का ज्योतिष!"

एक मुनाफ़े से दूसरी पूंजी बनती है। दूसरी पूंजी से तीसरा मुनाफ़ा पैदा होता है। हिसाब ठीक हो, हिसाब लिखने का क़ायदा ठीक हो, तो ऊँची-से-ऊँची इमारत खड़ी की जा सकती है···ऊँची-से-ऊँची इमारत!

जिस दिन प्रिन्सेस स्ट्रीट पर बनाई गई तीस मंज़िल की इमारत 'कल्याणी-मेन्शन' का उद्घाटन बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ० विधानचन्द्र राय ने किया श्रौर फ़ीता काटते वक़्त कहा, "मुझे विश्वास है, यह ऊंचा स्काई-स्क्रैपर हमारे इस विराट् महानगर की श्रावास-समस्या को दूर करने में हमारी सहायता ज़रूर करेगा। मैं कलकत्ता की जनता की श्रोर से प्रसिद्ध उद्योगपति श्री निर्मल बाबू का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने इस कल्याणी-मेन्शन का निर्माण इसी उद्देश्य से किया है।"···निर्मल का एक सपना, शायद उसका पहला श्रौर श्राख़िरी सपना पूरा हो गया।

यह सपना उसी दिन पैदा हुश्रा था, जब श्रपना घर बेचकर उसकी मां एक लॉरीवाले के साथ भाग गई थी श्रौर घर के नये मालिक ने निर्मल श्रौर उसके छोटे-से कुत्ते को घर से भगा दिया था। घर से,

दूसरे लोगों के घर से निर्मल अपने जीवन में कई बार कितने मौक़ों पर भगा दिया गया है। लेकिन इससे वह अपमानित नहीं हुआ है। उसने प्रौढ़ और सहनशील व्यक्तियों की तरह अपमान बर्दाश्त किया है, ताकि एक दिन वह यहाँ तक आ सके, अपने इस 'कल्याणी-मेन्शन' के दरवाज़े तक!

एक बार कल्याणी उसे न्यूयॉर्क में, 'संग्रीला-होटल' के अपने फ्लैट तक ले गई थी, फ्लैट के दरवाज़े तक। दरवाज़े के छेद में चाबी डालकर बोली थी, "अब तुम जाओ, निर्मल बाबू! नाऊ···यू···गो! अब जाओ तुम!" निर्मल चुपचाप पीछे मुड़कर 'लिफ्ट' में वापस चला आया था। वापस लौट गया था, लेकिन, एक बार फिर वापस आने के लिए!

कल्याणी डॉक्टरी पढ़ने के लिए अमरीका आई थी। लेकिन पढ़ाई नहीं चल सकी। घर से रुपये आने बन्द हो गये। 'फ़ारेन-एक्सचेंज' की दिक्क़त पैदा हो गई। माँ ने चिट्ठी लिखी, टेलिग्राम दिये और तरह-तरह के लालच दिखाये—"कल्याणी-बेटी, तुम वापस चली आओ!" लेकिन कल्याणी कटी हुई पतंग की तरह न्यूयॉर्क, केलिफोर्निया और लॉस-एन्जिलस इन तीन शहरों के कहवाघरों और नाचघरों में चक्कर काट रही थी। वह वापस नहीं जाएगी, क्योंकि वह कटी हुई पतंग है। उसकी आत्मा इस नई आज़ाद दुनिया के नये और आज़ाद आसमान में रम गई है।

यह दुनिया जंगलों और अख़बारों की दुनिया है, जहाँ आदमी अपने बारे में सुनी गई अफ़वाहों और कहानियों में जिन्दा रहता है। लोग जहाँ चाहते हैं, नंगे हो जाते हैं। नंगापन बुरी बात नहीं है। न्यूयार्क-पुल से नीचे कूदकर मर जाना भी बुरी बात नहीं है। मंनहट्टन की बस्तियों में अँधेरा है। धुंधली रोशनी और सिगरेट के धुएँ से भरे हुए, छोटे-छोटे शराबगाहों में लोग तिपाइयों पर बैठे हैं···भारतीय संन्यासियों और चीनी होटलों की बातें कर रहे हैं···कोई औरत अपना गिलास टेबुल

पर पटकती है और अपने स्कर्ट की बाँहें और सीना उतारकर ऊपर उठती है···ड्रम और आर्केडियन की वहशी धुन पर नाचने लगती है। सिल्वाना मैंनगानो और सोफिया लारेन की तरह! मम्बो!···नीग्रो-संगीत ··स्पेनी जिप्सियों का संगीत!···रा रा-रम्, रा-रा-रम्-रम्-रा-रम्, रा-रा-रम्, रम्-रम्!···शेरॉय···शेरॉय वाकू रम, हाइ ओलमो! हाइ ओलमो! शेरॉय वाबू रम। (ऐ मेरी माशूक तूने शेरॉय की बनी हुई, तेज़ शराब पी ही नहीं, फिर तू प्यार क्या करेगी?) ···रा-रा-रम्, रा-रा-रम्!

यह जिप्सी-संगीत कल्याणी को पागल कर देता है। वह शेरॉय की पुरानी 'रम' पीकर भटकती रहती है। पैसे उसके पास नहीं हैं, लेकिन उसके पास एक सुनहरी डायरी है, जिसमें उसने कई फ़ोन-नम्बर और कई नये-पुराने पते दर्ज कर रखे हैं। वह फ़ैशन-शो में 'मॉडल' का काम करती है। कई चित्रकारों और कमर्शियल-फोटोग्राफ़रों ने उसके 'फिगर', उसके शरीर के चढ़ाव-उतार की प्रशंसा की है। न्यूयार्क में हिन्दुस्तान से आयी हुई अकेली लड़की है कल्याणी—जो अमरीकी 'मॉडल'-लड़कियों की क़तार में खड़ी होकर गायब नहीं हो जाती, कायम रहती है, मुसकराती रहती है।

भारतीय दूतावास के एक जलसे में, कल्याणी को निर्मल पद्मावत की बग़ल में खाने की मेज़ पर बैठना पड़ा था। उस दिन बातचीत नहीं हुई। परिचय करने का कोई सिलसिला नहीं हुआ। अपरिचित लोगों के बीच में ये दोनों व्यक्ति अपरिचित ही रह गये। लेकिन, निर्मल पद्मावत एक बार कल्याणी को देखकर, फिर उसे भूल नहीं सका। टेलीफ़ोन-डाइरेक्टरी में कल्याणी का नाम-पता वह ढूंढ नहीं पाया। ढूंढने की कोशिश उसने ज़रूर की।

फिर, अचानक एक शाम 'ब्रॉडवे' के एक थियेटर में मुलाक़ात हो गई। कल्याणी एक सिक्ख सरदारजी के साथ बातें करती हुई लाउन्ज में खड़ी थी। निर्मल अकेला था। वाल-बोर्ड में लगी तसवीरें देख रहा

था। निर्मल को देखते ही कल्याणी तेज़ क़दमों से लगभग भागती हुई, चेहरे पर स्नेह और मित्रता की गर्म मुसकराहटें लपेटे हुए, उसके पास चली आई। लगभग उसके शरीर से लिपटती हुई कहने लगी, "आइ वाज़ वेटिंग फॉर यू, डार्लिंग!...डियर! आइ वाज़ वेटिंग!...आइ वाज़...!"

यह औरत पागल तो नहीं हो गई है? निर्मल के मन में यह प्रश्न उभरने लगा। लेकिन वह मुसकराने लगा। सरदारजी ने 'सीयर्स' का क़ीमती सूट पहन रखा था, और दाढ़ी में क्रीम लगाई थी। वे निर्मल के पास आकर खड़े हो गये। बोले, "हम अमृतसर से आया है। उधर अपणा रोडवेज़ चलाते हैं। नाइस टु मीट आवर पीपल हियर! अपणा देश के आदमी से मुलाक़ात हो जाणा बहोत अच्छी बात!...अभी दो दिन हुआ, देवीजी से क्रिस्टन होटल में मुलाक़ात हुई...!"

"आमा के बाचाओ! एई लोक-टा आमा के खेये फेलवे!" निर्मल के कान में फुसफुसाती हुई कल्याणी, बंगला में, बोली। निर्मल समझ गया। बंगला वह समझता है। उसने एक सेकन्ड में अपने-आपको तैयार कर लिया। तैयार होने में उसे देर नहीं लगती है। मुसकराते हुए, लेकिन बहुत कड़ी आवाज़ में उसने सरदारजी से कहा, "मैं आपसे परिचित होना नहीं चाहता!...आई एम सॉरी!...चलो, कल्याणी! वी शुड गो इन!...हमें अन्दर जाना चाहिए!"

कल्याणी की बाँह थामकर, निर्मल पद्मावत थियेटर-हाउस की बालकनी में चला गया। सीढ़ियों पर चढ़ते वक्त, उसने कल्याणी से पूछा, "तुमने अमृतसर के इस सेठजी से कितने डालर लिये हैं?...सौ डालर? दो सौ?" कल्याणी ने अपनी बाँह छुड़ा ली और हँसने लगी। हँसती हुई, लगभग दौड़ती हुई, सारी सीढ़ियाँ चढ़ गई। जब निर्मल पास आया, तो बोली, "क्यों? अपना कमीशन चाहिए तुम्हें?"

निर्मल पद्मावत को कोई कमीशन नहीं चाहिए। वह सिर्फ़ जानना चाहता है कल्याणी को, और उसके शारीरिक व्यवसाय को समझना

चाहता है। टिकटघर के सामने आकर कल्याणी रुक गई। टिकट के पैसे उसी ने दिये। निर्मल ने कहा, "मुझे कमीशन नहीं चाहिए।"

आस-पास खड़े लोग इन दोनों को घूर-घूरकर देख रहे थे। गेहूँ की बालियों की तरह गोरी और भरी हुई कल्याणी। काले पत्थर की चट्टान की तरह निर्मल पद्मावत। कल्याणी ने केरली औरतों की तरह जूड़े में फूल लगाए थे और शोख लाल रंग की रेशमी साड़ी पहने थी। "कमीशन नहीं चाहते, तो फिर क्या चाहते हो?"···कल्याणी यह सवाल पूछकर शरमाने लगी।

···पिछले दो दिनों में कल्याणी ने सरदार निहालसिंह से ढाई सौ डालर लिये थे। और ये सारे डालर उसने इन्हीं दो दिनों में खर्च भी कर डाले थे। वह बुरे दिनों के लिए पैसे बचाकर रख नहीं पाती, क्योंकि वह हमेशा, हर वक्त 'बुरे दिन' की स्थिति में रहती है। पैसे हुए, तो किसी भी अच्छे और अकेले 'पब' में बैठकर 'पोर्ट' या 'शेरी' पीते रहना और अपनी खामखयालियों में डूबे रहना···पैसे नहीं हुए तो अपने कमरे में, बिस्तर में पड़े-पड़े 'पालमाल' सिगरेट पीना और कोई भी सस्ती शराब पीकर सो रहना। शहर में हज़ारों दोस्त, लेकिन कहीं कोई दोस्त नहीं। ज़्यादातर वह अकेली रहती है। लेकिन जब होटल का उधार बढ़ जाता है, 'लान्ड्री' से धुले हुए कपड़े ले आने के लिए पैसे नहीं होते···कल्याणी अपनी सबसे कीमती साड़ी और ब्लाउज़ निकालती है। हल्का मेकअप डालकर वह अपने कमरे से बाहर निकल आएगी। अकेली, लेकिन पूरी तरह तैयार होकर। 'प्लाज़ा' में, मेडिसन-एवेन्यू में, 'टाइम'-स्क्वायर में, कहीं-न-कहीं उसे 'सरदार निहालसिंह' से मुलाक़ात हो जाती है। परिचय होता है और आगे बढ़कर परिचय कर लेने वाला आदमी कल्याणी की बातचीत, कल्याणी के सलीकों और सिलसिलों को देखकर चकित हो जाता है।

संक्षेप में, यही उसका पेशा है। पेशे से वह नफरत करती है। मगर दूसरा कोई काम उसे नहीं आता। फ़िल्म-स्टार वह हो नहीं सकी।

'ब्रॉडवे' में भी उसके लायक कोई 'रोल' नहीं लिखा गया। टेलीविज़न पर कुछ दिनों तक उसने भारतीय राजकन्या, अमरीका में पढ़ती हुई भारतीय युवती, भारतीय एयर-होस्टेस, भारतीय गृहिणी का काम अदा किया। कुछ ही दिनों तक। इसके बाद वह 'मॉडल' बन गई। 'मॉडल' वह अब भी है। और अब भी वह कभी-कभी 'ब्लू'-फ़िल्मों में काम कर लेती है।

सांप्रतिक अमरीकी संस्कृति के कुछ प्रमुख अंगों-उपांगों की एक लिस्ट कल्याणी ने बनाई है। सुन्दर और साफ़ अक्षरों में लिखकर, उसने यह लिस्ट दीवार पर एक कोने में लटका दी है।

१. नीली फ़िल्में
२. 'जैज़'-संगीत और नीग्रो लड़कियाँ
३. डेल कार्नेगी
४. टेनीसी विलियम्स के नाटक
५. पीली अखबारनवीसी
६. मेरेलिन मनरो
७. 'पब' और गन्दे कहवाघर
८. कम्युनिज़्म का 'भय', और
९. 'स्काई-स्क्रैपर्स'।

"फिर क्या चाहते हो मुझसे ?"—कल्याणी ने दोबारा पूछा। अब वह शरमा नहीं रही थी, बल्कि अपने सवाल के दोहरेपन पर खुश हो रही थी··· "मैं कुछ नहीं चाहता। सिर्फ़ इतना जानना चाहता हूँ, कि यह सरदारजी कितनी बार तुम्हारे साथ···" कोई कड़ी बात कहते-कहते निर्मल रुक गया। वाक्य उसने पूरा नहीं किया। मगर, कल्याणी समझ गई। अपमानित हो गई। उसने अपना चेहरा झुका लिया, क्योंकि इस अधूरे वाक्य के बाद, अचानक वह अपने-आपको निर्मल के सामने बहुत छोटा और बहुत हीन अनुभव करने लगी थी। वह इतनी छोटी नहीं है। निर्मल पद्मावत की ऊँचाई ने उसे छोटी कर

दिया है···वह अपना चेहरा, और अपनी आँखें ऊपर उठाकर निर्मल की तरफ़ देख नहीं पाती है···गले में सिगरेट की डिब्बियों का ट्रे लटकाए हुए चौदह-पन्द्रह साल का एक लड़का उनके सामने आ खड़ा हुआ।

कल्याणी सिगरेट खरीदना चाहती थी। लेकिन उसे लगा कि वह निर्मल के सामने सिगरेट नहीं पी सकेगी। पीने लगेगी तो उसकी उँगलियाँ थरथराने लगेंगी और सिगरेट ज़मीन पर गिर जाएगी। निर्मल ने 'पालमाल' का एक पैकेट खरीदा। कल्याणी यही सिगरेट पीती है।

उस दिन भारतीय दूतावास की पार्टी में निर्मल ने उसे सिगरेट पीते हुए देखा था। निर्मल ने उसे सिगरेट पीते हुए, 'काकटेल' का नन्हा-सा गिलास उठाकर इस टेबुल से उस टेबुल पर घूमते हुए, मुसकराते हुए, अपने परिचितों की पीठ थपथपाते हुए देखा था···कल्याणी हँसती है, तो उसकी आँखें सोन-मछलियों की तरह चमकने लगती हैं।

यह चमक इतने पास से देखने का मौक़ा निर्मल को पहले कभी नहीं मिला था। औरतें उसने देखी ज़रूर थीं, लेकिन इतने नज़दीक से पहले कभी नहीं। इतने नज़दीक से किसी औरत ने उससे पूछा नहीं था कि वह क्या चाहता है और किस तरह चाहता है।

···'ब्रॉड वे' की इस मुलाक़ात के बाद, कल्याणी से वह अक्सर मिलने लगा। कल्याणी ने उसे अपने होटल का पता बता दिया था। वह फ़ोन करता था, तो कल्याणी उससे मिलने चली आती थी। वे दोनों किसी सस्ते 'पब' में बैठते थे और अपने देश और अपने शहर के बारे में बातें करते थे। बातें ज्यादातर कल्याणी ही करती थी। निर्मल चुप रहता था। एक बार कल्याणी बीमार हो गई। फिर अपना होटल छोड़कर, किसी सहेली के पास चली गई। कई महीने बाद एक दिन उसी ने निर्मल को फ़ोन किया···दफ़्तर का काम खत्म करके, निर्मल उससे मिलने गया।

वह मैनहट्टन-इलाक़े के एक बड़े रेस्तराँ में निर्मल का इन्तज़ार कर रही थी।

कल्याणी अकेली नहीं थी। प्रताप उसके साथ था। वे दोनों 'वालरस'-रेस्तराँ के हॉल में दरवाज़े के पास के टेबुल पर बैठकर बियर पी रहे थे। निर्मल उनके पास आकर खड़ा हो गया।···कल्याणी उस वक्त प्रताप की किसी बात पर हँस रही थी। निर्मल को पास खड़ा देखकर भी उसका हँसना रुका नहीं···वह पहले से ज़्यादा मोटी और ज़्यादा चिकनी हो गई है। लेकिन कपड़े उसने पहले से ज़्यादा चुस्त पहन रखे हैं।

···प्रताप किसी पुराने ज़मींदार घराने का नया वारिस है। बिज़नेस का काम सीखने के लिए और लोहे-इस्पात के अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में सम्पर्क-सम्बन्ध क़ायम करने के लिए अपने चाचाजी के साथ आया है। वह शर्मीले स्वभाव का युवक है और प्रतिभाशाली होकर भी, तेजस्वी होकर भी कल्याणी के सामने बहुत नया और बहुत छोटा दीखता है।

परिचय की औपचारिकता के बाद, कल्याणी बोली, "मैं प्रताप से शादी करने जा रही हूँ···सैन्डियागो में शादी होगी। फिर हम दोनों वापस केलिफ़ोर्निया आ जाएँगे, और···!" उसने अपना दायाँ हाथ निर्मल की ओर बढ़ा दिया। बीच की उँगली में एक क़ीमती पत्थर जगमगा रहा था—पुखराज का एक बड़ा-सा बेडौल टुकड़ा!

कल्याणी ने उसे इसी बेवक़ूफ़ लड़के से जान-पहचान कराने के लिए, यही बेवकूफ़ सूचना देने के लिए उसे इतनी दूर से इस रेस्तराँ में बुलाया है, निर्मल को यक़ीन नहीं हुआ। ज़रूर कोई दूसरी बात भी है···बात ज़रूर थी। कल्याणी चाहती थी कि निर्मल पद्मावत कल सुबह प्रताप के चाचाजी से मिल आए और उन्हें सारी परिस्थिति बता दे। यह प्रस्ताव सुनकर निर्मल मुसकराया।···कल्याणी 'ब्लैकमेल' करना चाहती है। उसने प्रताप का कलेजा अपनी मुट्ठी में दबा लिया है। अब वह प्रताप के चाचाजी से अपनी इस जादूगरी के बदले रुपए चाहती है।

प्रताप मुश्किल से बीस-बाईस साल का लड़का होगा। कल्याणी शायद, उसके जीवन की पहली औरत है, जिसकी बाहों में प्रताप ने

अपने-आपको इतने इत्मीनान के साथ छोड़ दिया है। प्रताप ने बियर का लम्बा गिलास खाली करके कहा, "निर्मल भाई, यह मेरे मरने और जीने का सवाल है।...चाचाजी मेरी ज़मीन-जायदाद के 'ट्रस्टी' हैं। लेकिन, अब मैं बालिग़ हो गया हूँ। मुझे अगर चाचाजी रोकना चाहेंगे तो मैं देश लौटकर तूफ़ान मचा दूँगा। अपनी सारी सम्पत्ति औने-पौने दाम में बेचकर यहाँ अमरीका भाग आने में देर नहीं लगेगी...एक दिन की भी देर नहीं। मगर आप कोशिश कीजिए कि हमारे रास्ते में कोई रुकावट नहीं आए। चाचाजी आपकी बात मान लेंगे, तो मैं आप को ही अपनी कम्पनी का डाइरेक्टर बनाऊँगा। मैं इस्पात का एक कारखाना खोलना चाहता हूँ।"

एक तरफ़ कल्याणी और दूसरी तरफ़ इस्पात का कारखाना, प्रताप की बातचीत सुनकर, निर्मल को हँसने की इच्छा हुई। उसे इच्छा हुई कि वह मेक्सिको की किसान-औरतों का वह प्रसिद्ध गीत गाने लग जाए, जिसमें कहा गया है—

"काग़ज़ का चन्द्रमा
आकाश में चिपकाया जा सकता है
लेकिन, उसमें
रोशनी नहीं होगी कभी !
काग़ज़ का चन्द्रमा
दूधिया किरनें बरसा नहीं सकता,
किसी हाल में नहीं !"

थोड़ी देर बाद, कल्याणी ने प्रताप को 'बियर' के लम्बे गिलास से उठाकर 'रम' की बड़ी बोतल में डाल दिया।...प्रताप को नशा होता है, तो उसे नींद आ जाती है और वह अपनी कोई एक बाँह सिर के नीचे डालकर टेबुल पर झुककर सो जाता है।...प्रताप सो गया। रात के दस-ग्यारह बज रहे थे। रेस्तराँ में रात को मुसाफिरों की भीड़ बढ़ आई थी। 'औरतें माइकेलैन्जिलो की बातें करती हुईं यहाँ-वहाँ घूम रही

T. S. Eliot

थीं," मेक्सिको के गीत के बाद, निर्मल पद्मावत को टी० एस० इलियट की यह प्रसिद्ध पंक्ति याद आई।

उसने अपने सामने की कुर्सी पर बैठी हुई औरत से कहा, "कितना छोटा, कितना मामूली लड़का है यह, कितना शरीफ़...! क्यों बरबाद कर रही हो इसे? किसने तुम्हें इतना जानवर बना दिया है? अब तो तुम 'क्राइम' पर उतर आयी हो!" कल्याणी शराब में नहीं, दूध में धोई हुई खिलखिलाहटों में डूबकर बोली, "मैंने इस बार 'संग्रीला'-होटल का सबसे खूबसूरत फ़्लैट अपने लिए 'बुक' किया है...तीन कमरों का 'अपार्टमेंट' है।"

कल्याणी ने बेतरतीबी से बाँधे गए अपने बालों को एक हल्का-सा झटका दिया। वह खुद भी नशे में आ गई थी। यह रेस्तराँ उसे बहुत रंगीन और बहुत तेज रोशनी में तैरता हुआ पानी का जहाज़ दीख रहा था...एक नीग्रो-लड़की 'माइक' पकड़े हुए खड़ी है, और अपना 'जेट ब्लैक' शरीर थिरकाती हुई कोई स्पेनी-गीत गा रही है। किसी नये कवि का लिखा हुआ एक नया गीत—

[1] "बाज़ो मि कोडो, एन मि कोडो
बाज़ो मि कामा, एन मि कामा
बाज़ो मि पाइ, एन मि पाइ
बाज़ो मि ओज़ो, एन मि ओज़ो

---

१. मेरी कुहनियों के नीचे, मेरी कुहनियों में
मेरे बिस्तरे के नीचे, मेरे बिस्तरे में
मेरे पाँवों के नीचे, मेरे पाँवों में
मेरी आँखों के नीचे, मेरी आँखों में
हाँ, हाँ; मैंने फिर से ढूँढ ली है —
खोयी हुई चाबी, चाबी, चाबी, चाबी, चाबी,
कौन चिड़ियाँ गाती हैं यही गाना
चाबी, चाबी......

—डायने वाकोस्की (मेक्सिकी कवयित्री)

सी, सी; ला हे एनकोन्ट्रैंडो—
ला पर्डिडा लाहे, लाहे, लाहे, लाहे, लाहे,
क्वे पज़ारो कैन्टा एसा कैन्सन
लाहे, लाहे
बाज़ो मि कोडो, एन मि कोडो
बाज़ो मि कोडो !"

कल्याणी दस-बीस दफ़ा मेक्सिको-शहर हो आई है और लैटिन-अमरीका के काफ़ी हिस्सों में घूम चुकी है, इसलिए उसे इस गीत को समझने में कोई दिक्क़त नहीं हुई। उसे ख़ुशी इस बात की हुई कि एक फुट ऊँचे स्टेज पर खड़ी वह काली-कलूटी गानेवाली औरत उसके मन का हाल समझ रही थी···खोई हुई चाबी कल्याणी को भी मिल गई है। यह चाबी है, प्रताप !

निर्मल ने शान्त और सधे हुए स्वर में पूछा, "तुम्हें कभी अपने देश की याद नहीं आती ?···अपना घर याद नहीं आता ? तुम यहाँ डॉक्टरी पढ़ने आई थीं, मगर तुम ख़ुद ही बीमार हो गई हो !"

कल्याणी चौंक गई। अचानक जैसे उसने अपनी नाक के नीचे किसी लाश को चलते-फिरते हुए देख लिया हो। घबराकर उसने निर्मल से पूछा, "किसका देश ? किसका घर ?···मगर, मैं बीमार नहीं हूँ। मैं बीमार दिखती हूँ क्या ?···पहले से ज्यादा तन्दुरुस्त नहीं लगती हूँ ?"

···कल्याणी के लिए अब कोई घर नहीं है, कोई देश नहीं ! उसे किसी की याद नहीं आती है। याद आने की ज़रूरत ही क्या है ?

६

प्रताप के प्रतापी चाचाजी दाँव-पेंच के खेल में कल्याणी से अधिक चतुर थे। फिर धीरे-धीरे प्रताप का नशा खुद ही टूट गया। अपनी आर्थिक ज़रूरतों के कारण कल्याणी धीरे-धीरे, प्रताप के प्रति अधिक निर्मम और स्वार्थी होने लगी।

…दो-तीन हफ़्तों के बाद, जब निर्मल पद्मावत अपने दफ़्तर से छुट्टी लेकर कल्याणी से मिलने गया तो कल्याणी तीन कमरों के अपने एपार्टमेंट में यहाँ-वहाँ चक्कर काट रही थी। उसकी ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा हुआ था कि वह टैक्सी लेकर बाहर निकलना चाहती थी, लेकिन उसके पर्स में किराये के पैसे नहीं थे। अपनी गाड़ी वह दो ही दिन पहले बेच चुकी है, फिर भी उसके पास पैसे नहीं हैं। आज सुबह एक पुराना मुलाक़ाती कल्याणी से मिलने आया भी था, मगर कोई काम नहीं हुआ। वह इतनी थकी हुई, इतनी जर्जर थी कि सुबह-सुबह याद करने वाले इस पुराने मुलाक़ाती के लिए वह अपने बिस्तरे से नीचे उतर नहीं सकी। वह आदमी थोड़ी देर यहाँ-वहाँ की बातें करता रहा। फिर, समझ गया कि कल्याणी अच्छी सूरत में नहीं है।

कल्याणी उसे रोक नहीं सकी। वह फिर आने का वादा करके, वापस चला गया। कल्याणी दोपहर दिन तक अपने बिस्तरे में पड़ी रही। उठकर हाथ-मुंह धोने की ताक़त नहीं मिली उसे…रात वह बाहर थी। एक सस्ते नाइट-क्लब में बैठी हुई, जूता बनानेवाली एक कम्पनी के वयोवृद्ध मालिक के साथ खेल-तमाशे कर रही थी।

उसने मिस्टर हिल्टन को बताया था कि वह राजस्थान के एक बड़े 'स्टेट' की राजकुमारी है। मगर, मिस्टर हिल्टन समझ गए थे (वह बुद्धिमान आदमी हैं, क्योंकि उनकी कम्पनी साल में पेंतीस लाख जूतों के जोड़े

बेचती है, फिर भी वह सस्ते नाइट-क्लबों में आते हैं और कम पैसों में ज़्यादा-से-ज़्यादा तफ़रीह लूटकर, अपनी बीवी और अपने कारोबार की तरफ़ लौट आते हैं !) कि कल्याणी राजकुमारी नहीं है । अमीर औरतें भूल से भी इस नाइट-क्लब में नहीं आतीं । आती हैं सस्ती औरतें ।

कल्याणी के आधुनिक तौर-तरीकों के बावजूद हिल्टन साहब ने उसके साथ सस्ती औरतों का वर्ताव किया···उनकी बातचीत और उनकी हरक़तों से कल्याणी इतनी ऊब गई कि जब आधी रात के बाद उन्होंने कल्याणी के कमरे में चलकर कॉफ़ी का एक प्याला पीने का प्रस्ताव रखा तो उसने मना कर दिया । उसने कहा, "मैं कॉफ़ी नहीं पीती । सिर्फ़ ह्विस्की, और सिर्फ़ 'रम' पीती हूँ ।"

हिल्टन साहब से छुटकारा पाकर कल्याणी अपने होटल चली आई, और आलमीरे में रखी बची-खुची ह्विस्की पीकर सो गई । सोने से पहले उसने तय किया कि वह निर्मल पद्मावत को फ़ोन करके अपने यहाँ बुलाएगी । उसने तय किया, उसकी ज़िन्दगी का आख़िरी मसीहा निर्मल ही है । अब दूसरा कोई आदमी कहीं नहीं है, जो उसे इस काले वर्तमान से छुटकारा दिला सके ।

निर्मल दोपहर के वाद उसके कमरे में आया । उसे पता नहीं था कि प्रताप अपने चाचाजी के साथ बम्बई वापस लौट चुका है और कल्याणी ने अपनी कार बेच दी है । उसे यह भी पता नहीं था कि फ़िल्म 'आई विल क्राई टुमॉरो' की सूसन हवार्ड की तरह, अब कल्याणी भी शराब और नींद और किसी आदमी के साथ की खोज में सारी रात सड़कों पर, शरावघरों में, क्लबों में भटकती रहती है ।

"तुम्हारे बैंक में कुल कितने रुपये जमा हैं ?" कल्याणी ने निर्मल से पहला सवाल यही किया । वह इस सवाल के लिए तैयार नहीं था । लेकिन, अपने पोर्टफ़ोलियो-बैग से उसने अपनी 'पासबुक' निकाली, और चुपचाप कल्याणी के हाथों में थमा दी । 'चेक-बुक' के एक पन्ने पर निर्मल के दस्तख़त लेकर, कल्याणी ने अपने एक विश्वासपात्र बैरे को

चेक भुना लाने के लिए बैंक भेज दिया···इस पूरे काम में कुल तीन वाक्यों और कुल पाँच मिनटों का समय लगा। कुल आधे घंटे बाद, होटल का बैरा 'चेक' के रुपये लेकर वापस आ गया।

बारह सौ पचास डालर की धनराशि अपने 'ड्रॉअर' में रखने के समय कल्याणी आश्चर्य में पड़ गयी। आज सुबह उसके पास ज़हर खाने को पैसा नहीं था···मगर यह आदमी?···यह आदमी क्या चाहता है? क्या करना चाहता है?

अब कल्याणी की आँखों में आलस और लापरवाही के चिह्न उतरने लगे। उसने बैरे को खूबसूरत-सा टिप देते हुए कहा, "हमारे लिए 'लंच' ले आओ! और पीने के लिए···!" बैरा चला गया, तो उसने निर्मल के गले में अपनी दोनों बाहें डालकर, उसे चूम लिया। लेकिन, इससे निर्मल के मन में कोई उत्साह नहीं जगा। उसके होंठ बर्फ़ की तरह ठण्डे और निर्जीव बने रहे।

निर्मल का गला छोड़कर, वह रेडियोग्राम के पास चली गई और 'मम्बो'-नाच की एक प्रसिद्ध धुन का एल० पी० रिकार्ड चढ़ाकर, जिप्सी नर्तकियों की तरह चुटकी बजा-बजाकर थिरकने लगी···मगर, निर्मल वहाँ नहीं था। वह अपने गाँव में था और उसकी माँ एक लॉरीवाले के साथ भाग चुकी थी। उसके पास एक कुत्ता था। उसके चाचाजी उसे हर रोज़ घर से निकालने की धमकी देते थे।

किसी भी पुरुष का, अथवा किसी भी स्त्री का प्यार और अपनत्व निर्मल को कभी मिला नहीं। वह पूरा आदमी नहीं हुआ, अधूरा रह गया। उसकी अपनी माँ उसे अधूरा छोड़कर, ड्राइवर की बग़लवाली सीट पर, लॉरी में बैठ गई और सामने के शीशे में बाहर की बड़ी दुनिया को देखती हुई, चली गई। हमेशा के लिए चली गई। औरत के बारे में निर्मल सिर्फ़ इतनी-सी एक बात जानता है कि—

"औरत सहारा नहीं देती है
मगर, चाहती है—

कोई एक छोटा-सा मज़बूत दरख़्त
उसकी बाँहों के नीचे
झुका रहे
हर वक़्त !"

—एमिलि डिकिन्सन

ग्रौर, मर्द के बारे में ? मर्द के बारे में निर्मल इतना भी नहीं जानता है। खुद ग्रपने बारे में भी नहीं। कल्याणी ने कुल एक ही बार कहा, लेकिन, उसने ग्रपनी 'पासबुक' क्यों उसके ग्रागे कर दी ? ग्रपने इस सवाल का कोई उत्तर उसके पास नहीं है···हो सकता है, ग्रपनी सारी जमा-पूँजी कल्याणी के हाथों में थमाकर कोई दूसरी बात साबित करना चाहता था। एक बात यह भी कि वह कल्याणी को मुहब्बत करने लगा है···शायद !

सिर्फ़ इस एक मामले में निर्मल 'इनडिसीसिव' है, निर्णयहीन है। वह मुहब्बत करता है। वह मुहब्बत नहीं करता है···'मम्बो' की धुन पर, बड़ी ही एक बेशरम धुन पर, कल्याणी खुलती हुई, नाच रही है, तालियों की थाप पर ताल दे रही है ग्रौर जैसे कह रही है, 'कोई एक छोटा-सा दरख़्त, मेरी बाँहों के नीचे, झुका रहे···हर वक़्त !'···जब रिकार्ड पूरा बजकर रुक गया, कल्याणी रुक गई। फिर वह निर्मल पद्मावत की बग़ल में ग्राकर बैठ गई। हँसती-मचलती हुई बैठ गई। शायद, वह इस बात से ख़ुश थी कि एक ग्रादमी है। एक ग्रादमी है, जो उसकी बग़ल में बैठा हुग्रा है, जिसने ग्रपने सारे-के-सारे पैसे बैंक से मँगवाकर उसके पाँवों के पास डाल दिए हैं।

ग्रादमी का क्या मतलब होता है ?···ग्रादमी का मतलब होता है, उसकी क्रय-शक्ति ! वह, जो खरीद सकता है, उतना ही शक्तिशाली है। वह, खरीदने की ग्रपनी ताक़त है···इससे ज्यादा कुछ नहीं। यानी, निर्मल पद्मावत का ग्रसली नाम है, कुल बारह सौ पचास डालर, ···ग्रौर ग्रब वह बिना नाम का ग्रादमी हो गया है ! कोई नाम नहीं रह

गया है उसके पास ! अब वह सिर्फ़ एक आदमी है, नामहीन, शक्ति-हीन, वीर्यहीन ! कल्याणी ने सोचा कि अगर वह इस आदमी को अपने कमरे से निकाल दे, भँवें तानकर, खीझभरी आवाज़ में उससे कहे, "बाबू साहब ! अब आप जा सकते हैं ।" तो, निर्मल क्या करेगा ?

...इस होटल के छज्जे से कूदकर आत्महत्या कर लेगा ? शायद, आत्महत्या नहीं करे। शायद, क्रोध और घृणा से पागल होकर उसकी हत्या कर दे । हत्या अथवा आत्महत्या...नहीं, निर्मल पद्मावत इन दोनों पापों में एक भी पाप नहीं कर सकता ।

काफ़ी देर तक अपने विचारों में मचलती हुई, कल्याणी इसी तरह की बात-बेबात सोचती रही । निर्मल की ओर उसने ग़ौर से देखा । उसके चेहरे पर काम, क्रोध, लोभ, मोह कुछ भी नहीं है । अनलिखे स्लेट की तरह, उसके चेहरे पर कालेपन के सिवाय कोई दूसरा रंग नहीं...कोई दूसरा वाक्य, शब्द, अक्षर नहीं ! वह ग़ुस्से में नहीं है । शायद, प्यार में भी नहीं है ।

लेकिन...तब...क्यों ?—बहुत दिनों के बाद आज फिर एक बार वही सवाल कल्याणी को परेशान करने लगा । निर्मल क्या चाहता है ? किसी ऊँचे 'स्टैच्यू' की तरह ऊंचे और चौड़े हैं उसके कन्धे !...उसके बाएँ कन्धे पर हाथ डालकर, कल्याणी ने पूछा, "अब ?"

"अब कुछ नहीं !" कवियों की भाषा में निर्मल ने उत्तर दिया ।

"अब क्या किया जाए ?"

"......!"

"कहीं बाहर चलोगे ?"

"चलूंगा ।"

"अगर तुम्हारा मन हो, तो आज की शाम हम यहीं बिता सकते हैं !"

"......?"

"क्या मन है तुम्हारा ?...बताओ न, क्या चाहते हो ? किसी 'पब'

में चलोगे ?…कहीं तुम अब पछता तो नहीं रहे ? रुपये मैंने लिये हैं, क्योंकि मुझे रुपयों की सख्त ज़रूरत है। कभी रुपये आये, तो तुम्हारे ये एक हज़ार दो सौ पचास डालर मैं ज़रूर लौटा दूंगी ! मगर रुपये आएँगे, तभी !"

"रुपये वापस करने की ज़रूरत नहीं है !"

"क्यों जरूरत नहीं ?"

"मैं कर्ज़ नहीं लगाता हूँ, और न ही दी हुई चीज़ को वापस लेता हूँ।"

"…लेकिन, तब…तब ?"

"तब कुछ नहीं !"

"……?"

"……"

"तुम क्या चाहते हो ?"

"पता नहीं !"

निर्मल पद्मावत ने बड़ी ही सादगी से कह दिया, 'पता नहीं' और कल्याणी की ओर, उसकी आँखों में देखना शुरू किया, इतनी देर बाद ! कल्याणी गम्भीर हो गई। किसी गहरे सोच में पड़ गई। निर्मल उससे ज़्यादा 'कल्चर्ड', ज़्यादा शिष्ट है, इसीलिए कहता है, 'पता नहीं !' उसे पता ज़रूर है। उसे प्रताप से और सरदार निहालसिंह से, और सारे जहान के सारे लोगों से ज़्यादा पता है कि वह क्या चाहता है…खासकर, कल्याणी से क्या चाहता है।

लेकिन, यह आदमी नाटक कर रहा है—अपनी 'इच्छा' को छिपाकर दूसरों की इच्छाओं को नंगा और बेपर्दा कर लेने का नाटक। अपने मोटे और बेहद लाल होंठ सिकोड़कर, कल्याणी मुसकराने लगी। उसकी मुसकराहट एक अनोखे व्यंग्य से भरी हुई थी।

इस व्यंग्य-भंगिमा को निर्मल पद्मावत बर्दाश्त नहीं कर सका। वह खुलने लगा, जैसे चोट खाये हुए साँप की कुण्डलियाँ खुलती हैं। उसने

पूछा, "मैं क्या चाहता हूँ, यह तुम अच्छी तरह जानती हो, कल्याणी! फिर पूछ क्यों रही हो?"

"यों ही पूछती हूँ।"

"यों ही क्यों?"

"इसलिए कि तुम्हारे मुँह से वह बात सुन लेना मुझे बड़ा अच्छा लगेगा...निर्मल, तुम मेरे अपने देश के आदमी हो। अपनी ज़बान में बोलोगे। यहाँ मेरा अमरीकनों से ही नहीं, चाइनीज़ और अफ्रीकनों से भी वास्ता पड़ता है! सभी मुझे 'ह्वाइट इंडियन लेडी' कहते हैं और मेरा उजलापन चूस डालना चाहते हैं। तुम मेरे अपने देश के हो, चूसोगे नहीं, कोमल हाथों से मेरे ज़ख़्म सहलाओगे, मेरे दर्दों पर मरहम लगाओगे..."

निर्मल कल्याणी की बातें समझने लगा। वह इतना 'व्यंग्य' नहीं चाहता था। चाहता था, केवल प्यार! वह कल्याणी को चाहता था। अपने अज्ञान में, वह कल्याणी के चतुर्दिक् ऐसा घर-परिवार बसाना चाहता था, जिसे उसकी माँ या कराची के पुलिसवाले या सरकारी जेलखाने या सोने-चाँदी और काग़ज़ के सिक्के तोड़ नहीं सकें। निर्मल चाहता था, केवल प्यार! मगर, कल्याणी प्यार से बहुत अधिक देना चाहती है, यह सोचकर निर्मल एक नई ख़्वाहिश में गिरफ़्तार होने लगा। और डरने लगा। पता नहीं, क्या होगा? कैसे होगा? और, किसलिए?

निर्मल पद्मावत का मन काँपने लगा, जैसे सोई हुई नदी में बड़ी-सी चट्टान फेंकी गयी हो। लहरों के वृत्त बनते हैं। वृत्त बड़े बनते हैं। वृत्त टूटते जाते हैं और जल की सतह पर खलबली मचती है।

वह एपार्टमेंट की खिड़की से बाहर देखने लगा। ट्रैफ़िक के सिगनल और कारों की कतारों के बाद कतारें। फुटपाथों पर तेज़ भागते हुए लोग। किसी दूर देश से भागकर न्यूयार्क आये हुए हर औसत आदमी की तरह निर्मल भी अपनी किस्मत बदलना चाहता है। मकान, दफ़्तर, मोटरकारें, बैंक-एकाउण्ट कल्याणी-जैसी एक औरत, और इस औरत के

बच्चे—उसके अपने हों, निर्मल भी चाहता है। मगर, कल्याणी कहती है, "मुझसे जो ले सकते हो, माँग लो ! मैं कुछ भी दे सकती हूँ..."

"चलो, बाहर चलते हैं। किसी रेस्तराँ में बैठेंगे। या कोई फ़िल्म देखेंगे। आज मेरी छुट्टी है। चलो, यहाँ बड़ी गरमी है !"

"मुझे तो गर्मी ही चाहिए ! देखते नहीं, हीटर जला रखा है... ज़रा शाम ढल जाए, फिर बाहर चलेंगे।"

"यहाँ अच्छा नहीं लगता ! कहीं दूसरी जगह चलो। यहाँ मेरा दम घुट रहा है।"

"तुम इतने अमीर नहीं हुए हो निर्मल कि इतने महँगे फ़्लैट में तुम्हारा दम घुट जाए !" कल्याणी खिलखिलाकर हँस पड़ी और निर्मल पद्मावत को उत्तेजित करने के लिए बड़ी पुरानी 'नायिका'-अदा से अँगड़ाई लेने लगी।

निर्मल उठकर खड़ा हो गया। उसने कल्याणी से बिना पूछे ही दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया। हैंडिल घुमाते ही ताला अन्दर से बन्द हो गया। कल्याणी अपनी अदा में मुसकराती रही—इसकी क्या ज़रूरत थी ? पर्दे के पीछे क्या होता है, यहाँ कोई झाँककर नहीं देखता। सभी जानते हैं। समझते हैं। कोई देखना नहीं चाहता..."दरवाज़ा खुला ही रहने देते..."

कल्याणी के स्वर में जलते हुए माँस की गन्ध थी। माँस की या जलती हुई रबर की गन्ध। निर्मल को उबकाई आने लगी। बेहद गरमी थी। हीटर जल रहा था। खिड़की खुली थीं। फिर भी, कमरे में... धुँधलापन। हर चीज़ पर मद्धिम रोशनी की पीली परतें चढ़ गईं। जैसे, निर्मल ने अफ़ीम खा ली हो। जैसे, कल्याणी के गले में नक़ली हीरों का हार न हो, असली साँप हो। फन काढ़ता हुआ नीला साँप...

अचानक जैसे कोई खास बात याद आ गयी हो, निर्मल ने कहा, "मेरी तबीयत अच्छी नहीं है, कल्याणी ! मेरा सिर फटा जा रहा है !" कल्याणी के कमरे में आने के पहले उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था।

कमरे में ग्राकर वह सिरदर्द भूल गया था। कल्याणी का भरा-पूरा शरीर ग्रौर शरीर के ग्रंग-ग्रंग पर फैली हुई, लहराती हुई प्यास को देखकर सब-कुछ भूल गया था।

"क्यों, क्या हुग्रा ? बुखार तो नहीं है ?" कल्याणी ने सोचा, सहानुभूति दिखाना ज़रूरी है। निर्मल भावुक ग्रादमी है (ज़रूर है!) प्यार के दो शब्द नहीं कहे जाएँ, तो ग्रब भी उल्टे पाँवों वापस लौट जाएगा। इसलिए बोली, "तुम बिस्तरे पर लेट जाग्रो, मैं सिर ग्रौर गले में दवा मल देती हूँ। तुरन्त ग्राराम महसूस होगा।"

"नहीं, यह ग्रभी की बात नहीं है। काफ़ी ग्ररसे से मेरी तबीयत ठीक नहीं है। बुखार नहीं रहता। सिरदर्द भी नहीं। फिर भी लगता है, मैं बीमार हूँ। रात में नींद नहीं ग्राती। पड़ा-पड़ा किताबें पढ़ता रहता हूँ। कल रात दो बजे मैंने तुम्हें फ़ोन किया था। देर तक घंटी बजती रही। कोई जवाब नहीं मिला। शायद तुम कहीं बाहर थीं। तुम होतीं तो मैं तुम्हारे पास चला ग्राता…"

"मैं यहीं थी। मैंने फ़ोन उठाया नहीं। रात में कोई फ़ोन करता है, तो मैं जवाब नहीं देती। डर लगता है। कुछ शोहदे मेरे पीछे पड़े हैं। कई लोगों के पैसे भी बाक़ी हैं। लोग यों भी तंग करना चाहते हैं—" कल्याणी ने शान्त स्वर में कहा। फिर, स्वेटर उतारकर ग्रालमीरे में रखने लगी। इसी में वह ग्रपना सारा सामान रखती है। ज्यादा सामान है भी नहीं। चन्द कपड़े हैं, मेडिकल-साइन्स की चन्द किताबें। छोटा-सा ट्रांजिस्टर-सेट है। एक क़ीमती कैमरा भी है। ग्रौर, प्रसाधन की चीज़ें हैं। ग्राम-तौर पर वह मेकग्रप नहीं करती। भारी मेकग्रप करनेवाली ग्रमरीकी लड़कियों की महफ़िलों में वह सौन्दर्य ग्रौर पवित्रता की देवी-जैसी दीखती है। मेकग्रप नहीं करना ही उसका जादू है। वह ग्रपने जादू की क़ीमत जानती है। कल्याणी जानती है, निर्मल का सिर क्यों फटा जा रहा है।

"चलो, बिस्तरे में लेट जाग्रो…ग्राग्रो, शरमाने की बात नहीं है। मैं सिर दबा देती हूँ।" कल्याणी ने उसका हाथ पकड़कर खींच लिया।

बिस्तरे पर ले गई। खुद बाथरूम में चली गई। एक किनारे सिमटकर बैठा हुआ निर्मल सिर झुकाए रहा।

उसे नशा आ गया था। आँखें जल रही थीं। लगता था, उसकी सारी नसें एक साथ फट जाएँगी। खून के छींटों से भर जाएगी उसकी देह। उसके पाँव पत्थर बने जा रहे हैं। उसकी बाँहें बर्फ़! वह किसी भट्ठी में बिठा दिया गया है। निर्मल पद्मावत ने अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहा। खड़ा नहीं हो सका। पाँव जम गए हैं। बाँहें जम गई हैं। पूरा शरीर बर्फ़ की चट्टान बन गया है। चट्टान धीरे-धीरे पिघली जा रही है।

...कल्याणी बाथरूम से बाहर निकल आई। निर्मल पद्मावत ने देखा, नंगे-नंगे दो पाँव। गोरे पाँव। सुडौल माँसपेशियाँ। भरे हुए टखने। घुटनों की गोल पट्टी। जाँघों पर पीली आभा और हरी-नीली नसें। नज़रें ऊपर उठाने का साहस उसे नहीं हुआ।

कल्याणी पास आकर बोली, "अपने कपड़े हैंगर पर लटका दो, नहीं तो क्रीज़ टूट जाएगी। और, ज़रा उठो, मैं दूसरी चादर बिछाती हूँ।"

निर्मल चुपचाप उठ खड़ा हुआ। आलमीरे के पास चला गया। कल्याणी सिरहाने से एक लाल रंग की चादर निकालकर बिछाने लगी। आलमीरे के शीशे में, निर्मल को उसकी झुकी हुई छाया दीख पड़ी। कल्याणी की पीठ चौड़ी है। कमर के नीचे का पिछला हिस्सा बहुत चौड़ा है। वह बिस्तरे पर झुकी है। सिर घुमाकर कह रही है, "क्यों देर करते हो? आ जाओ न!"

निर्मल ने पहले बुशशर्ट उतारी। खाली हैंगर ढूँढने लगा। हैंगरों पर कल्याणी के कपड़े टंगे हैं। तह की हुई साड़ियाँ, ब्लाउज़, चोलियाँ। रंगीन स्कर्ट। रंगीन स्कार्फ़। नाच के वक़्त पहने जानेवाले फ्रॉक, पेटीकोट, अंडरवियर, रबर के कप, स्तनों को ढँके रहने वाली ब्रेसरी। एक भी हैंगर खाली नहीं है।

कल्याणी चादर बिछा चुकी है और बिस्तरे पर लेटी हुई निर्मल का इन्तजार कर रही है, "हैंगर नहीं है, तो किवाड़ पर कपड़े डाल दो।

मैं बाद में आयरन कर दूँगी···"

और···तब, निर्मल पद्मावत ने देखा, साड़ियों, पेटीकोटों और स्कर्टों की कतारों के पीछे, आलमीरे की दीवार से लगा एक नरकंकाल झूल रहा है। सिर का हिस्सा नहीं है। सिर्फ़ बाँहों, टाँगों और फेफड़ों की हड्डियों का जाल है। सिर नहीं है। चमड़ा नहीं है। माँसपेशियाँ नहीं हैं, सिर्फ़ हड्डियाँ हैं—आदमी के शरीर का फ्रेम है। आदमी नहीं है।

निर्मल चीखा तो नहीं, मगर थरथरा उठा। फिर उसे याद आया, कल्याणी मेडिकल की स्टूडेन्ट थी। मगर उसका डर कम नहीं हुआ··· कल्याणी औरत नहीं है, राक्षसी है। कपड़ों के पीछे नरकंकाल रखकर, इस कमरे में रहती है। फिर भी वह अपने कपड़े उतारने लगा। निर्मल का यही चरित्र है। पहले वह डर जाता है। फिर डर को भूलने की कोशिश करता है। अपने-आप पर नाराज़ होता है। दूसरों से बदला लेना चाहता है। अपनी नाराज़गी और अपने डर का बदला···

"अलमारी में यह क्या टाँग रखा है तुमने?"

"पहनने के कपड़े हैं।"

"सिर्फ़ कपड़े नहीं हैं, एक नरकंकाल भी है। कहाँ से उठा लाई हो? अब तो मेडिकल में नहीं हो। इसे रखने से फ़ायदा?"

"ओ हो···फ़ायदा क्यों नहीं? नरकंकाल ही सही, एक नर का साथ तो रहता है।" बिस्तरे के पास आ गये हुए निर्मल पद्मावत को पास खींचती हुई, कल्याणी ने हँसकर कहा। कल्याणी के होंठ सूख रहे थे। गले के नीचे पसीना आने लगा था। पसीना और आलस। आलस, नशा और बेहद गरमी! नसों में।

गर्मी से निर्मल भी परेशान हो रहा था···कल्याणी के हाथों की मज़बूत पकड़ ने उसे आग का जलता हुआ पिंड बना दिया। वह रुका हुआ, लेकिन, खड़ा ही रहा। कपड़ों की कतारों के बीच से नरकंकाल झाँक रहा है। सिर नहीं है। माँसपेशियाँ नहीं हैं। सिर्फ़ हड्डियाँ हैं। बिस्तरे में नंगी पड़ी है कल्याणी, जिसके पास सिर्फ़ माँसपिंड हैं। शायद कहीं

एक भी हड्डी नहीं है।

आदमी को माँसपिंड अपनी तरफ़ खींचता है। माँसपिंडों की गरमी खींचती है। लहू खींचता है। आदमी जानवर है। माँसपिंडों को नोच डालना चाहता है।

निर्मल पद्मावत भेड़िए के भूखे बच्चे की तरह बिस्तरे में कूद पड़ा। जलती हुई भट्टी में। कल्याणी उसे थामती हुई हँसने-खिलखिलाने लगी, अपने को बचाती हुई। करवटें फेरने लगी। निर्मल को महसूस होने लगा, कल्याणी उससे बहुत ज़्यादा ताक़तवर है! कल्याणी दोनों बाँहों से पलंग की दोनों पट्टियाँ थामे, मुँह के बल लेटी है और हँसती जा रही है। निर्मल उसे अपनी ओर खींच नहीं सकेगा। उसने कोशिश की, थक गया। कल्याणी की पीठ पर झुका हुआ निर्मल बेहद थक गया। कल्याणी खिलखिलाती हुई बोली, "बस, इसी ताक़त पर दुनिया जीतने चले थे...?"

दो-तीन मिनट बाद कल्याणी ने पट्टियाँ छोड़ दीं और अचानक उसकी निगाहें घुटनों के बल उठते हुए निर्मल की ओर गईं। निर्मल बर्फ़ के टुकड़े की तरह ठण्डा हो चुका था। मर चुका था...आँखों के अंगारे बुझ चुके थे।

"तुम यही आदमी हो? काले पत्थरों के पहाड़ की तरह दीखते हो! मगर, इतने-से आदमी हो? बस...! इसी के लिए...इतने ही के लिए मेरे पास आये थे?...छिः, छिः, मुझे बताया क्यों नहीं? पहले क्यों नहीं बता दिया?" कल्याणी चीख़ने लगी। बिस्तरे में लेटी हुई, हाथ-पाँव पटकने लगी।

निर्मल नीचे उतर आया। अपने कपड़े पहनने लगा। सिर झुकाये हुए। अपमानित। कल्याणी गरजती रही, "फिर कभी इधर नहीं आना, निर्मल!...तुम आदमी नहीं हो, नरक के कीड़े हो!...मत आना कभी!"

"मैं अब जाऊँगा!" निर्मल पद्मावत ने कुल एक वाक्य कहा। मगर, अपनी जगह से वह हिला नहीं। पैंट और कमीज़ वह पहन चुका था...कल्याणी दोनों पाँव बिस्तरे से लटकाकर बैठ गई। अपने गले

से नक़ली हीरों का हार उतारकर, उसने निर्मल के पाँवों के पास फेंक दिया। हार टूटा नहीं, फ़र्श पर बिखर गया।

कल्याणी बोली, "अपना यह नेकलेस भी लेते जाओ !···कभी शादी करना, तो अपनी बीवी को पहनाओगे !" कई दिन हो गये, निर्मल ने पूरे पचीस डॉलर में खरीदकर यह नेकलेस कल्याणी को पहनाया था। पहनकर बहुत खुश हुई थी कल्याणी।

···निर्मल नेकलेस अपनी जेब में डालकर, नीचे उतर आया। मगर, कल्याणी की चीख-पुकार उसका पीछा करती रही। उसकी जाँघ में गड़ता रहा, पेंट की जेब में पड़ा हुआ नेकलेस।

निर्मल फिर किसी दिन 'संग्रीला'-होटल के उस फ़्लैट में नहीं गया। फिर किसी दिन वह कल्याणी से मिला नहीं।···कल्याणी ने डॉक्टर रघुवंश से शादी कर ली···कल्याणी अपने देश लौट गयी··· कल्याणी मर गई। जहाँ ये दोनों काल्पनिक और अस्वाभाविक व्यक्ति दो रास्तों से चलकर एक ही जगह आ सकें, ऐसा कोई चौराहा नहीं रह गया···

७

कॉफ़ी की ट्रे हाथों में उठाये, प्रिया खुद ही आई। डॉक्टर ने खुश होते हुए कहा, "यू आर द लकी मैन, निर्मल ! तुम खुशकिस्मत हो। प्रिया ने अपने हाथ से तुम्हारे लिए कॉफ़ी बनायी है···वैसे यह लड़की किसी की परवाह नहीं करती। मेरी भी नहीं। माँ इसकी बचपन में ही चली गई।"

प्रिया कपड़े बदलकर आई थी। गहरे पीले रंग की साड़ी बंगाल-हैंडलूम की। कानों में नीलम के बुन्दे ! जान-बूझकर चेहरे पर बिखेर ली गई लटें। और भोलापन !···प्रिया के मुखड़े पर सिर्फ़ भोलापन, और सिर्फ़ चंचलता···

और आँखों में ऐसा भाव कि जंगल की एक हिरनी शहर में लाकर छोड़ दी गई है। मगर प्रिया जंगल की नहीं, शहर की हिरनी थी।

उसने कहा, "निर्मल साहब, मैंने 'कल्याणी-मेन्शन' देखा है। कभी ऊपर नहीं गई। मेरी माँ का नाम कल्याणी था। जितनी ऊँची आपकी बिल्डिंग है, उतनी ही ऊँची मेरी माँ भी थी।"

निर्मल उदास हो गया। कल्याणी···'कल्याणी-मेन्शन'···अतीत···स्मृतियाँ···वर्तमान···प्रिया···प्रिया···प्रिया···निर्मल के समूचे जीवन से सारी ख़ुशी ख़त्म हो गई। हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। अतीत को वर्तमान और वर्तमान को अतीत बनाया नहीं जा सकता। निर्मल उदास हो गया···वह ज़ाहिर नहीं होने देता है। उसकी पीड़ा या उसकी प्रसन्नता कभी उसके चेहरे पर प्रकट नहीं होती। चेहरे पर नक़ाब चढ़ाए रहता है। लापरवाही की नक़ाब और नीली सादगी की नक़ाब !

उदासी उसकी आदत हो गई है। उदासी और ख़ामोशी। तटस्थता। सबलस-शक्त तटस्थता। पद्मावती नदी के किनारे बसा हुआ अपना छोटा-सा गाँव छोड़कर निर्मल बाहर की अजनबी दुनिया में चला आया था, और उदासी आदत बन गई थी। उदासी और परिश्रम। चौबीस घंटे चलते रहने वाले ऑटोमेटिक मशीन का परिश्रम। लोग कहते थे, निर्मल पैसों के पीछे पागल है। कहते थे, 'न्यूरोसिस' का मरीज़ है। निर्मल पद्मावत ने अपने पागलपन की, अपने मर्ज़ की, अपने इर्द-गिर्द के लोगों की परवाह नहीं की। वह करता रहा, जो कुछ उसने तय किया था। वह चारों ओर की दुनिया को जानता-समझता रहा। वह अपने दिमाग़ को एक नंगी तलवार बनाता रहा, तेज़ तलवार, जो अँधेरे की हर परत को काटती हुई, रोशनी के सारे टुकड़े उसके क़दमों पर बिखेर दे।

परिश्रम और प्रतिभा आप-ही-आप आदमी को अकेला बना देती है। उसे दूसरों का साथ करने का अवकाश नहीं देती। इतना समय भी नहीं कि वह दूसरों के आलस्य, आराम, शौक, भावुकताओं का हिस्सेदार बन सके। परिश्रम आदमी को भीड़ बनने, और प्रतिभा भीड़ में खो जाने की इजाज़त नहीं देती।

निर्मल ने एकान्त को अपना आवरण बनाया। दोस्ती नहीं, आराम नहीं, फ़ुरसत नहीं। प्रिन्सेस स्ट्रीट पर एक ऊँचे 'स्काई-स्क्रैपर' के सिवाय कुछ भी नहीं ! जीवन एक निर्णीत पथ है, एक प्रतिश्रुति···एक गतिबद्ध यात्रा···एक निश्चित योजना है जीवन। इस योजना में एक बार व्यतिक्रम हुई थी, कल्याणी !बाद में, वह भी नहीं रही। लेकिन धूप में चमकते हुए बादल के उजले टुकड़े की तरह दीखती हुई यह लड़की—प्रिया ? नहीं, प्रिया भी नहीं !

तब निर्मल को लगा, यह लड़की प्रिया नहीं है। कानों में जगमगाते हुए नीलम के टुकड़े पहने हुए यह लड़की प्रिया नहीं है। कल्याणी है !··· अपरिचित फूलों की गन्ध, अनजानी कहानियों का रूमान, अजनबी आँखों की चमक, और कल्याणी !

कल्याणी देर तक चीखती रही थी, "बस, इसी ताक़त पर ?··· इतने ही के लिए···बस इतने ही के लिए ?"

पद्मावत सोचता है। कई बरसों के बाद एक बार फिर वह सोचता है कि कल्काणी को पराजित करेगा। नीचा दिखाएगा। पार्क स्ट्रीट सीमेट्री में सोई हुई कल्याणी को। वह पागल होने लगता है। ज़ाहिर नहीं होने देता। उदास रहता है। चुपचाप। खामोशी उसका नक़ाब है।

निर्मल समझ रहा था कि सामने प्रिया खड़ी है और कल्याणी पिछले ग्यारह वर्षों से पार्क स्ट्रीट में सो रही है। लेकिन प्रिया कल्याणी थी। वही गन्ध, वही लय, वही चमक, वही रूमान और बड़े शहर के भीड़-भरे चौराहे पर अकेली, खुली छोड़ दी गई हिरनी का भाव। प्रिया नहीं है, कल्याणी है।

वह आतंकित हो गया। उसके दिमाग़ में यह मरणान्तक भ्रम, यह अस्तित्व-घातक 'इल्यूज़न' कैसे पैदा हो रहा है? वह इस भ्रम से मुक्ति नहीं पा सकेगा।

उसने आँखें बन्द कर लीं। उसके चेहरे की सारी रोशनी ग़ायब हो गई। कमरा बहुत धुँधला-धुँधला हो रहा था। निर्मल बेहद बदसूरत और उम्रदराज़ दीखने लगा। मगर प्रिया ने दोबारा पूछा, तो उसने कहा, "जब चलना चाहो, ले जाऊँगा। कल्याणी-मेन्शन तुम्हारा अपना घर है। मैंने तो चाहा था, तुम्हारे पापा वहीं चलकर रहें। अपना एक नर्सिग-होम बनाएँ। ये किसी तरह राज़ी नहीं हुए···"

डॉक्टर रघुवंश कॉफ़ी का पहला घूंट पीकर ही खाँसने लगे। कॉफ़ी बहुत काली है। शायद, दूध डाला ही नहीं गया। आँखों से आँसू छलक आये। खाँसी का दौर बढ़ता गया। दम फूलगया। सिगरेट का टुकड़ा, उँगलियों से छूटकर, 'मोएज़िक' फ़र्श पर फिसलता-तैरता रहा। फिर निर्मल ने उसे जूते से मसल दिया। सिगरेट का एक बेकार टुकड़ा। आग की एक बेज़रूरत चिनगारी···

"निर्मल भाई, कभी भाभी को यहाँ लाइए न! मैं सोसाइटी-मैगज़ीनों में उनकी तसवीरें देखती रहती हूँ। उनसे मिलवाइए कभी···मेरा एक काम हो जाएगा। कॉलेज की लाइब्रेरी के लिए हम लोग एक 'वेराइटी-शो' कर रहे हैं। मिसेज़ पद्मावत से उद्घाटन करवाएँगे···" प्रिया इतना कहकर मुसकराई। प्रिया की मुसकराहट को अनदेखा कर जाने की कोशिश करते हुए, निर्मल को याद आया कि शीरीं उसका इन्तज़ार कर रही होगी। गंगा-जमुनी पलंग के किनारे बेले के मोटे गजरे की तरह ऋजु-आयत वह लेटी हुई होगी। पास की डेक-टेबुल पर 'वारमूथ' की बोतल पड़ी है। नीले शीशे का नन्हा-सा गिलास! शीरीं एक घूँट पीती है। जाँघों के बीच पड़े तकिये को दबाती है···आँखें बन्द किये, मुसकराती और सिहरती रहती है। छत की तरफ़ देखती है। बीच छत में सफ़ेद

श्रौर रंगीन शीशों का बड़ा-सा फ़ानूस झूल रहा है। खुली खिड़कियों से तेज़ हवा आती है। फ़ानूस के छोटे-छोटे बत्तीदानों से टकराती रहती है। शीशों का हल्का संगीत, हल्का जलतरंग, हल्की ध्वनियाँ बड़ी ही तन्द्रिल हैं।

शीरीं सामने की दीवार की तरफ़ देखती है। आधी दीवार बहुत बड़ी एक पेन्टिंग से ढँकी है, पार्श्व में कोई पहाड़ी शहर! हाथरिक्शों पर लदे हुए मर्द। सड़कों के किनारे पत्थरों और पीतलों के गहनों की दूकानें सजाये हुए तिब्बती औरतें। पहाड़ों की बर्फ़ानी चोटियाँ। बर्फ़ पर दौड़ते हुए बच्चे···पार्श्व में एक पहाड़ी शहर है। सामने दो औरतें हैं। एक औरत बेहद गोरी, दूसरी साँवली। दोनों सड़क के किनारे रेलिंग के सहारे खड़ी हैं। एक-दूसरे की ओर बड़े ही अरमान से देख रही हैं। बर्फ़ में डूबे शिखर नहीं, खेलते हुए बच्चे नहीं, खूबसूरती नहीं, मौसम नहीं, नीचे की अथाह घाटी नहीं—वे दोनों औरतें सिर्फ़ एक-दूसरे को देख रही हैं। उनकी दृष्टि में प्यार है, मगर प्यार में शीतलता नहीं है···उत्ताप-ही-उत्ताप!

शीरीं यह उत्ताप देखती रहती है और 'वारमूथ' लेती रहती है। धीरे-धीरे चुस्की लिये जाने की शराब है यह। रम की तरह गले से सीने में और सीने से दिमाग़ में चढ़ नहीं जाती। धीरे-धीरे देह के हर अंग पर असर करती है। मीठा असर। शीरीं मीठे असर वाली चीज़ें पसन्द करती है। उत्ताप उसे प्रिय है, किन्तु, ज्वालामुखी की तरह जलना-पिघलना नहीं, वह लकड़ी के कोयले की तरह धीमे-धीमे सुलगना चाहती है।

शीरीं 'कल्याणी'-मेन्शन की उन्तीसवीं मंज़िल पर रहती है। कुल सात कमरों का फ़्लैट है उसका। और जब चाहती है, टेलीफ़ोन से ख़बर करके तीसवीं मंज़िल की छत पर आ जाती है। निर्मल के बेडरूम में चली आती है। किन्तु, विना सूचित किये नहीं। निर्मल ने एक बार मना कर दिया था। निर्मल स्वयं कल्याणी को शायद ही कभी बुलाता है। बुलाये भी तो कभी-कभी वह ऊपर जाना नहीं चाहती। मयूरपंखी पलंग पर

लेटी हुई, सामने की दीवार पर लगा हुआ यह विशाल चित्र देखती रहना चाहती है। मगर निर्मल पद्मावत बुला रहा है, तो जाना ही होगा।

निर्मल ने कहा, "डॉक्टर, मैं एक खास काम से आया था। कल शाम को 'सिटिज़ेन्स-क्लब' में शीरीं के जन्मदिन की पार्टी है। आपको और प्रिया को आना ही होगा। हमारी शादी के दो साल बीत चुके। आप अब तक शीरीं से मिले नहीं। वह मिलना चाहती है।"

"सिटिज़ेन्स-क्लब में क्यों? तुम अपने यहाँ लोगों को बुला सकते थे?"—डॉक्टर रघुवंश ने पूछा। पद्मावत सवाल का मतलब समझ गया। शीरीं के पूर्व-पति विश्वजीत मेहता उर्फ़, बिशू मेहता अब भी सिटिज़ेन्स-क्लब के सभापति हैं। शीरीं पहले शीरीं मेहता थी। अब दो साल से पद्मावत हो गयी है—प्रेसिडेन्सी-मजिस्ट्रेट की अदालत से तलाक़ का मुक़दमा जीतने के बाद। वैसे मुक़दमा जीतने के छः महीने पहले ही वह निर्मल के साथ रहने चली आई थी। अपनी काली 'कैडिलॅक' गाड़ी में बैठकर, खुद ही गाड़ी चलाती हुई, सदर्न एवेन्यू के मेहता-हाउस के बड़े फ़ाटक से बाहर निकल गई थी। मेहता साहब बरामदे में चुपचाप खड़े थे। इन्तज़ार कर रहे थे कि शीरीं एक बार मुड़कर उनकी ओर ज़रूर देखेगी। उसने देखा नहीं, चली गई। विश्वजीत मेहता जानते थे, वह हमेशा-हमेशा के लिए चली जा रही है। मगर यह नहीं जानते थे कि निर्मल पद्मावत के पास चली जाएगी।

निर्मल ने उन्हें अपमानित किया था···वे अपमान का कोई बदला नहीं ले सके थे। बदला लेने की ताक़त उनमें थी, मगर वे भयभीत हो गए थे। निर्मल आदमी नहीं, भयंकर राक्षस है! यह आदमी नहीं है—महाकवि गोएथे का 'मेफिस्टो' है···शेक्सपियर का 'ओथेलो'··· एमिलि ब्रांटे का 'हेथक्लिफ़'···यह आदमी शैतान है!

शीरीं मेहता अपने पति का अपमान सह नहीं सकी थी। वह सीधी निर्मल पद्मावत के पास चली गई। कल्याणी-मेन्शन की लिफ़्ट पर

चढ़ी और लिफ़्टमैन द्वारा रोके जाने के बावजूद तीसवीं मंज़िल की छत पर आ गई।

किन्तु छत पर आकर आतंकित हो गई, शीरीं मेहता! रात के अँधेरे में सोए समुद्र की तरह कल्याणी-मेन्शन की लम्बी छत नींद में है। कोई आवाज़ नहीं, शब्द नहीं, गूँज नहीं। मौत का सन्नाटा···

एक किनारे बना हुआ है, निर्मल का फ़्लैट। दरवाज़े के पास अल्सेशियन कुत्तों का जोड़ा, लोहे की मज़बूत जंजीर में बँधा है। शीरीं को देखकर भी भूँकते नहीं। चुपचाप बैठे हैं, दोनों कुत्ते। खिड़कियों के मोटे स्टील-गिलास से भीतर की हल्की रोशनी दीखती है। और कुछ नहीं दीखता। खिड़कियाँ बन्द हैं। दरवाज़े बन्द हैं।

रात के आठ बज रहे थे। लिफ़्टमैन लिफ़्ट के साथ नीचे लौट चुका था। जाते वक़्त शिकायत के स्वर में कह गया था, "आज मेरी नौकरी चली जाएगी, मेम साहब! मालिक से बिना पूछे मैं आपको ऊपर ले आया हूँ।"

शीरीं मेहता सूनी छत की इस अथाह खामोशी से डरने लगी। फिर सीधी दौड़ती हुई छत के दूसरे किनारे चली गई। जैसे वह छत की लम्बाई छूना-देखना चाहती हो। इतनी बड़ी छत, इतनी लम्बी-चौड़ी, कि आसानी से फुटबाल-मैच के लिए स्टेडियम बनाया जा सकता था।

शीरीं छत के किनारे चली गई। कमर तक उठी हुई दीवार पर दोनों हाथ फैलाकर नीचे देखने लगी। आदमी जितना ऊपर चढ़ता है, नीचे की ज़मीन को उतना ही भूलना चाहता है, क्योंकि नीचे देखने पर उसे डर लगता है। नीचे गिर जाने का डर! मगर तीस मंज़िलों की ऊँचाई पर खड़ी होकर, शीरीं मेहता नीचे देखने लगी, तो उसका सारा डर मिट गया। उसने देखा—नीचे समूचा शहर है। नीचे सारी रोशनी है। नीचे मेहता-हाउस है; और बरामदे में टहलते हुए बिशू मेहता उसका इन्तज़ार कर रहे हैं।

शीरीं को इन्तज़ार से नफ़रत है। वह ख़ुद किसी का इन्तज़ार नहीं करना चाहती। जो कुछ चाहती है, तत्काल चाहती है, उसी क्षण ! क्षण बीत जाने पर उसकी चाह मिट जाती है। रह जाती है, घृणा !

उसने ग्राँखें ऊपर उठाकर देखा। ग्रासमान में बादल नहीं हैं, छोटे-छोटे तारे जगमगा रहे हैं। शीरीं को लगा, चाँद यहाँ ज़्यादा दूर नहीं है। हवा यहाँ तेज़ ग्राँधी बन गई है। ज़रा उछलते ही चाँद को पकड़ लिया जा सकता है। मगर चाँद नहीं है। ग्रँधेरी रात है। ग्राज चाँद नहीं उगेगा ?

लिफ़्टमैन ने नीचे जाकर निर्मल के प्राइवेट सेक्रेटरी धनवन्तलाल से कहा। धनवन्तलाल ने तुरन्त निर्मल को फ़ोन किया। एक मेम साहब ऊपर चली गई हैं, लिफ़्टमैन ने बहुत रोका, मगर उसे धक्का देकर ख़ुद ही लिफ़्ट चलाने लगीं। हाथापाई करने की हिम्मत बेचारे को नहीं हुई। किसी 'बड़े' परिवार की महिला दीखती हैं। शायद पी रखी है। हुक्म दिया जाए, तो दरबान को ऊपर भेजकर···

"रहने दो !···शीरीं मेहता होगी। मेहता-इण्डस्ट्रीज़ के मालिक की बीवी ! तुम बिशू मेहता को फ़ोन कर दो कि शीरीं मेरे यहाँ ग्रा गई हैं। वे कोई फ़िक्र नहीं करें। मैं समझा-बुझाकर उन्हें वापस भेज दूंगा।" निर्मल ने ज़रा भी ग्रस्त-व्यस्त हुए बिना, धनवन्तलाल से इतनी बातें कहीं। फिर वह ग्रपनी कम्पनी का बैलेन्स-शीट देखने में खो गया। ग्रॉडिट का हिसाब पूरा हो चुका है। ग्राखिरी बार जाँच कर लेना ज़रूरी है···एक पैसे का भी फ़र्क नहीं होना चाहिए।

तीन-चार दफ़ा बैलेन्स-शीट पढ़ जाने के बाद, निर्मल ने सारे कागज़ात ड्रॉग्रर में सँभालकर रख दिए। थकान से भरी हुई ग्रँगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुग्रा। कुर्सी की बाँह से ग्रोवरकोट उठाकर पहन लिया··· छड़ी लेकर बाहर ग्रा गया।

शीरीं मेहता छत के किनारे खड़ी है। उसके इर्द-गिर्द फैला हुआ है कोहरे का जाल ! वह डूब चुकी है।

निमल पद्मावत छत पर फैले अँधेरे में डूबी हुई शीरीं को देखता हुआ, एक कोने में बने अपने कॉटेज के सामने खड़ा था। दोनों कुत्ते 'एलर्ट' हो चुके थे। जब तक बँधे रहते हैं, ये कुत्ते बहुत शान्त रहते हैं···खुलते ही पागल होते हैं। पालतू नहीं रहते। जंगली जानवर बन जाते हैं, फिर भी निर्मल से डरते हैं। सिर्फ़, निर्मल से।

दूर छत के किनारे खड़ी औरत शीरीं मेहता नहीं है। कल्याणी है। शीरीं नहीं, कल्याणी। बचपन से ही कलेजे में तीर की तरह चुभा हुआ, एक सपना। तीर निकाला गया, तो प्राण भी साथ ही निकल आएँगे। कल्याणी ने 'संग्रीला' होटल के बरामदे में निर्मल से कहा था, "बस, यहीं तक ! इससे आगे मोटर कारें जा सकती हैं, ऊँची बिल्डिगें जा सकती हैं, बैंक एकाउंट जा सकते हैं, सोने की ईंटें और हीरों के टुकड़े जा सकते हैं। निर्मल पद्मावत नहीं जा सकता। यह कल्याणी का फ़्लैट है, मैनहट्टन की नीग्रो-औरतों का 'ब्रोथेल-हाउस' नहीं है···"

निर्मल लौट आया था। फिर कभी वहाँ वापस नहीं गया। अपने सपने को सीने की आख़िरी धड़कनों में छिपाये हुए ख़ामोश रहा। चुपचाप, भीड़-भरी सड़कों पर अकेला चलता रहा। दस-ग्यारह साल का काला-कलूटा, बदसूरत और बीमार लड़का निर्मल, जिसकी माँ घर बेचकर एक लॉरीवाले के साथ चली गई थी।

यह लड़का बैंकों, संस्कृतियों, कम्पनियों, सभ्यताओं, इन्कमटैक्स, प्रजातन्त्र, धर्म और दिन-रात धुआँ उगलने और ज़हर फैलाने वाली फैक्टरियों की दुनिया में अजनबी था। सरकस से पकड़लाये गए हाथी के बच्चे की तरह अजनबी। नेपाल के किसी पहाड़ से उतरकर, गुरखा-पलटन में भरती होकर, सरकस वाले गोरखाली नवयुवक की तरह अजनबी। इसी का बच्चा रिंग-मास्टर की चाबुक के डर से तिपाई पर

चारों पाँव रखकर खड़ा होता है, सूँड उठाकर तमाशबीनों को सलाम करता है।

गोरखाली नौजवान रोटी, शराब और पहाड़ों में रोती हुई, इन्तज़ार करती हुई, अपनी अन्धी माँ के लिए कन्धे पर राइफ़ल रखता है। जर्मनी में या फ्रांस या कोरिया या जापान में बमबारी में, या गोरिल्ला-युद्ध में, मैदान में या हॉस्पिटल में—मर जाता है। मिलिटरी गज़ट में सूचना छपती है, 'लैन्स-नायक रणबहादुर थापा या हवलदार खड्गमान सिंह, गुरखा-राइफ़ल्स, नम्बर तीन हज़ार सात सौ अठारह, या चार हज़ार एक सौ बाइस, इम्फाल या कश्मीर या लियोपॉल्डविले या एमस्टर्डम के मोर्चे पर लड़ते हुए खेत रहा।' जिस पहाड़ पर रणबहादुर थापा या खड्गमानसिंह की माँ रहती है, वहाँ मिलिटरी गज़ट कोई नहीं पढ़ता। किसे याद रहता है, कि हाथी का बच्चा किस जंगल से फँसाकर लाया गया? किसी को याद नहीं रहता। कौन मारा गया? कौन रात-दिन घुल-घुलकर मर रहा है? किसी को याद नहीं रहता। पता भी नहीं चलता। लोग मरते हैं। मरते जाते हैं। जिन्हें अपने जीने, और अपने जिये जाने के सबूतों का प्रचार करना नहीं आता—कोई उनकी याद नहीं रखता है। याद रखने से हमारा क्या फ़ायदा? इस लम्बे जुलूस में कौन कहाँ छूट गया; कौन कहाँ पाँव घसीट रहा है; क्यों याद किया जाए? जुलूस चलता रहेगा। लोग शामिल होंगे, साथ चलेंगे··· पीछे छूट जाएँगे।

निर्मल पद्मावत ने तिपाई पर पाँव नहीं रखा। कन्धे पर राइफ़ल नहीं रखी। तमाशबीनों को सलाम नहीं किया। जुलूस में शामिल नहीं हुआ। वह मर नहीं गया। वह ज़िन्दा रहा। उसने अपने जिए जाने का सबूत दिया···वह अजनबी था। उसने अपने लिए उजाले का रास्ता चुन लिया, पूँजी और मुनाफ़े का उजाला···मगर उसके कलेजे में एक तीर था। तीर निकला नहीं—क्योंकि वह तीर एक सपना था, ज़ख्म नहीं था।

और जिसकी आत्मा में शक्ति होती है कि वह अपने सपनों को जीवित रख सके, वह नहीं मरता है। निर्मल नहीं मरता ! शीरीं मेहता भी नहीं !

शीरीं अँधेरे और कोहरे के जाल में डूबी जा रही थी। निर्मल अपने कॉटेज के सामने खड़ा था। अल्सेशियन कुत्ते ज़ंजीरों से छूटने के लिए बेताब हो रहे थे।

शीरीं निर्मल पद्मावत को देखती है। मगर चुपचाप खड़ी रहती है। पास नहीं आती। इन्तज़ार करती है। निर्मल तेज़ कदमों से उसकी ओर चला गया। छड़ी का सहारा लिए, लम्बी छत पार करके वह पास आ गया···

शीरीं मुसकराती है। पद्मावत ऐसी मुसकराहटों का आदी हो गया है। ऊँचे दफ़्तरों की 'रिसेप्शनिस्ट' लड़कियाँ मुसकराती हैं। नयी कम्पनियों के शेयर बेचने वाले दलाल मुसकराते हैं। होटलों के मैनेजर··· थियेटरों के कलाकार···अभिनेता···राजनीतिक लीडर···सभी मुसकराते हैं। मुसकान एक ही होती है—शीरीं-मुसकान !

निर्मल शीरीं से नहीं पूछता है कि वह बिना पूछे, बिना इज़ाजत लिए पागलों की तरह, यहाँ क्यों चली आई है। निर्मल सवाल नहीं करता; वह कहता है, "जब यहाँ तक आ गईं, तो फ़्लैट के अन्दर भी आ जाना था···बाहर क्यों खड़ी हो ? चलो, अन्दर चलकर बैठो। मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा था। सोचता था, तुम फ़ोन करोगी···आ जाओगी ! खैर, आओ···"

निर्मल पद्मावत ने शीरीं के दोनों हाथ आगे बढ़कर थाम लिए। शीरीं चीख पड़ी, "हाथ छोड़ दीजिए !···मैं चलती हूँ।"

निर्मल के हाथ नहीं थे, लोहे की मज़बूत हथकड़ी थी। शीरीं झनझनाने लगी। क्या कोई आदमी, पत्थर की चट्टान की तरह, कठोर हो

सकता है ? आदमी नहीं ! निर्मल आदमी नहीं है !···शीरीं अपनी कलाई सहलाती हुई खड़ी रह गई। मुसकराती हुई···लेकिन, अब !

"मैंने मेहता को सूचित कर दिया है कि तुम यहाँ हो। चलो शीरीं, कमरे में चलकर बैठो। बहुत थक गई हो। यू आर एक्साइटेड ! बात क्या है ? मुझ पर नाराज़ हो ? किस बात के लिए ?" निर्मल अँधेरे को थोड़ा-सा कम करने के लिए, लाइटर जलाने लगा। वह सिगरेट पीना चाहता था।

"मैं एक्साइटेड नहीं हूँ···समझ-बूझकर ही यहाँ आई हूँ। आपको बहुत क़रीब से देखना चाहती थी। जो आदमी बिशू मेहता की इनसल्ट कर सकता है, उसे देखना चाहती थी। और कोई काम नहीं है, बस !" शीरीं धीमे क़दमों से कॉटेज की ओर जाने लगी। निर्मल से दूर-दूर चलती हुई। बहुत नाप-तोलकर हर क़दम रखती हुई।

अलसेशियन कुत्तों ने सिर झुका लिया।

बड़े कमरे की बड़ी मेज़ पर टेलिप्रिण्टर की व्यापारिक सूचनाएँ पड़ी हैं। आज की सारी डाक···ट्रंक-कॉल के मेसेज···दफ़्तर की ज़रूरी फ़ाइलें, ताज़ा अखबार। इन चीज़ों के अलावा, सेक्रेटरी धनवन्तलाल अपनी तरफ़ से काले गुलाब के चन्द ताज़ा फूल और एक बर्थ-डे कार्ड रख गया है।

आज ही निर्मल का जन्मदिन है···उसे याद आया। वह चालीस साल का हो गया। याद नहीं था उसे। गुलाब के काले फूलों ने याद दिलाई है। उन्नीस साल पहले, ठीक इसी दिन वह कल्याणी से आखिरी बार मिला था। निर्मल का जन्मदिन था। वह कल्याणी के एपार्टमेंट में गया था। कल्याणी संगमरमर की तराशी हुई एफ्रोदिती दीख रही थी। सुन्दरता की नग्न प्रतिमा—एफ्रोदिती ! आज यह शीरीं वैसी ही दीख रही है···वही नाक-नक्श, वही उम्र, वही चंचलता, वही मुसकान। आँखों में वही आलस, वही गन्ध, वही लय, वही चमक,

जिप्सी-संगीत की वही जंगली गूँज और गमक...

शीरीं मेहता नहीं है, कल्याणी है।

कल्याणी ने टेबुल से सिगरेट-केस और माचिस उठा ली। सोफ़े पर बैठकर पाँव भुलाने लगी। दोनों हाथ घुटनों के पास बँधे हैं। होंठों के एक किनारे सिगरेट। पलकों के बेहद लम्बे रेशे। हाथों की उँगलियाँ बेहद लम्बी। सामने की दीवार पर फैली हुई, निर्मल की चौड़ी छाया, किन्तु उसकी लम्बाई को छोटा बना रही है।

कमरे में घड़ी नहीं है। निर्मल की कलाई पर भी नहीं। शीरीं का रिस्टवाच बन्द हो गया है। हर रोज़ चाबी नहीं दी जाए, तो घड़ी बन्द हो जाती है। घड़ी के लिए चाबी अनिवार्य है। वक़्त जानने के लिए, वक़्त की पाबन्दी अनिवार्य है। वक़्त समझने के लिए! अब क्या वक़्त हो गया है? किस बात का वक़्त? किसलिए?

कल्याणी नहीं है, शीरीं मेहता है।

निर्मल ने ग्रीटिंग-कार्ड दराज़ में रख दिया। अपनी कम्पनी का बैलेन्स-शीट पढ़ते वक़्त इन फूलों की ओर, ग्रीटिंग-कार्ड की ओर उसका ध्यान नहीं गया था। बैलेन्स-शीट देखने में इतना वक़्त बीत गया। ज़रूरी काग़ज़ात पढ़ने पड़े। सेक्रेटरी की दैनिक रिपोर्ट पढ़नी पड़ी। ज़रूरी चिट्ठियाँ। नेशनल जूट मिल की ट्रेड यूनियन ने फिर धमकी-भरा पत्र लिखा है। अगले हफ़्ते से वे लोग हड़ताल करेंगे।

'कल्याणी-मेन्शन कर्मचारी समिति' का सभापति कई दिनों से मिलना चाहता है। कर्मचारियों की तनख्वाह बढ़ानी पड़ेगी। मँहगाई का भत्ता देना पड़ेगा। धनवन्तलाल ने लिखा है, 'नये जूट मिल के लिए सीमेन्ट और लोहे का परमिट चाहिए। कंट्रोल-विभाग के मन्त्री को

किसी बड़े होटल में पार्टी देनी होगी। पार्टी देने की बात पढ़कर निर्मल पद्मावत मुसकरा उठा था। वह घूस नहीं देता है। घूस चाहे रुपयों की हो, या किराये की किसी औरत के माँसल शरीर की हो, या बड़े होटलों में शराब के दौर और शराब के गानों के दौर—निर्मल घूस नहीं देता है। वह जानता है, घूस बड़ी बात नहीं है। सीमेन्ट और लोहा भी बड़ी बात नहीं है। जूट मिल भी नहीं। कल्याणी-मेन्शन भी नहीं। कोई भी बात बड़ी बात नहीं है।

निर्मल घूस नहीं देता है। सौदा करता है। निर्मल खरीदता है। निर्मल बेचता है। बीच का मुनाफ़ा न वह खुद खाता है, और न किसी को खाने देता है। बीच के मुनाफ़े से—यानी, दलाली से उसे नफ़रत है। वह जिससे माल ख़रीदता है, उसी को पैसा देता है। वह जिसके हाथ सामान बेचता है, उसी से पैसा लेता है। बीच का आदमी नहीं होता। दलाल नहीं होता है।

निर्मल सीमेन्ट की फ़ैक्टरी और जूट मिल के बीच खड़े कंट्रोल मन्त्री को पार्टी नहीं देगा। क्यों देगा? निर्मल को सीमेन्ट चाहिए। सीमेन्ट फ़ैक्टरी को अपने सीमेन्ट की कीमत। अब यह कंट्रोल मन्त्री कौन होता है? क्या उसने सीमेन्ट बनाया है? क्या उसने फ़ैक्टरी खड़ी की है? जूट मिल के खाते में पार्टी सीमेन्ट फ़ैक्टरी के मालिक को दी जाएगी, क्योंकि वह निर्मल को सीमेन्ट की बोरियाँ देगा। हज़ार-हज़ार बोरियाँ। और कंट्रोल-मन्त्री क्या देगा? काग़ज़ का एक टुकड़ा—परमिट!

इस परमिट की क़ीमत क्या है? निर्मल पद्मावत परमिट से नफ़रत करता है। पिछली रात मेहता-इण्डस्ट्रीज़ के स्वत्वाधिकारी, विश्वजीत मेहता ने निर्मल को यही परमिट देना चाहा था। सिटिज़ेन्स-क्लब में शामिल होने का परमिट। शीरीं मेहता के साथ डान्स-फ़्लोर पर जाने का परमिट। वाल्ज़ के मादक संगीत की धुन पर नाचने का परमिट।

साधारण स्थिति में निर्मल किसी क्लब में या सभा-सोसाइटी में शामिल नहीं होता। वह और जो भी हो, 'डिमोक्रेट' नहीं है। ख़ूबसूरती

से झूठ बोलना नहीं जानता। शिकार और व्यापार और प्यार के किस्से नहीं जानता। बातूनी नहीं है। शराब नहीं पीता। ब्रिज या रमी नहीं खेलता। बिलियर्ड नहीं खेलता। अपने सामाजिक मित्रों की बीवियों से नहीं खेलता। उसका कोई मित्र नहीं है।

एक डॉक्टर रघुवंश है। अपने हॉस्पिटल, लेबोरेटरी और नर्सिंग-होम में व्यस्त रहते हैं। और कोई नहीं है। और किसी की ज़रूरत भी नही है। निर्मल आदमी नहीं है। मशीन है। मगर थाम्सन शिपिंग कम्पनी के चीफ़ इंजीनियर मिस्टर माथुर ने कहा, "आज सिटीज़ेन्स-क्लब चलना ही होगा। मानसून-बॉल है। शहर का सारा 'क्रीम' वहाँ इकट्ठा होगा। आपसे कितने ही बिज़नेसमैन परिचित होना चाहते हैं। सभी ने मुझे मजबूर किया है, आपको ज़रूर लाऊँ···प्लीज़ निर्मल साहब, मेरी एक बात रख लीजिए···"

"आप चलिए। मैं ठीक ग्यारह बजे वहाँ आ जाऊँगा।" निर्मल ने संक्षिप्त उत्तर दिया। स्वीकृति इसलिए दी कि डान्स में शामिल हुए उसे बरसों बीत गए थे। कल्याणी के साथ वह 'संग्रीला'-होटल के फ़्लोर पर शामिल होता था। साथ डान्स करने वाले जोड़े निर्मल से नफ़रत करते थे। मगर निर्मल और कल्याणी को नाचते देखकर मुग्ध हो जाते थे। ब्लैक प्रिन्स और परियों की राजकुमारी! निर्मल और कल्याणी। आस-पास कितने ही मर्द-औरतें नाचती रहती थीं। कितने ही लोग कुर्सियों पर बैठे होते थे। मगर सभी की निगाहें इन्हीं दोनों पर होती थीं। निगाहें हटती नहीं थीं। निर्मल के नाच में जादू था। कल्याणी के नाच में पागलपन। निर्मल के पाँव में जादू था। कल्याणी के पाँवों में वहशत।

संगीत की लहरें उठती थीं। ताल और लय में बँधे पाँव घूमते थे, फ़िसलते थे, लहरों पर तैरते रहते थे। कल्याणी उसके कान से होंठ सटाकर कहती थी, "मैं थक गई हूँ, निर्मल डियर!"

निर्मल ने स्वीकृति इसलिए दी कि वह कल्याणी की थकान को

दोहराना चाहता था। कल्याणी का पागलपन याद करना चाहता था। कल्याणी···'संग्रीला-होटल'···पार्कस्ट्रीट सीमेट्री ! नाचने वाले के पाँव घूम-फिरकर वहीं आ जाते हैं। संगीत की लहरें वहीं लौट आती हैं। लौट आने के सिवाय और कोई उपाय नहीं रह गया है। वही बेबसी है और वही अकेलापन !

ठीक दस बजे निर्मल पद्मावत अपनी लम्बी कार का दरवाजा खोलकर नीचे उतरा। माथुर साहब क्लब के लॉन में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। माथुर साहब और सिटीज़ेन्स-क्लब के सभापति—विश्वजीत मेहता।

निर्मल का मेहता साहब से परिचय नहीं है। मगर उसके दफ़्तर में मेहता साहब की फ़ाइल है। फ़ाइल में विस्तृत परिचय लिखा हुआ है। मेहता साहब अठारह कम्पनियों के डाइरेक्टर हैं। बेहद चालाक पूँजीपति हैं। बिजनेस के सारे जायज़-नाजायज़ हथकण्डे जानते हैं। माहिर आदमी हैं। शुरू में एक इन्स्योरेन्स कम्पनी के क़ानूनी सलाहकार थे। वकालत भी कर चुके हैं। फिर उसी कम्पनी के डाइरेक्टर बन गए। कैसे बन गए ? निर्मल के दफ़्तर की फ़ाइल में सारा हाल लिखा हुआ है। पैंतालीस साल की उम्र में विश्वजीत मेहता ने एक स्टील-फ़ैक्टरी के मालिक की लड़की से विवाह किया। फिर स्टील-फ़ैक्टरी के मालिक का देहान्त हो गया। मालिक के दो लड़के थे। दोनों एक साथ एक कार-एक्सीडेण्ट में मारे गए। एक इन्स्योरेन्स कम्पनी···एक स्टील-फ़ैक्टरी···दो जूट मिल···एक शिपिंग कम्पनी···विश्वजीत मेहता अठारह कम्पनियों के मालिक हो गए। कैसे हो गए ?

तब उन्होंने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। इलज़ाम लगाया गया कि उनके तीन बच्चों की माँ अपने ड्राइवर के साथ दो हफ़्ते एक होटल में चोरी-चोरी रह चुकी है। ड्राइवर को अदालत में हाज़िर नहीं किया जा सका। पता नहीं, देश के किस अँधेरे कोने में वह ग़ायब हो

गया। होटल के बैरों ने गवाही दी। मैनेजर ले गवाही दी। पुलिस ने सबूत पेश किये। विश्वजीत मेहता की पत्नी अपने बच्चों के साथ मेहता-हाउस से चली गई। मेहता साहब दयालु व्यक्ति हैं। बच्चों की परवरिश के लिए हर महीने दो सौ रुपये पत्नी को भेजते हैं। पत्नी के ड्राइवर की तनख्वाह भी दो सौ रुपये ही थी।

मेहता साहब की नज़रों पर चढ़ने से पहले शीरीं शहर के एक बड़े रेस्तराँ में अंग्रेज़ी गाने गाती थी। वह अपनी बड़ी बहन के साथ किराये के कमरे में रहती थी। अठारह-उन्नीस साल की होगी। अठारह साल की उम्र में किसी रेस्तराँ के मद्धिम रोशनी वाले स्टेज पर खड़ा होना, माइक थामकर हल्के-फुल्के और गर्म-गर्म गाने सुनाना बहुत अच्छी बात नहीं है। सौभाग्य की बात तो एकदम नहीं है। मगर बड़ी बहन के लाख समझाने के बावजूद, सीनियर कैम्ब्रिज की पढ़ाई छोड़कर शीरीं जान-बूझकर एक आर्केस्ट्रा-पार्टी में शामिल हो गई थी। शुरू-शुरू में विदेशी संगीत के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेती थी। फिर 'प्रोफ़ेशनल' हो गई। जिस रेस्तराँ में गाती थी, शाम को वहाँ शहर की ऊँची सोसाइटी के लोग आते थे। होटलों और नाइट-क्लबों की रंगीन दुनिया में शीरीं सेल्सबर्ग का नाम रोशन हो गया। शीरीं सेल्सबर्ग···

शीरीं के पिता अब्राहम सेल्सबर्ग अपनी यहूदी पत्नी के साथ इज़राइल में रहते थे। स्वयं क्रिश्चियन थे, इज़राइल में ज्यादा दिन टिक नहीं पाये। पत्नी का देहान्त हो गया। यहाँ आ गये। फिर थोड़े पैसे और थोड़ा कर्ज़ छोड़कर स्वयं भी स्वर्ग चले गए। सेल्सबर्ग साहब धार्मिक व्यक्ति थे और चित्रकार थे। ईसामसीह के जीवन से सम्बन्धित उनके कितने ही चित्र अब भी विक्टोरिया-मेमोरियल के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। अब भी शहर के पुराने लोगों को उनकी थोड़ी-थोड़ी याद है। हर शाम वे अपनी छोटी-छोटी दोनों बेटियों के साथ चौरंगी के शान्त फुटपाथों पर घूमते दीख पड़ते थे।

शीरीं सेल्सबर्ग शाम को रेस्तराँ में गाती थी। रेस्तराँ बन्द होने से

काफ़ी पहले अपनी बहन के पास चली आती थी। दोनों बहनें प्रार्थना करती थीं और आँखें बन्द करके एक ही बिस्तरे में, एक ही रज़ाई के नीचे दुबककर सो जाती थीं। जीवन में कोई कुण्ठा नहीं ! कोई अपमान नहीं था। कहीं पराजय नहीं। दोनों बहनें सोचती थीं, शादी नहीं करेंगी, किराये के इसी कमरे में सारी उम्र काट डालेंगी। एक ही बाथ-रूम में स्नान करना, एक ही प्लेट में खाना-पीना, एक ही बिस्तरे में सो रहना—और चाहिए ही क्या ? रेडियो है, कपड़े हैं, चन्द किताबें भी हैं। दोनों बहनें कपड़े भी एक ही डिज़ाइन और एक ही रंग के पहनती थीं। लोग समझते थे, जुड़वाँ बहनें हैं। शीरीं चार साल छोटी थी, मगर शरीर भरा-पूरा था। साड़ी पहनती थी, तो कश्मीरी लड़कियों की तरह दीखती थी। कलकत्ता की गर्म आबोहवा ने देह के रंग पर असर किया था। असर किया था बेफ़िक्री ने, स्वभाव की चंचलता ने, शहर की ज़िन्दगी ने !

तब अचानक शीरीं महसूस करने लगी कि बड़ी बहन देर से घर लौटने लगी है, और फ़ैशनपरस्त हो गई है। साथ बिस्तरे में सोती है, मगर लिपटकर नहीं सोती। प्यार नहीं करती। गुस्सा भी नहीं करती। बस बात-बात पर मुसकराती रहती है। और अकसर मकान-मालिक की लड़की आकर कहती है, "सुसी, तुम्हारा फ़ोन आया है !"

बड़ी बहन को कौन फ़ोन करता रहता है, यह जानने को छोटी बहन बेचैन हो उठी। वह डरने भी लगी। कहीं वह किसी से शादी तो नहीं कर लेगी ? छोड़कर चली तो नहीं जाएगी ? फिर क्या होगा ? इस डर ने शीरीं को सिखाया कि आदमी को मज़बूत बनना चाहिए। हर राह पर अकेले चलने की आदत डालनी चाहिए।

शीरीं ने रेस्तराँ के स्टेज पर आकर और भी 'गर्म' और जंगली गाने शुरू किये। लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। कन्धों पर झूलते बालों को झटका देकर, बाँहें फैलाकर, होंठों पर वहशी मुसकराहटें और आँखों में

जंगली चमक पैदा करके शीरीं सेल्सबर्ग गाने लगी—

द व्वाएज़ ऑफ़ कैलकटा
ओह, ओह,
द व्वाएज़ ऑफ़ कैलकटा
दे रियली नो हाउ टु किस
दे नो हाउ टु······
ओह, ओह,
द व्वाएज़ ऑफ़ कैलकटा
दे नो हाउ टु नेट ए फ़िश
दे रियली नो···

और रेस्तराँ में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। जंगली गानों के लिए, गानेवाली जंगली लड़की के लिए! इस भीड़ में सेठ ताराचन्द थे। खानबहादुर यूसुफ़ अली थे। महारानी श्यामगढ़ थीं। जूट-प्रिन्स कृष्णन् चेट्टियर थे। और विश्वजीत मेहता···

जिस दिन पहली बार मेहता साहब शीरीं की बड़ी बहन के कमरे में आये, उसी दिन उन्होंने अपने वकील को बुलाकर कहा, "अब वक़्त आ गया है। डाइवोर्स-सूट की तैयारी शुरू कर दो!"

विवाह के पहले ही शीरीं मेहता-इण्डस्ट्रीज़ की डाइरेक्टर बना दी गई। विवाह के बाद दो-तीन साल यूरोप में रह आई। ऊँची ज़िन्दगी के क़ायदे-क़ानून सीख आई। विश्वजीत मेहता की बीवी बनने के लिए, ऊँची सोसाइटी में पेश होने के लिए, जो कुछ सीखना चाहिए, शीरीं ने सारा कुछ ढँग से सीखा है।

फिर भी आँखों से वह जंगलीपन नहीं गया है। चेहरे से कभी-कभी वही सस्तापन झाँकने लगता है, जो रेस्तराँ में गानेवाली और किराये के बिस्तरों में सोनेवाली औरतों के चेहरों पर जमा होता है। शीरीं सस्ती औरत है। उसके आचार या व्यवहार में सामन्त घराने की

कुलीन स्त्रियों की शालीनता नहीं है। नहीं है 'एरिस्टोक्रेसी'। शीरीं जो चाहती है, माँग लेती है। ताक़त होती है, तो छीन लेती है, झपट लेती है। शीरीं शतरंज नहीं खेलती, जुआ खेलती है—ताश के तीन पत्तों का जुआ। जीत जाती है, खुश होती है। हार जाती है, रोने लगती है। फिर भूल जाती है और सो रहती है। बीते हुए का पछतावा नहीं। आगे होनेवाले की फ़िक्र नहीं। जीने का एकमात्र तरीक़ा रह गया है, वर्तमान को जिये जाना। पहले अँधेरा था। फिर अँधेरा होगा। अभी अगर रोशनी की एक हलकी-सी भी किरन बाक़ी है, तो उसे जी लो। यह किरन ज़िन्दगी है। यह किरन···ये फूल···

पाँव दवाये हुए, चालाक बिल्ली की तरह शीरीं मेहता उठी। मेज़ के पास, निर्मल पद्मावत के नज़दीक आकर खड़ी हो गई। निर्मल ने इतने बरसों बाद एक औरत को अपने इतने क़रीब देखा। वह खुश नहीं हुआ। सोचने लगा।

शीरीं ने गुलाब के फूल उठा लिए। अचानक बेहद खुश होती हुई बोली, "उफ़, ये काले गुलाब···निर्मल बाबू, मैंने पहली वार काले गुलाब देखे हैं (मैंने पहली बार तुम्हें देखा है)···ये फूल बहुत खूबसूरत हैं···बहुत ताज़ा···और बहुत ज़हरीले! (ठीक तुम्हारी ही तरह हैं ये फूल)···ब्लैक ट्यूलिप···काले गुलाब···ब्लैक···निर्मल बाबू, आप किस्मत पर यक़ीन करते हैं या नहीं?"

निर्मल सोचता रहा कि उसे भाग्य पर विश्वास नहीं है। वह कर्मलेख पर भरोसा नहीं करता। धर्म पर नहीं। नैतिकता पर नहीं। वह किसी ईश्वर पर भी भरोसा नहीं करता। कर्मलेख अकर्मण्यता सिखाती है। नैतिकताएँ ग़लत क़ैदखाने की दीवारें हैं। धर्म अन्धा बनाता है। ईश्वर पर भरोसा करते ही अपनी शक्ति पर अनास्था हो जाती है···

पाप की तरह नैतिकता भी नशा है। नैतिकता भी आदत है। नैतिकता भी आदमी को गुलाम और अन्धा बनाती है। जैसे, किसी

औरत का प्यार अन्धा बनाता है। जैसे, बूढ़े जूलियस सीज़र को अबोध शिशु की तरह दिखाई पड़ती क्लियोपैट्रा ने अन्धा कर लिया था। जैसे कल्याणी···जैसे शीरीं मेहता···नैतिकता क्या है? नैतिकता एक ऐयाशी की आदत के सिवाय क्या है?

निर्मल इस आदत पर यक़ीन क्यों करे? इस किस्मत पर? वह शीरीं मेहता पर भी यक़ीन नहीं करेगा। वह सिर्फ़ बदला लेगा···विश्वजीत मेहता से नहीं, वह पार्कस्ट्रीट सीमेट्री में सोई हुई औरत से बदला लेगा। विश्वजीत मेहता ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा है। बिगाड़ने की ताक़त उसके पास नहीं है। वह व्यंग्य कर सकता है, उपहास कर सकता है, गालियाँ और फब्तियाँ कस सकता है, बिगाड़ नहीं सकता। सिर्फ़ बार-बार पूछ सकता है, "डॉक्टर रघुवंश की बीवी भी पहले न्यूयार्क में रहती थी। आप उसे जानते थे? वहाँ 'संग्रीला' में रहती थी। मैंने कितनी ही बार उसके साथ डान्स किया था। शी वाज़ ए नाइस लेडी! आप उसे जानते थे? वह न्यूयार्क के सारे हिन्दुस्तानियों में पॉपुलर थी।"

सिटिज़ेन्स क्लब के बड़े हॉल में कॉकटेल की टेबुल पर बैठकर मेहता साहब अपने मेहमान से बार-बार यही सवाल पूछने लगे। निर्मल उन्हें बार-बार टालता रहा और आस-पास बैठे हुए अन्य व्यक्तियों से परिचय करता रहा। सभी लोग उससे मिलने को उत्सुक थे। इतने कम वक़्त में कोई भी आदमी तीस मंज़िल के ऊँचे स्काइ-स्क्रैपर का मालिक नहीं बनता है। निर्मल पद्मावत जादूगर है। निर्मल पद्मावत अरब और इज़राइल से चोरी-चोरी सोना मँगवाता है। निर्मल पद्मावत बैंकों में डाके डलवाता है। निर्मल पद्मावत जाली नोट बनाता है। निर्मल पद्मावत जादूगर है, शैतान है!

लम्बी टेबुल के दोनों ओर मर्दों और ख़ूबसूरत औरतों की भीड़ लगी है। कॉकटेल का दौर चल रहा है। माथुर साहब परिचय कराते जा रहे हैं। सभी के आकर्षण का केन्द्र है निर्मल। तब विश्वजीत मेहता

पूछते हैं, "आपने अपनी बिल्डिग का नाम कल्याणी-मेन्शन क्यों रखा ? कल्याणी तो डॉक्टर रघुवंश की बीवी थी !"

"मैं कल्याणी से परिचित था। वैसे भी कल्याणी बहुत ख़ूबसूरत नाम है···शीरीं से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत !" निर्मल ने इतनी देर में पहली बार मेहता साहब से हल्का-सा मजाक किया। आस-पास बैठे लोग हँस पड़े। निर्मल को पता था कि शीरीं से शादी करने के लिए मेहता को कितनी मेहनत करनी पड़ी है। और शादी से पहले शीरीं क्या करती थी, क्या नहीं करती थी। निर्मल को सारा कुछ पता है। शहर के सभी पूँजीपतियों और राजनीतिक नेताओं के बारे में फ़ाइलें उसके दफ़्तर में हैं। फ़ाइलों में सारी जानकारी है। यह जानकारी ही निर्मल पद्मावत की बड़ी पूँजी है।

कॉकटेल का दौर खत्म होते ही डान्स शुरू होगा। आर्केस्ट्रा बजने लगेगा। लोग कुर्सियाँ खींचकर किनारे-किनारे बैठ जाएँगे। फ़्लोर खाली हो जाएगा। कुर्सियों से स्त्री-पुरुषों के जोड़े उठेंगे, संगीत की धुन पर नाचने लगेंगे। संगीत तेज़ होता जाएगा। नाच की गति बढ़ती जाएगी।

शीरीं मेहता हाथ में छोटा-सा गिलास थामे, अपनी एक सहेली के साथ टहल रही थी, मेहमान-नवाज़ी कर रही थी। घूमकर बोली, "मेरा नाम किसने लिया ? हू हैज़ दैट करेज ?"

और अपने पतिदेव की कुर्सी के पीछे आ खड़ी हुई। मेहता साहब हँसते हुए बोले, "नाम ख़ूबसूरत न हो, मगर हमारी शीरीं की ख़ूबसूरती का मुक़ाबला नहीं है !"

शीरीं खुश हो गई। निर्मल ने आँखें ऊपर उठाकर एक बार शीरीं मेहता को देखा, फिर मुसकराता हुआ बोला, "लगता है, मिस्टर मेहता, आपने कल्याणी की तसवीर भी नहीं देखी। कभी डॉक्टर के यहाँ जाकर तसवीर देख आइए।"

निर्मल की बात सुनकर शीरीं नफ़रत और ग़ुस्से से भर गई। इस

मानसून-बॉल के जल्से में ग्राने के लिए वह लगातार पाँच घंटों तक लिन्सडे-स्ट्रीट के एक प्रसिद्ध ब्यूटी-सैलून में बैठी रही है। पूरे पाँच घंटे मेकग्रप करने में खर्च हुए हैं। ग्रौर ग्रब यह काला ग्रादमी किसी तसवीर की फ़रमाइश करता है!

सौन्दर्य के सिवाय, यौवन को स्थायी बनाये रखने के प्रयत्नों के सिवाय शीरीं मेहता के जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रह गया है। हाथ की लम्बी उँगलियाँ, नाख़ून, बरौनियाँ, गोरे-गोरे पाँवों के टखने, पिंडलियाँ, होंठ, बाँहें, देह का हर ग्रंग वह बाँधकर, सँभालकर, जतन से रखती है। शरीर-रक्षा के सिवाय, ग्रौर कभी-कभी विश्वजीत मेहता के बिस्तरे में जाने के सिवाय उसे कोई काम नहीं है। वैसे वह कई सामाजिक संस्थाग्रों की ग्रध्यक्षा है। कई कम्पनियों की डाइरेक्टर है। सभा-सोसाइटी में जाती है। उद्घाटन करती है। प्राइज़ बाँटती है। रेसकोर्स में ग्रपने घोड़ों की पीठ सहलाती है। बड़ी-बड़ी दूकानों में जाकर जो चीज़ पसन्द ग्रा गई, खरीद लेती है। मगर शृंगार-प्रसाधन से ग्रधिक किसी काम में उसका जी नहीं लगता। बिस्तरे में जाने में भी नहीं। क्योंकि बिस्तरा ठंडा होता है। विशू मेहता बूढ़े हो गये हैं। उनके बुढ़ापे में नर्मी नहीं है, लचीलापन नहीं है, ज़रा भी कोमलता नहीं है। उनमें सूखे हुए पेड़ की डाल का कड़ापन है।

शीरीं हरियाली चाहती है। शीरीं ग्रपनी बड़ी बहन का बिस्तरा चाहती है। चाहती है कोमलता। ग्रौर प्यार! बड़ी बहन की बाँह पर सिर रखकर सोने में उसे सुख मिलता था। विश्वजीत मेहता से बातें तक करने में उसे डर लगता है। कठोरता का डर! ग्राक्रमण का डर! सूखे हुए पेड़ की सूखी डाल का डर! वह यह सब नहीं चाहती है।

शीरीं नहीं चाहती है कि वह कभी बूढ़ी ग्रौर बदसूरत हो जाए। वह सर्वहारा है। बाक़ी सब कुछ खो चुकी है। ग्रब वह ग्रपने रूप-यौवन को पकड़े रहना चाहती है। ग्रपने शृंगार-गृह में ग्रादमक़द शीशे के सामने खड़ी होती है। ग्रपने-ग्रापको देखती रहती है। मुग्ध होती रहती है।

निर्मल के व्यंग्य से यह नशा जैसे टूट गया। खाली गिलास टेबुल पर पटककर वह आगे बढ़ गई। जलती हुई। गुस्से से तड़पती हुई।

किन्तु निर्मल पर मेहता साहब की नाराज़गी का कारण दूसरा था। जिस ज़मीन पर निर्मल ने 'कल्याणी-मेन्शन' खड़ा किया था, वह ज़मीन मेहता साहब की पहली पत्नी की थी। मेहता साहब के ससुर मरते वक़्त वसीयतनामे में यह ज़मीन अपनी बेटी के नाम लिख गये थे। शीरीं के प्यार के नशे में, और पत्नी को जल्द-से-जल्द तलाक़ देने की फ़िक्र में मेहता साहब को याद ही नहीं रह सका, नहीं तो वे किसी-न-किसी तरह ज़मीन अपने नाम करवा ही लेते। वैसे ज़मीन पर कब्ज़ा उन्हीं का था।

पत्नी को तलाक़ मिल गया। और तब निर्मल पद्मावत ने मेहता-साहब की पूर्व-पत्नी से पूरी ज़मीन ख़रीद ली। मेहता साहब ने सिविल कोर्ट में मुक़दमा किया। हार गये। हाइकोर्ट में भी हार गये। किसी भी उपाय से ज़मीन वापस नहीं ले सके। निर्मल ने 'कल्याणी-मेन्शन' की नींव डाल दी···

असली ग़ुस्सा यही है। और इसी ग़ुस्से के कारण विश्वजीत मेहता कहते हैं, "मुझे कल्याणी की तसवीर देखने की ज़रूरत नहीं है, मिस्टर पद्मावत, मैं हर साल सर्दियों में न्यूयार्क जाता था और 'संग्रीला' में ठहरता था। और हर रात मैं आपकी कल्याणी को बुलवाता था। ज़्यादा नहीं, वह एक रात के लिए कुल पचास डॉलर लेती थी। कुल पचास डॉलर और दो-एक बोतल वारमूथ की शराब!"

निर्मल पद्मावत कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। जैसे म्यान से निकलती हुई तलवार खिंचती है। उसने बड़े ही शान्त स्वर में कहा, "मेहता सा'ब, कल्याणी मर चुकी है। उसे गाली मत दीजिए!"

और इतना कहते-कहते जैसे निर्मल का चेहरा बहुत बदसूरत हो गया। कितनी ही गहरी रेखाएँ उसके चेहरे पर उभर आईं, स्याह लकीरें। जैसे निर्मल क्षण-भर के लिए आदमी नहीं रहा, ख़ूँखार जानवर बन

गया। मगर नशे में बुत बने हुए विश्वजीत मेहता ने उसकी ओर नहीं देखा। ज़ोरों से बोलने लगे, "गाली क्यों दूँगा ? मैं भटियारा नहीं हूँ ! गाली क्यों दूँगा ? मगर कल्याणी तो प्रॉस्टीच्यूट थी ! शी···वाज़··· प्रॉस्टीच्यूट ! वह शरीफ़ औरत नहीं थी। पता नहीं, उसने डॉक्टर को कैसे फँसा लिया···शी वाज़···"

विशू मेहता की बात पूरी नहीं हो सकी। निर्मल ने ज़रा आगे झुककर, दाएँ हाथ के पंजे से उनकी टाई और कॉलर पकड़कर खींच लिया और बाएँ हाथ से एक तगड़ा घूँसा उनके चेहरे पर जमा दिया।

मेहता साहब चीख पड़े, फिर अपनी कुर्सी के साथ फ़र्श पर उलट गए। बेहोश हो गए। मुँह से खून बहने लगा।

सिटिज़ेन्स-क्लब के लिए यह बड़ी ही विचित्र घटना थी। ऊँची सोसाइटी के सभ्य-संस्कृत लोग शराब पीकर या जुआ खेलते हुए या प्रेमिका के लिए आपस में झगड़ते हैं। गालियाँ बकते हैं। मगर हाथा-पाई पर नहीं उतरते। हाथापाई करना गँवारों का काम है। पढ़े-लिखे लोग तो अक़्ल से काम लेते हैं। अक्ल से, नहीं तो पैसे से ! हाथापाई करने के लिए, मार-पीट के लिए, खून-खराबी के लिए, हत्या करने के लिए मछुआ टोली, चाइना-टाउन, वेलेस्ली स्ट्रीट के गुण्डे हैं। पैसों से गुण्डों को खरीदा जाता है। खुद हाथापाई नहीं की जाती !

बेहोश मेहता साहब और उनके मुँह से बहते हुए रक्त को देखकर हॉल में बैठे सारे लोग आतंकित हो गए। औरतें चीख मारकर बेहोश होने लगीं। एक मोटे गुजराती सज्जन 'पुलिस-पुलिस' पुकारने लगे। मगर निर्मल पद्मावत चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा रहा। शान्त, स्थिर और निश्चल ! उसके चेहरे से वह बदसूरती ग़ायब हो चुकी थी। आ गई थी कोमलता। अब राक्षस नहीं दीख रहा था। आदमी ही लगता था, मज़बूत और हिम्मतवर आदमी—जो अपने अपमान का बदला खुद लेना जानता है।

तीन-चार बैरे मिलकर मेहता साहब को बाथरूम उठा ले गए।

फिर उन्हें फ़र्स्ट-एड दिया गया। हाथ-मुँह धुलाया गया। आधा घण्टे बाद ही मेहता साहब ठीक-ठाक होकर आ गए। शरमाते हुए। सीधे निर्मल के पास चले आये। बोले, "निर्मल साहब, कल्याणी से इतना प्यार था, तो उससे शादी क्यों नहीं कर ली ?"

और इतना कहकर वे मुसकराने लगे। निर्मल मुसकराया नहीं, कुछ बोला भी नहीं। कुछ ही दूर बैंड-स्टैण्ड के पास शीरीं मेहता खड़ी थी। निर्मल उसी की ओर देख रहा था।

शीरीं मेहता उसी के फ्लैट में खड़ी थी और निर्मल उसी की ओर देख रहा था। शीरीं काले गुलाब देख रही थी। निर्मल को देख रही थी और कह रही थी, "आप क़िस्मत पर यकीन नहीं करते, मगर मैं यक़ीन करती हूँ। यह तो क़िस्मत की ही बात है कि कल रात आप सिटिजेन्स-क्लब में गए। और उन्होंने आपकी माशूक़ की बात छेड़ दी…"

इतना कहकर शीरीं मेहता अचानक इस काले और बदसूरत दस साल की उम्र के बेवकूफ़ लड़के के सामने मेज़ पर दोनों हथेलियाँ रख-कर झुक गई और खिलखिलाने लगी। सीने की सारी ताक़त लगाकर हँसने लगी। निर्मल का यह फ़्लैट इस हंसी की आग में जलकर भस्म हो जाएगा। जैसे यह कल्याणी-मेन्शन इस हँसी के भूकम्प में बालू की दीवार की तरह ढह जाएगा। जैसे यह सारी धरती ज्वालामुखी बन जाएगी, यह सारा आकाश धुएँ से, आग की तेज़ लपटों से, अँधेरे से, मौत से भर जाएगा। जैसे यह शीरीं मेहता…

निर्मल पद्मावत ने निगाहें ऊपर उठाईं, तो सामने कल्याणी खड़ी थी। अपरिचित फूलों की वही परिचित सुगन्धि। अनजान गीतों की वही पहचानी लय। अजनबी आँखों की वही हमदर्द चमक। और कल्याणी…

शीरीं मेहता लाल रेशम की साड़ी पहने थी, देवी-प्रतिमा की तरह दीख रही थी। गले में नकली हीरों का वही हार···

शीरीं ने कहा, "निर्मल डियर, मुझे तुमसे नहीं, मेहता से नफ़रत हो गई है। तुमने उसे इन्सल्ट किया, फिर भी वह तुम्हारे सामने झुक-कर खड़ा हो गया। फिर भी उसने मुझसे कहा कि मैं तुम्हारे साथ डान्स करूँ···"

कल्याणी ने कहा, "तुम 'संग्रीला-होटल' के मेरे कमरे से भाग खड़े हुए, निर्मल। दोबारा आये नहीं। तुम डरपोक थे। तुम कमज़ोर थे। बिना साहस किये किसी को प्यार नहीं मिलता है। मैं आ गई हूँ···"

शीरीं ने कहा, "मैं आ गई हूँ, क्योंकि मैं मेहता की तरह बुज़दिल नहीं हूँ। मैं ताक़तवर इन्सान को प्यार करती हूँ, बुज़दिल को कभी नहीं!"

कल्याणी ने कहा, "तुम साहसी बनो, निर्मल! प्यार तुम्हारे क़दमों पर फैल जाएगा। मैं इसीलिए आ गई हूँ···"

निर्मल पद्मावत प्रलय-जैसी उस निर्मल खिलखिलाहट को बर्दाश्त नहीं कर सका। चुपचाप कमरे से बाहर चला आया। कल्याणी बाहर नहीं आई। शीरीं मेहता बाहर नहीं आई। उसकी खिलखिलाहटें कमरे के अन्दर ही रुकी रहीं।···

आदमी कभी इतना ताक़तवर और कभी कहीं इतना कमज़ोर क्यों हो जाता है? ताक़त कहाँ से आती है? और कमज़ोरी?

निर्मल को विश्वजीत मेहता से ज़रा भी डर नहीं लगा था। लेकिन अपने फ़्लैट में आई हुई उनकी पत्नी से वह भयभीत हो रहा है। जैसे वह कल्याणी से भयभीत हो गया था। भयभीत होकर भाग आया था। निर्मल अपने ही कमरे से भाग आया। देर तक अपने तीस मंज़िल के मकान की छत पर टहलता रहा। अकेला और उदास। उदासी निर्मल की आदत बन गई है। उदासी, अकेलापन, मेहनत और कलेजे में तीर

की तरह चुभा हुआ एक सपना !

रात के कितने बजे हैं, पता नहीं। चारों ओर अँधेरा है। नीचे की सड़कों पर बिजली के लट्टू जल रहे हैं। चाँदनी नहीं है। आदमी क्या इसी अँधेरे के लिए अपना सारा अतीत, सम्पूर्ण वर्तमान, अपनी सारी उपलब्धियाँ, सम्पूर्ण अस्तित्व बेच डालता है? इसी अँधेरे के लिए? इसी नींद के लिए, जिसमें डूबकर आदमी सपने न देख सके?

निर्मल पद्मावत छत के अँधेरे में भटकता रहता है। हाथ में छड़ी भी नहीं है। पाँवों में दर्द उभरने लगा है। आँखें बन्द हो जाना चाहती हैं। कण्ठ सूख रहा है। पानी नहीं है। अँधेरे की इस नदी में एक बूँद पानी नहीं है। एक बूँद भी नहीं!

वह छत के किनारे खड़ा हो जाता है। नीचे झाँकता है। छत से नीचे कूद जाना कितना आसान है। ग़लत सपने से छुटकारा पा लेना कितना आसान है। कलेजे से तीर खींच लेना···

फ़्लैट के दरवाज़े पर खड़ी कल्याणी चीखती हैं, "निर्मल, वापस आ जाओ!"

फ़्लैट के दरवाज़े पर खड़ी शीरीं मेहता चीखती है, "मुझे अँधेरे में डर लगता है, निर्मल!"

निर्मल मुसकराने लगता है। धीमे क़दमों से वापस लौटने लगता है। पास आकर कहता है, "चलो, शीरीं, बाहर घूमने चलते हैं। थोड़ी देर हुगली के किनारे बैठेंगे। फिर तुम्हें मेहता-हाउस छोड़ आऊँगा!"

"चलो···मगर अब मैं मेहता-हाउस नहीं जाऊँगी! तुम मुझे चला जाने दोगे?" शीरीं ने पूछा और निर्मल के पास खिसक आई।

बड़ा ही अजीब सवाल है, निर्मल सोचने लगा, बड़ी ही अजीब लड़की है।

निर्मल लिफ़्ट में खड़ा हो गया। निर्मल की बाँह का सहारा लिए खड़ी शीरीं मेहता मुसकराती रही। लिफ़्ट नीचे उतरने लगी। लिफ़्टमैन

को ताज्जुब हुआ। यह औरत कौन है ? पागल की तरह ऊपर गई थी। अब जैसे नींद में है। पहली बार उसने निर्मल को किसी औरत के साथ देखा है। पहली बार उसने इतनी खूबसूरत औरत देखी है। उसे अपने मालिक की पसन्द पर खुशी हुई। मालिक यह बात समझ गया। निर्मल ने पूछा, "फ़्रेडरिक, तुम्हारी शादी हो चुकी है ?"

लिफ़्टमैन घबरा गया। इतने बरसों में पहली बार उसके मालिक ने उससे बात की है। चंचल होता हुआ बोला, "यस सर ! तीन साल हो गये !"

"बच्चे हैं ?" निर्मल मुसकराया।

"यस सर ! साल-भर की एक बच्ची है, सर ! जिस महीने उसका जन्म हुआ, मैनेजर साहब ने मेरी सैलरी बीस रुपये बढ़ा दी थी, सर ! हम लोग बहुत आराम से हैं, सर !" फ्रेडरिक बोलता ही जाता, मगर रास्ता पूरा हो गया। शीरीं मेहता और निर्मल लिफ़्ट से बाहर चले आये।

८

"मैं नहीं चाहता था। मगर शीरीं चाहती है कि सिटिज़ेन्स क्लब में ही बर्थ-डे-पार्टी हो ! उसका जन्मदिन है। वह जैसा चाहेगी, वही होगा," निर्मल ने डॉक्टर रघुवंश को उत्तर दिया।

डॉक्टर बड़ी ही फीकी हँसी हँसे। निर्मल का उत्तर उन्हें पसन्द नहीं आया। बोले, "तुम मिसेज़ पद्मावत को मना कर सकते थे। मुझे पता है मेहता साहब तुम्हारे दुश्मन हो गये हैं। तुम्हारा नुक़सान करने

की कोशिश में रहते हैं। मगर पद्मावत, उन्हें इसका अधिकार है। तुमने उनकी बीवी छीन ली है। अब और कितना अपमान करना चाहते हो?"

"अपमान की बात नहीं है, डॉक्टर!" निर्मल ने कहना शुरू किया, सिर्फ़ शीरीं की ज़िद है..."

"नहीं, ज़िद नहीं है। कठोरता है। अपनी पत्नी से कहो, वह आदर करना सीखे। मेहता का नहीं, तुम्हारा आदर करे। आदर न करे, कम-से-कम करुणामयी तो बने। तुम्हारी पत्नी के मन में करुणा नहीं है। करुणा होती तो वह अपने अपमानित पति को छोड़कर तुम्हारे पास भाग नहीं आती!" डॉक्टर रघुवंश ने बहुत थके हुए स्वर में कहा और खाँसने लगे। प्रिया उनके लिए एक गिलास पानी लाने चली गई। निर्मल ने कहा, "आपकी सेहत ठीक नहीं है, कुछ दिनों के लिए पहाड़ पर चले जाइए..."

"सबसे बड़ी बात है करुणा!" निर्मल की बात अनसुनी करके वे कहते रहे, "और कुछ नहीं चाहिए। सिर्फ़ करुणा चाहिए। एक यह हो तो सारा दुःख मिट जाता है..." कहते-कहते वे चुप हो गये। प्रिया पानी का गिलास लेकर आ चुकी थी। वे पानी पीकर उठ खड़े हुए। कुछ बोले नहीं। प्रिया को देखकर मुसकराये। निर्मल को देखकर मुसकराये। कल्याणी अपनी कब्र में कितनी अकेली है। हम सभी अपनी-अपनी ज़िन्दगी के क़ैदखाने में कितने अकेले हैं। उम्र की क़ैद। अरमानों की क़ैद। क़ैद सपनों की। क़ैद बीते हुए की और होनेवाली घटनाओं की। तीस-मंज़िल का स्काइ-स्क्रैपर हमारा दोस्त हो सकता है? क्या हमदर्द हो सकती हैं दवाएँ? इन्जेक्शन्स, ऑपरेशन-थियेटर, मरीज़, तरह-तरह की बीमारियाँ? साथ दे सकते हैं नाच, गाने, जल्से? किताबें साथ दे सकती हैं?

साथ दे सकती है करुणा और सहानुभूति! दया और ममता। और माया! किन्तु शीरीं पद्मावत में या निर्मल पद्मावत में यह सब नहीं है। है सिर्फ़ अँधेरा!

"अच्छा, अभी चलता हूँ, इनविटेशन-कार्ड कल सुबह भेजूंगा। प्रिया, अपने साथ डॉक्टर को जरूर लाओगी।" निर्मल ने कहा और नीचे की सीढ़ियाँ उतरने लगा।

निर्मल अजनबी है। निर्मल अपने-आपसे अजनबी है।

९

धनवन्तलाल ने कहा, "एक बार आप खुद जूट मिल चलिए। मैनेजर से कंट्रोल नहीं किया जा रहा है। बार-बार उसका टेलीफ़ोन आता है। पुलिस वहाँ मौजूद है, मगर···"

"मगर पुलिस घूस माँगती है। यही न ? घूस लेगी, तब मजदूरों पर लाठी-चार्ज करेगी और उनके लीडरों को गिरफ़्तार करेगी। ट्रेड-यूनियन वाले भी घूस माँगते हैं। घूस लेंगे, तब हड़ताल खत्म करेंगे। क्यों ? यही बात है न ?" निर्मल पद्मावत ने फ़ाइलें देखते-देखते ही पूछा। उसके चेहरे पर ज़रा भी चिन्ता नहीं थी। मन में भी नहीं। केवल आश्चर्य था। ऐसा क्यों है ? ऐसा क्यों हो रहा है ?

"हाँ, ऐसा ही है!" धनवन्तलाल चिन्तित है। धनवन्तलाल जानता है कि नेशनल जूट मिल की इस हड़ताल के पीछे ट्रेड-यूनियन का नहीं, सेठ विश्वजीत मेहता का हाथ है। मेहता और उनके दोस्तों का हाथ। मेहता साहब भूले नहीं हैं। भूल जाना सम्भव नहीं है। प्रिन्सेस स्ट्रीट की यह इमारत बहुत ऊँची है। शीरीं पद्मावत बहुत लम्बी, बहुत तेज़ गाड़ी में चलती है। निर्मल सिटिज़ेन्स-क्लब में जाता है। मुसकराता रहता है।

सेठों-बनियों की बीवियाँ उसकी तरफ़ दौड़ी आती हैं। वह किसी के पास नहीं जाता। किसी को क़रीब आने नहीं देता है।

"ठीक है! मैनेजर से कहो, मिल को लॉकअप कर देगा। और खुद कोठी खाली करके यहाँ चला आएगा।"

"लेकिन हम लोग तो सप्लाई के कितने आॅर्डर ले चुके हैं। उन्हें पूरा किये बिना तो मिल बन्द नहीं की जा सकती। बहुत घाटा लगेगा। बदनामी होगी। बिज़नेस को बहुत धक्का लगेगा..."

"लगने दो। हम घाटा सह लेंगे। मगर यह नहीं हो सकता है कि हम घूस दें।" निर्मल ने आखिरी फ़ैसला किया। फिर चुप होकर फ़ाइलों में उलझ गया। वह आश्चर्यचकित है। ऐसा क्यों हो रहा है?

वह अपने मज़दूरों को सबसे ज्यादा मज़दूरी देता है। सबसे अच्छा बोनस देता है। मज़दूरों के लिए बेहतर क्वार्टर हैं। मैदान हैं। पार्क हैं। अस्पताल हैं। फिर भी मज़दूर हड़ताल करते हैं। एक दिन का नोटिस देते हैं और काम रोक देते हैं। एक जुलूस निकालते हैं और काम रोक देते हैं। पुलिस कुछ नहीं कर पाती। सरकार चुप रहती है। नेशनल जूट मिल की चिमनियाँ धुआँ उगलना बन्द कर देती हैं। इसमें दोष किसका है?

मज़दूरों का दोष नहीं है। वे अपने लीडरों का कहना मानते हैं। लीडरों का दोष नहीं है। वे मज़दूरों का हित देखते हैं। हड़ताल होगी, तो मज़दूरी की दर बढ़ेगी, मज़दूरों की सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। नेशनल जूट मिल की हड़ताल सफल होती है। क्योंकि नेशनल जूट मिल का मालिक पुलिस को अपनी तरफ़ मिलाकर नहीं रखता है। मालिक बेवक़ूफ़ है। इस शहर के क़ायदे-क़ानून नहीं जानता।

यह शहर घूस के रुपयों का शहर है। हर चीज़ के लिए घूस देनी पड़ती है, रुपयों की शक्ल में, तोहफ़ों की शक्ल में, मीठी बातों की शक्ल में। निर्मल मीठी बातें नहीं जानता है। निर्मल मेहनत-मज़दूरी जानता है। ईमानदारी जानता है। जानता है कि इसके अलावा कुछ

जानने की ज़रूरत नहीं है।

धनवन्तलाल चला गया और एक मंजिल ऊपर चढ़कर शीरीं फ़्लैट में आ गई। पास आकर खड़ी हो गई। निर्मल ने कहा, "ज़रा रुको, चलता हूं।"

इसी वक़्त प्रभासचन्द्र नियोगी का फ़ोन आया। निर्मल ने कहा, "मैंने फ़ैसला कर लिया है, जब तक हड़ताल नहीं रुकेगी, जूट मिल बन्द रहेगी।"

"यह ग़लत फ़ैसला है। तुम मज़दूरों की शर्तें अभी मान लो। खुद वहाँ जाकर कह आओ कि नया मैनेजर बहाल करोगे और नये मज़दूरों के लिए नये क्वार्टर बनवा दोगे। यही दो माँगें हैं। फिर धीरे-धीरे अपने आदमियों को जूट मिल की यूनियन में घुसाओ। सारे बदमाश लीडरों को धीरे-धीरे निकाल बाहर करो।" सेठ नियोगी ने निर्मल पद्मावत को सही रास्ता बताना चाहा। सभी मिल-मालिक ऐसा ही करते हैं। अक्लमन्दी से काम न लें, तो एक भी मिल नहीं चले। सारी फ़ैक्टरियाँ बन्द हो जाएँ। मगर निर्मल अक़्लमन्द नहीं है।

वह कहता है, "अब मुझसे यह सब नहीं होगा। जूट मिल बन्द हो जाए! घाटा मेरा ही नहीं है। मजदूरों को कहीं काम नहीं मिलेगा। धीरे-धीरे सारे मिल बन्द होते जा रहे हैं।"

शीरीं पद्मावत कहती है, "मैं प्रिया के साथ घूमने जा रही हूँ। डायमंड हार्बर तक जाऊँगी, जाऊँ?"

प्रिया का नाम सुनते ही निर्मल सारा कुछ भूल जाता है। भूल जाता है या भूल जाना चाहता है। प्रिया और डॉक्टर रघुवंश। डॉक्टर रघुवंश और कल्याणी। सारा कुछ एक पतले धागे से जुड़ा हुआ है।

"प्रिया कहाँ है?"

"अपनी कोठी पर! मुझे फ़ोन किया था। मैं जाऊँ?"

"नहीं!" निर्मल सिर उठाकर शीरीं को देखता है। शीरीं चंचल

है। वह चली जाना चाहती है। शाम हो चुकी है, इसीलिए भाग जाना चाहती है। देर से लौटेगी। चुपचाप अपने कमरे में सो जाएगी। निर्मल अपने फ़्लैट में जगा रहेगा।

"क्या तुम्हारे साथ कहीं बाहर जाना होगा? कहाँ चलोगे?" शीरीं बेहद ठंडी आवाज़ में पूछती है।

"तुम अपने कमरे में बैठो। मैं आ रहा हूँ। आज कहीं नहीं जाएँगे।"

शीरीं समझ जाती है, निर्मल ग़ुस्से में है। ग़ुस्से में न होता, तो उसकी बात नहीं टालता। बेहद ग़ुस्से में है। ग़ुस्से में होता है, तो शीरीं के फ़्लैट में आता है। वैसे नहीं आता। वैसे अपने फ़्लैट में रुका रहता है। कहीं और चला जाता है। क्लब में जाकर रमी खेलता है। व्यापार के प्लान बनाता है। मैनेजर से बातें करता है। अकेला अपनी 'ओल्ड-मोबील' कार में घूमता रहता है। शीरीं के पास नहीं आता।

शीरीं अकेली रह जाती है। प्रिया को फ़ोन करती है। बुलाती है। पास बुलाती है। बहुत पास बुलाती है।

पिछले साल अपनी बर्थ-डे-पार्टी के दिन सिटिज़ेन्स-क्लब में पहली बार वह प्रिया से मिली थी।

डॉक्टर रघुवंश नहीं आये थे। प्रिया आई थी। निर्मल ने दोनों का परिचय कराया था। खुद मेहता साहब की टेबुल पर चला गया था। शीरीं प्रिया को पहचान गई। पहली नजर में पहचान गई कि प्रिया उसकी दोस्त हो सकती है। और शीरीं की ग़लती से कॉफ़ी का प्याला प्रिया के कपड़ों पर गिर गया। शीरीं चीख़ पड़ी, "चलो, धो डालो, नहीं तो दाग़ पड़ जाएँगे।"

हैंडलूम की सफ़ेद साड़ी पर कॉफ़ी के दाग़। दोनों औरतें उठीं और बाथरूम की ओर चली गईं। रास्ते में प्रिया ने कहा, "मैं आपसे मिलना चाहती थी, सिर्फ़ इसीलिए यहाँ आई।"

"तुरन्त धो डालने से दाग़ घुल जाएगा। तुम ज़रा भी फ़िक्र मत करो।" शीरीं ने उत्तर दिया।

प्रिया वाश-बेसिन के पास खड़ी हो गई। शीरीं ने ग्राँचल पानी में भिगोया ग्रौर साबुन डालकर मलने लगी। फिर पानी निचोड़ दिया। बोली, "तुरन्त सूख जाएगा। तुम ज़रा भी फ़िक्र मत करो।"

प्रिया मुसकराई। शीरीं इतनी चिन्तित क्यों हो रही है ? दाग़ नहीं धुलेगा तो क्या है ? प्रिया दोबारा मुसकराई। वाश-बेसिन के ऊपर शीशे में प्रिया खड़ी है ग्रौर प्रिया के पीछे शीरीं पद्मावत खड़ी है। एक ही शीशे के फ़्रेम में दो ग्रौरतें।

शीरीं ने प्रिया को बाँहों में बाँध लिया। झिझकती हुई बोली, "प्रिया, तुम बेहद खूबसूरत हो !"

निर्मल ने शीरीं से किसी दिन भी ऐसी बात नहीं कही है। शायद उसने कभी शीरीं की ख़ूबसूरती की ग्रोर ध्यान ही नहीं दिया है। उसने केवल शीरीं से शादी की है विश्वजीत मेहता को ग्रपमानित करने के लिए ग्रौर धनपतियों के ऊँचे समाज में प्रवेश करने के लिए। बस ! ख़ूबसूरती की ग्रोर नहीं देखा है। ग्रवकाश पाकर भी नहीं।

शीरीं के चेहरे में ग्रौर पूरे शरीर में एक ग्रजीब बात है। कभी वह बेहद ख़ूबसूरत लगती है, कभी बेहद बदसूरत। इसके बीच की स्थिति में वह कभी किसी क्षण नहीं रहती। वह जलती हुई मरूभूमि की तरह गर्म रहती है या बर्फ़ की ठंडी चट्टान ! वह कभी किसी क्षण साधारण ग्रौर शान्त नहीं रहती।

निर्मल ग्रपनी पत्नी के शरीर का यह वैचित्र्य देख नहीं पाता। ग्रवकाश पाकर भी नहीं।

प्रिया के साथ घूमने जाने की ग्राज्ञा लेने ग्राई थी, तो शीरीं बहुत गर्म थी। गर्म ग्रौर ताज़ा ग्रौर कोमल। कोमल ग्रौर बेहद ख़ूबसूरत। मगर निर्मल के इन्कार करते ही वह बर्फ़ की बेडौल ग्रौर बदसूरत चट्टान

बन गई ।

चट्टान बनकर निर्मल पद्मावत के पास रुकी नहीं रही । चुपचाप कमरे से बाहर निकल आई । लिफ़्ट में नहीं गई । सीढ़ियों से उतरती हुई अपने फ़्लैट में चली आई । प्रिया को फ़ोन करने लगी ।

"मैं नहीं आ सकूँगी, प्रिया ! निर्मल मेरे कमरे में आ रहा है ।"

"इस वक़्त ? उन्हें क्या और कोई काम नहीं है ? अभी तो शाम ही हुई है···" प्रिया ने हँसते हुए पूछा ।

"तुम्हीं यहाँ आ जाओ न, प्रिया । मेरी जान बच जाएगी । तुम आओ तो हम तीनों कहीं बाहर चलेंगे ।"

"तुम्हारी जान बचाने से मुझे क्या फ़ायदा होगा ?···निर्मल मुझपर नाराज़ हो जाएँगे···ऐसा करो, शीरीं ! फ़ुरसत हो जाए तो मुझे फ़ोन कर दो । मैं चली आऊँगी···"

शीरीं ने फ़ोन रख दिया । नौकरानी को बुलाकर सोने-बैठने का कमरा ठीक करने लगी । लगभग महीने-भर बाद निर्मल यहाँ आ रहा है । कभी-कभी आता है । जब गुस्से में होता है । प्यार में होकर आने की ज़रूरत उसे नहीं होती । खुश रहता है, तो शीरीं से दूर रहता है । खुश रहता है, तो शीरीं और प्रिया को साथ रहने की छूट देता है ।

और शीरीं उसके ग़ुस्से का इन्तज़ार नहीं करती है । उसे ग़ुस्सा नहीं चाहिए । कभी नहीं चाहिए । निर्मल का ग़ुस्सा उसे बेहद तक़लीफ़ देता है । उसे लगता है, जैसे निर्मल उसे किसी अँधेरी गुफ़ा में धकेलता लिए जा रहा है । मौत की अँधेरी गुफ़ा । गुफ़ा में ज़हरीले जानवर हैं । साँप-ही-साँप हैं और वह समुद्र से निकाली गई कोई मछली बन गई है । नीली मछली । बेहोश मछली । पानी के लिए तड़पती हुई मछली । मगर गुफ़ा अँधेरी है । गुफ़ा में साँप-ही-साँप हैं । ज़हरीले साँप । रोशनी की कोई किरन कहीं बाकी नहीं है ।

शीरीं को ऐसा क्यों महसूस होता है ? क्या इसलिए कि वह तीस-बत्तीस साल की हो चुकी है, और विश्वजीत मेहता या निर्मल पद्मावत

ने उसे कभी माँ बनने का एक छोटा-सा भी अवसर नहीं दिया है ? क्या इसीलिए ?

नहीं। शीरीं माँ बनना नहीं चाहती है। बचपन में ही उसकी यह आकांक्षा मर चुकी है।

वह तब पाँच-छः साल की छोटी-सी लड़की थी। उसकी माँ को बच्चा होनेवाला था। उसकी माँ अपने बिस्तरे में छटपटा रही थी। एक मिड-वाइफ़ पास खड़ी थी। एक नर्स खड़ी थी। पिताजी खड़े थे। माँ दर्द से बेहोश थी। घंटों के बाद घंटे बीतते जाते थे। माँ कभी-कभी शान्त हो जाती, कभी तड़पने लगती थी। तब मिड-वाइफ़ और नर्स ने शीरीं को कमरे से बाहर निकाल दिया। पिताजी बाहर चले आये। कमरा अन्दर से बन्द हो गया।

अन्दर माँ चीखती-छटपटाती रही। फिर सब-कुछ शान्त हो गया। मरा हुआ बच्चा मिड-वाइफ़ की कारीगरी से बाहर निकाला गया। काठ की तरह सूखा हुआ, नीला पड़ गया हुआ, मरा हुआ बच्चा।

डॉक्टरों को बुलाया गया। मगर माँ बच नहीं सकी। हाथ-पाँव फूलने लगे। सारे शरीर में सेप्टिक का ज़हर फैलने लगा। माँ मर गई। और छः साल की छोटी-सी शीरीं के मन में माँ बनने की आकांक्षा दफ़न हो गई।

अकेले में उसकी बड़ी बहन ने शीरीं को बताया था कि पिताजी के पास सोने से ही माँ के पेट में बच्चा आ गया था। बच्चा आने के कारण ही माँ बीमार हो गई थी और मर गई थी।

शीरीं को अपने पिता से भी नफ़रत हो गई। पिता से, दुनिया के हर मर्द से। वह अपनी बड़ी बहन को प्यार करने लगी। आस-पास की सारी लड़कियों को प्यार करने लगी। किसी मर्द को नहीं। किसी दिन नहीं।

१०

शीरीं पद्मावत अपने पलंग पर लेटी है। निर्मल के आने का इन्तज़ार कर रही है। निर्मल शीरीं के दरवाज़े पर खड़ा है। अपने मन को शान्त करने की कोशिश कर रहा है। निर्मल सोच रहा है। परिवार, घर, पत्नी, परिजन, कुटुम्ब, अपनी सन्तान!...प्रस्तर-युग में वन-सभ्यता को त्यागकर पहली बार समतल भूमि पर आकर जीवन आरम्भ करने की कल्पना किसने की होगी? किसने परिवार शुरू किया होगा? किसने समाज...किसने नारा दिया होगा कि जीवन को टुकड़ों में बाँट दो? अस्त्र-शस्त्र, पशु-चर्म, आखेट, काष्ठ-संचय के हिस्से बाँट लो, स्त्रियों के हिस्से बाँट लो? किसने कहा होगा कि जंगल से, पर्वत-कन्दरा से, घाटियों से बाहर आओ; गंगा, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र के बीच की समतल भूमि पर फैल जाओ! और क्यों कहा होगा? परिवार से क्या लाभ है?

निर्मल सोच रहा है कि शीरीं सेल्सबर्ग को शीरीं मेहता और शीरीं मेहता को शीरीं पद्मावत बनाने से क्या लाभ है? शीरीं तो वही रहती है—वही एक औरत! एक औरत जो बेहद खूबसूरत है और बेहद बदसूरत है। जो हर ताक़तवर चीज़ से डरती रहती है। धर्म से डरती है। पुरुष के प्यार से डरती है। समाज-व्यवस्था से डरती है। छिपी रहना चाहती है। सामने आना नहीं चाहती।

निर्मल ऐसी औरत से क्या करेगा? निर्मल खुद अपने से क्या करेगा? कल्याणी देर तक चीखती रही थी और रोती रही थी...

निर्मल सोचता है, परिवार की कल्पना मैंने ही की है। मैंने ही सम्पत्ति-संचय को परिवार की कल्पना का आधार बनाया। मैंने ही स्त्री-सन्तान, गाय-बैल, मदिरा, माँस, मृगचर्म, अश्व, लोहे-पत्थर के हथियारों को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बनाया। वस्तुओं और स्थितियों पर मेरे

सघन स्नेह ने ही आदि-युग में परिवार की स्थापना की। मैं कृषि-कार्य में लगा। व्यापार में, सेवा में, यज्ञ में, विद्यादान में, भिक्षाटन में, राजनीति में गया। मैंने इतिहास लिखना शुरू किया। मैंने अपनी पसन्द की स्त्री को अपने परिवार की स्वामिनी बनाया। मैंने सन्तानोत्पत्ति…नहीं, नहीं…जैसे आग का एक दहकता शोला निर्मल पद्मावत की छाती में भड़क उठता है। मैंने सन्तानोत्पत्ति नहीं की। मैं सन्तानहीन रहा।

"बाहर क्यों खड़े हो ?" शीरीं के इस छोटे से सवाल ने निर्मल को अन्दर धकेल दिया। अन्दर बहुत धीमी रोशनी जल रही है। नीली रोशनी जैसे सूना आसमान हो। सितारे एक भी नहीं। सिर्फ़ बर्फ़ का एक गोल टुकड़ा, चाँद। यह चाँद शीरीं है। बर्फ़ का एक गोल टुकड़ा।

शीरीं पलंग से नीचे उतर आई है। दूसरे पाँव की सैंडिल ढूँढ रही है। एक कोने में ऊँची तिपाई पर एक नंगी हब्शी औरत खड़ी है। हाथों-में-हाथ बाँधे हुए। हँसती हुई। चेहरा स्याह है। कमर बेहद पतली, ख़ून के रंग की आँखें, लाल होंठ, काली बाँहें किसी जंगली नाच की मुद्रा में। पाँवों-पर-पाँव चढ़ाकर आखिरी नंगेपन को ढंकने की कोशिश नहीं की गई है।

और यह मूर्ति कमरे की हर चीज़ पर हावी है। किताबों पर, फूलों पर, थरथराते हुए परदों पर, सोफ़ा-सेट पर, पलंग पर, हर चीज़ पर हावी है—दो फुट की नंगी हब्शी औरत! ख़ून के रंग की आँखें, बेहद लाल होंठ!

लाल होंठों ने कहा, "मुझ पर बहुत नाराज़ हो क्या? मुझे प्रिया के साथ जाने नहीं दिया…"

निर्मल शीरीं को नहीं, हब्शी औरत को देख रहा था। स्थिर दृष्टि से। कल्याणी, प्रिया, शीरीं! इन सबके अन्दर बैठी यह नंगी काली औरत निर्मल पद्मावत को पागल बना रही है। निर्मल पागल है नहीं। निर्मल अक़्लमन्द है। साधारण मनुष्यों से उसकी तुलना नहीं की जा

सकती। हर क़दम सोच-समझकर उठाता है। कभी पीछे नहीं हटता। आगे ही बढ़ता चला आता है। पद्मावती-नदी के किनारे बसे छोटे-से गाँव से कराची, कराची से बम्बई, बम्बई से न्यूयार्क और न्यूयार्क से कलकत्ता। तीस-मंज़िलों का स्काइ-स्क्रैपर। नेशनल जूट मिल। मिलर एण्ड मिलर कम्पनी। इंडिया शिपिंग कॉरपोरेशन। वेस्ट बंगाल बैंक। हुगली ग्लास वर्क्स और शीरीं पद्मावत !

मगर आदमी किसी जगह इतना कमज़ोर और इतना पागल क्यों हो जाता है ?

धीरे-धीरे उम्र ढलती जाती है। मगर, उत्ताप नहीं ढलता। इच्छाएँ और भी प्रबल होती हैं। मन और भी पागल।

"कभी-कभी मुझे भी तुम्हारी ज़रूरत होती है। एक दिन घूमने नहीं गईं तो क्या हो गया ?" निर्मल ने कोने में जाकर हब्शी औरत के सामने खड़े होते हुए पूछा। निर्मल के कंठ की शुष्कता से शीरीं को बड़ी ही विरक्ति हुई। यह आदमी और कुछ न करे, मीठी बातें तो कर सकता है। विरक्ति में भरकर उसने उत्तर दिया, "तुम जो चाहोगे, वही होगा। मैं तो पत्थर हूँ !"

निर्मल जैसे पत्थर की चोट खाकर पीछे घूम गया। पलंग के पास शीरीं खड़ी, अकेली, असहाय, और बेहद खूबसूरत। एक उम्मीद में डूबी हुई खूबसूरती !

भूखा बाघ अपने शिकार की ओर देखकर तड़पता है। अचानक सामने भरी राइफ़ल तनी हुई देखकर पानी के नाले के पास खड़ी प्यासी हिरनी अँधेरी झाड़ी की तरफ़ देखकर तड़पती है। जंगल खामोश है। हवा रुकी हुई। कहीं कोई आवाज़ नहीं। हरक़त नहीं। रोशनी की एक किरण नहीं !

निर्मल पद्मावत ने शीरीं को अपनी बाँहों में बाँध लिया। शीरीं उसकी पत्नी है। शीरीं के शरीर से खेलने का उसे अधिकार है। धार्मिक

अधिकार, सामाजिक अधिकार, नैतिक अधिकार। शीरीं इन्कार नहीं कर सकती। इन्कार करना चाहती है। मगर निर्मल की बाँहें पत्थर की हैं। निर्मल की छाती लोहे की चट्टान है।

शीरीं ने आँखें बन्द कर लीं। अपने शरीर को एकदम ढीला छोड़ दिया। समय तेज़ बहती हुई नदी है। वह डूब जाना चाहती है। निर्मल ने उसे अपनी गोद में डाल लिया। बड़ी सावधानी से उसके ब्लाउज़ के बटन खोलने लगा। बटन पीठ की तरफ़ हैं। निर्मल की उँगलियाँ थरथराने लगी हैं। शीरीं का दम फूल रहा है। तेज़ साँसें, गर्म साँसें। निर्मल कहता है, "आज तुम्हें मुझसे नफ़रत नहीं होगी। आज नहीं···"

"दरवाज़े बन्द कर दो···शायद···"—कहती हुई शीरीं निर्मल के गले में बांहें डाल देती है। निर्मल उसकी आवाज़ नहीं सुन पाता, समझ नहीं पाता है। लोहे की चट्टान विजली की गर्म भट्टी में डाल दी गई है। शीरीं पागल हो रही है। समय रुक गया है। शीरीं डूब चुकी है। शीरीं पिघले हुए लोहे की गर्म नदी में डूब चुकी है।

निर्मल भूखा बाघ है और बिस्तरे पर बेहोश पड़ी शीरीं को देखता है। शीरीं उलटी पड़ी है। माँस के मुलायम पिंडों का समूह। कहीं एक दाग़ नहीं है। कहीं स्याही नहीं है। कहीं अँधेरा नहीं। गन्दगी नहीं। शीरी शारीरिक सौन्दर्य की बेदाग़ मूरत है। और निर्मल पद्मावत पागल हो रहा है। अपने नैतिक अधिकार से पागल हो रहा है।

निर्मल विस्तरे से नीचे उतर गया। उसने अपनी कमीज़ और पेंट उतारकर हैंगर पर डाल दिये। अंडरवियर उतार डाला। बनियान पहने रहा। तब शीरीं पद्मावत ने आँखें खोलीं। लगभग चीख़ती हुई बोली, "आते क्यों नहीं ?···देर क्यों करते हो ?···आओ !"

शीरीं की चीख सुनकर निर्मल को लगा जैसे उसकी नसें तड़तड़ाती हुई फट जाएँगी। उसकी देह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी। टुकड़े-टुकड़े होने से पहले वह शीरीं के पलंग पर कूद गया। शीरीं चुपचाप उलटी पड़ी रही। खामोश। आँखें बन्द किये। वह धार्मिक स्त्री है। प्रार्थना कर रही है।

शीरीं मन-ही-मन अपने प्रभु से प्रार्थना कर रही है। हर बार जो हुआ है, इस बार भी वैसा ही न हो जाए। इस बार नहीं ! सिर्फ़ इस बार नहीं !

निर्मल ने दोनों हाथों की ताक़त लगाकर शीरीं को अपनी ओर सीधा कर लिया···उसकी आँखें बन्द हैं। उसका कलेजा बन्द है। बन्द देह जलती है। लाल होंठ जलते हैं। शीरीं गर्म भट्टी की तरह जलती है···लेकिन पता नहीं क्यों, ठीक इसी वक़्त निर्मल पद्मावत को याद आया कि नीचे चित लेटी हुई यह औरत शीरीं नहीं है···कल्याणी है ! 'संग्रीला'-होटल की कल्याणी चीखती हुई, पागल होकर कह रही है···

देर हो चुकी थी। शीरीं ने आँखें खोल दीं और एक हाथ आगे बढ़ाकर निर्मल को उसने वक़्त पर पकड़ना चाहा। पी लेना चाहा। मगर देर हो चुकी थी। बर्फ़ का टुकड़ा अब पानी में था और पानी को भाप बनकर हवा में उड़ जाने में देर नहीं लगती है।

आदमी जब आदमी नहीं होता, बर्फ़ का पिघलता हुआ टुकड़ा होता है—वह मर जाता है। निर्मल मर गया।

हर बार यही होता है। निर्मल अपने नैतिक अधिकार का लाभ उठा नहीं पाता। निर्मल दरिद्र है। सर्वहारा है···सर्वहारा !!

तब शीरीं पद्मावत जाल तोड़कर निकलती हुई मछली की तरह उछल पड़ी। निर्मल के बिखरे हुए, टूटे हुए, शरीर पर कूद गई। दोनों हाथों से निर्मल की देह पीटने लगी, "बस ! इतना ही चाहते थे ? सिर्फ़ इतना ही चाहते थे ?···बोलो ? तुम्हें मेरा ज़रा भी खयाल नहीं··· मुझे मार क्यों नहीं डालते ?···"

परदा खिसकाकर अन्दर आती हुई प्रिया ने कहा, "अँधेरे में किस पर नाराज़ हो रही हो, शीरीं ? कौन है ?"

और निर्मल और निर्मल की देह पर चढ़ी हुई शीरीं को देखकर

प्रिया पत्थर की अहिल्या बन गई। जम गई। एक क़दम भी आगे या पीछे नहीं खिसक सकी। यह दृश्य उसने जीवन में पहली बार देखा है। तसवीरों में देखा होगा, बेडरूम के पलंग पर पहली बार देखा है।

निर्मल पद्मावत ने शीरीं की कमर पकड़कर उसे उठा लिया और जैसे रेलवे के कुली मालगाड़ी के डिब्बों में पार्सल फेंकते हैं, बड़ी बेरहमी से सामने के सोफ़े की ओर फेंक दिया। शीरीं लाश की तरह आधी सोफ़े पर और आधी फ़र्श पर पड़ी रह गई। उससे करवट तक नहीं ली गई।

प्रिया दौड़कर सोफ़े के पास गई। शीरीं को सँभालने की कोशिश करने लगी। निर्मल चुपचाप तौलिए से अपनी देह साफ़ करता रहा। फिर कपड़े पहनकर कमरे से बाहर चला गया। प्रिया और शीरीं की ओर मुड़कर उसने देखा तक नहीं।

प्रिया ने कहा, "उठो शीरीं! आओ, बिस्तरे में चलकर लेटो। तुम्हें आराम की ज़रूरत है। चलो, चलो···जो हो गया, उसे भूल जाओ।"

मगर ऐसा नहीं हो सका। निर्मल पद्मावत वापस आ गया। दरवाज़े के अन्दर नहीं आया। बाहर ही खड़ा रहा और बोला, "प्रिया, बाहर आओ। मुझे तुमसे काम है।"

प्रिया जाना नहीं चाहती थी। प्रिया उससे नफ़रत करती थी और डरती थी। शीरीं ने उसे सारा कुछ बता दिया था।

निर्मल बीमार है। उसे किसी अच्छे डॉक्टर के पास जाना चाहिए। औरत के पास नहीं। मगर वह डॉक्टर के पास नहीं जाता। यों वह नपुंसक नहीं है। मगर बीमार है, कमज़ोर है। औरत के साथ रुक नहीं पाता है। शीरीं ने प्रिया को सब कुछ बता दिया है। प्रिया नफ़रत करती है। शीरीं के प्रति उसे सहानुभूति है। निर्मल के प्रति नहीं। ऐसा था, तो निर्मल ने विवाह क्यों किया? शीरीं को इस अन्धे कुएँ में क्यों ला पटका? किसलिए?

मगर निर्मल पद्मावत ने बुलाया, तो प्रिया को बाहर आना ही पड़ा। वह निर्मल से बेहद डरती है।

शीरीं अपने कमरे में अपने विस्तरे में अकेली रह गई। अकेली, प्यास से छटपटाती हुई, जलती हुई।

उसने प्रिया और निर्मल के जाते ही दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। पलंग पर पांव फैलाकर बैठ गई। एकदम नंगी। आदि-नारी शीरीं पद्मावत! वासना से अभिभूत। इच्छाओं से जर्जर। शीरीं पुरुष नहीं चाहती है। चाहती है अपनी ही जैसी कोई युवती। वह स्वयं को चाहती है। आत्मरति! पररति नहीं मिले, तो और क्या उपाय है? प्रिया भी चली गई। निर्मल उसे कहाँ ले गया है? उसके साथ भी वही करेगा, जो मेरे साथ करता रहता है? उसे भी नंगा कर देगा? उसे भी पागल कर देगा? उसके भी नंगेपन और पागलपन का कोई प्रतिकार नहीं करेगा?

शीरीं पद्मावत ने अपने ही हाथों से अपने स्तनों को दबाया। दबाने से तकलीफ़ होती है। औरत यह तकलीफ़ चाहती है। चाहती है, दूध पीता हुआ बच्चा अपने दाँत उसके स्तनों में गड़ा दे। यही स्त्री का चरम सौभाग्य है। परम गति है।

शीरीं ने अपनी भरी हुई दोनों जाँघें देखीं। बड़े प्यार से उन पर उँगलियाँ फेरने लगी। उँगलियाँ कहाँ रुकती हैं? क्यों रुकती हैं? अपनी ही देह की आग को वर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रह गई। कमरा अन्दर से बन्द है। एकान्त है। शीरीं किस तरह अपने को दो हिस्सों में बाँट दे? पलंग पर लेटी हुई शीरीं। और, शीरीं के अंग-प्रत्यंग को अपने शरीर से दबाती हुई शीरीं। यह कैसे सम्भव है?

शीरीं पलंग पर खड़ी हो गई। खड़ी होकर नीचे झुकी। और नीचे झुकी। सिर के बाल सामने आ गए। स्तन घुटनों से चिपक गए। शीरीं ने अपने हाथ जाँघों के बीच डाल दिए और वह चीखकर बिस्तरे पर गिर पड़ी। स्प्रिंगदार पलंग थरथराने लगा। शीरीं पागल है। वेहोश है। भूखी बिल्ली है। शीरीं तड़पती है। अपने शरीर को नोच-नोचकर

खा जाना चाहती है।

जगह-जगह से लहू छलछला रहा है। शीरीं हँस रही है। ठहाके लगा रही है। पसीने-पसीने हो रही है। करवटें बदलती है। उछलती है। शीरीं भूखी बिल्ली है। शीरीं मछली है। शीरीं मरी हुई मछली है।

११

यह त्रिकोण नहीं है। यह त्रिकोण नहीं है, जिसके तीन बिन्दुओं पर निर्मल और शीरीं और प्रिया, स्थायी-अस्थायी रूप से स्थित हैं। यह एक लम्बी रेखा है। लम्बी और टेढ़ी-मेढ़ी रेखा, जिसकी गति का निश्चय नहीं और न जिसकी अगति का ही निर्णय है। इस रेखा पर जगह-जगह लोग खड़े हैं। हारे हुए लोग, थके हुए लोग, ग़लत जेहाद में लड़ते हुए लोग। ग़लत अन्दाज़ में लड़ते हुए लोग।

लोग दूसरी स्थितियों और घटनाओं से लड़ते हैं। यह लड़ाई ग़लत है, यह लड़ाई नक़ली है। लोगों को सबसे पहले अपने-आप से लड़ना चाहिए। नहीं तो एक वक़्त आता है, जब आदमी ख़ुद-ही-ख़ुद को पराजित करने में ख़ुश होने लगता है। पराजय उसकी आदत बन जाती है। पराजय उसकी अकेली ख़ुशी।

निर्मल पद्मावत ख़ुश होता है। देर तक तड़पते रहने के बाद पलंग पर मरी हुई मछली शीरीं को देख-देखकर ख़ुश होता है। पराजय पद्मावत की है, शीरीं की नहीं। शीरीं असहाय है। उसने मेहता को त्याग दिया है। उसने बाहर निकलने के सारे रास्ते बन्द कर लिए हैं। वह मछली इस जाल से निकल नहीं सकती। यह अन्धा कुआँ नहीं टूटेगा।

यह अंधेरी गुफ़ा नहीं छूटेगी। क़ैद है शीरीं सेल्सबर्ग ! एक ऐसी लड़की क़ैद है, जिसने शारीरिक सुख और शान्ति के सिवाय कुछ जाना नहीं था, चाहा भी नहीं था। कोई सपना नहीं। कोई प्यार भी नहीं। शीरीं सेल्सबर्ग सपनों से और प्यार से डरती थी। न्यू-टेस्टामेंट की कहानियाँ पढ़ती थी और डरती थी। शीरीं सेल्सबर्ग समझती थी कि मनुष्य का मन प्रकृति से ही पापमय और अपराधी है; और इसीलिए अपने मन की भावनाओं-इच्छाओं से भागती रहती थी। हर चीज़ से भागती रहती थी। रोकती थी सिर्फ़ बड़ी बहन की उदार छाया। इस छाया में उसे शान्ति मिलती थी। पिता की मृत्यु के बाद से ही शान्ति मिलती थी। यह शान्ति यौन-तृप्ति की शान्ति थी।

दोनों बहनें एक ही कमरे में रहती थीं। एक ही बिस्तरे में। लोहे की स्प्रिंगदार खाट पर तोशक बिछा होता था। तोशक पर फूलदार चादर।

एक दिन बड़ी बहन ने बियर से भरे गिलास के साथ समझाया कि दो औरतें भी परस्पर शारीरिक जीवन बिता सकती हैं। बिना किसी पुरुष की सहायता लिये बिता सकती हैं। बड़ी बहन ने तरीका बताया। अपने बनाये तरीके पर आगे बढ़ती गयी। शीरीं आश्चर्यचकित थी। वह बेहद उत्तेजित थी। बहन जो करना चाहती थी, करने देती थी ! तनिक भी इन्कार नहीं, ज़रा भी एतराज़ नहीं ! कोई पुरुष शीरीं को इतनी शीतलता, इतनी शीतल उत्तेजना, इतनी उत्तेजक शारीरिक वेदना नहीं दे सकता था। नहीं दे सका था।

दोनों बहनें रात में बिस्तरे पर इकट्ठी सोती थीं। दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर लेती थीं। सीलिंग फैन पूरी स्पीड में चलता रहता था। दिसम्बर-जनवरी में भी घंटे, दो घंटे के लिए चलता रहता था। शीरीं खुश थी कि बड़ी बहन इतनी प्यारी है। इतनी होशियार है। शीरीं भीग जाती थी। उसे महसूस होता था, उसके हाथ और पाँव ठंडे पड़ रहे हैं। जमे जा रहे हैं। फिर भी वह बड़ी बहन की नंगी देह से

लिपटी रहती थी। अपनी उगलियों से उसे सहलाती और थपथपाती रहती थी। शीरीं की उँगलियाँ भीग जाती थीं। बड़ी बहन ख़ुशी से चीख़ती थी और शीरीं के स्तनों पर दाँत गड़ा देती थी। ख़ुशी और पागलपन और बेहोशी !

और इस बेहोशी में शीरीं को धर्म का या पाप का या किसी बात का डर नहीं लगता था। उसे सबसे बड़ा डर था, वह गर्भवती हो जाएगी इसलिए वह जान-बूझकर किसी पुरुष के पास नहीं जाती थी। अवसर मिलने पर भी नहीं। वैसे कभी-कभी तो हर औरत मौके-बेमौके फँस जाती है। इन्कार किया नहीं जाता। किया भी जाए, तो छुटकारा नहीं मिलता।

शीरीं बहुत कम उम्र की थी, फिर भी उसकी माँ उसे ये सारी बातें बताती थी। बता देती थी कि शीरीं के पिता सेक्स के मामले में कितने कमज़ोर हैं, कैसे-क्या करते हैं। माँ उसे बताया करती थी, हर मर्द जानवर होता है। जंगली जानवर ! औरत को उसके जंगलीपन के आगे झुकना ही पड़ता है। झुकना ही चाहिए। झुकना चाहिए और नफ़रत करनी चाहिए। क्योंकि मर्द ख़ूँख़ार होता है। औरत को तकलीफ़ देना ही उसे आता है, सुख देना नहीं।

फिर भी शीरीं अपने पिता को प्यार करती थी। हरदम उन्हीं के पास बनी रहती। घूमने के लिए जाते वक्त माँ उसे कपड़े पहनाने लगती तो गुस्सा होती थी। पिता ही उसे नहलाते थे, कपड़े पहनाते थे, साथ बाहर ले जाते थे। वापस लौटकर वह पिता के साथ ही खाना खाती थी। उन्हीं के पास सोती थी। रात में किसी-किसी दिन उसकी माँ आती थी। सो रहती थी। उसकी नींद खुलती थी और वह ऐसी बातें देखती थी, जिनकी समझदारी उसे नहीं थी। उसे डर होने लगता था। डरकर सो जाती थी। नींद में डरती थी। तरह-तरह की आकृतियाँ ! आदमी जानवर बन जाता है। जानवर अपने विशाल सींगों पर शीरीं को उठा लेता है। शीरीं को जलती आग में पटक देता है। एक ऊँचा

पहाड़ है। कई ऊँचे पहाड़ हैं। पहाड़ पर जानवर हैं। हर जानवर के सींग पर शीरीं लदी है। चीख़ रही है। छटपटा रही है। उसकी नई फ़्रॉक चिथड़े-चिथड़े हो गई है। पहाड़ हिल रहे हैं। पहाड़ टूट रहे हैं। शीरीं सेल्सबर्ग की नींद खुल जाती है। उसकी माँ उसके पिता की जाँघों पर बैठी हुई है और कह रही है, "शीरीं, डर लग रहा है ? छाती पर क्रॉस बनाकर सो जाओ। डरो नही !"

कमरे में अँधेरा है। सीलिंग फ़ैन पूरी स्पीड में चल रहा है। शीरीं डर रही है। कहीं उसकी माँ उसके पिता को जान से तो नहीं मार देगी ? मगर, पिता के प्रति शीरीं की माया-ममता अधिक दिनों तक टिक नहीं सकी। पिता का स्थान बहन ने ले लिया। माँ का देहान्त हुआ। पिता की ज़िन्दगी बदल गई। वे दोहरी ज़िन्दगी जीने लगे। एक ओर शराब और दूसरी ओर चित्रकला। एक ओर मृत्यु, दूसरी ओर धार्मिकता। क्रिश्चियन पौराणिक कथाओं को विषय बनाकर उन्होंने लगातार तसवीरें बनाईं। तसवीरें नही बिकती थीं। वे बेचना भी नहीं चाहते थे। वे मरना चाहते थे और अपनी दोनों बेटियों को भूल जाना चाहते थे।

घर में दोनों बहनें अकेली रहती थीं। बाहर के लोग आते थे। बड़ी बहन को चॉकलेट-टॉफी देते थे। छोटी बहन चॉकलेट खाती रहती थी, मुसकराती रहती थी। मुसकराती थी और सारी बातें समझने की कोशिश करती थी।

कोशिश वह आज भी कर रही है। निर्मल पद्मावत को समझना चाहती है। समझना चाहती है, इतना ताक़तवर आदमी इतना कमज़ोर क्यों है ! डाक्टरों से पूछना चाहती है, मगर डरती है। निर्मल को मालूम हो गया, तो ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा। मगर उसकी कमज़ोरी के बावजूद वह निर्मल को प्यार करती है। आदर करती है, श्रद्धा करती है। निर्मल जीवन के और हर लमहे में ईमानदार है। ग़लत बात नहीं करता।

अन्याय नहीं करता। अक़्लमन्द है। मिल के अपने मज़दूरों से भी ज़्यादा मेहनती है। नेपाली और पठान दरबानों-सिपाहियों से भी ज़्यादा ताक़तवर है। किसी से नहीं डरता, किसी बात से नहीं डरता है। सभी लोग उससे डरते हैं। यह काला-कलूटा, बदसूरत आदमी पता नहीं कब क्या कर डालेगा !

निर्मल पद्मावत शेयर-बाज़ार में जाता था। बड़े-बड़े दलाल उसकी राय मानकर चलते थे। वह बाज़ार की हालत बदल देता था। सोने का भाव ऊँचा चढ़ता है। निर्मल बेचता नहीं है, टेलीफ़ोन पर बैठा हिसाब करता रहता है और सोना ख़रीदता जाता है। निर्मल ख़रीदता है, तो भाव और ऊँचा चढ़ता है। सोना और टाटा कम्पनी का इस्पात और पंजाब नेशनल बैंक के शेयर और हिन्द मोटर कम्पनी और जूट, चाय और अभ्रक की खान···निर्मल स्टॉक-एक्सचेंज पर हावी हो जाता है। जैसे वह आदमी न हो, चीनी लोक-कथाओं का काला जादूगर हो ! मगर उसने शेयर-बाज़ार में जाना बन्द कर दिया। अचानक बन्द कर दिया। उसने देखा, यह बाज़ार जुए का बाज़ार बन गया है। वह कभी जुआ नहीं खेलेगा।

बाज़ार में निर्मल पद्मावत की साख है और दुश्मनी भी है। विश्वजीत मेहता से उसकी दुश्मनी है। मेहता दुश्मनी निभाना जानता है। मेहता ने पूँजीपतियों के एक पूरे दल को निर्मल के ख़िलाफ़ ला खड़ा किया है। इस दल के हाथ में अख़बार हैं और पूँजीपतियों के अख़बारों को पूरी आज़ादी है। वे चाहें जो कुछ छाप सकते हैं। उनके पास अपना काग़ज़ है। विदेशों से मँगवाई गई रॉटरी मशीनें हैं, झूठी-सच्ची ख़बरें बनाने वाले अपने पत्रकार और सम्पादक हैं। कोई भी ख़बर ईजाद की जा सकती है। कोई भी ख़बर छप सकती है। अख़बार अब अख़बार नहीं रह गए हैं। जनता के ख़िलाफ़ पूँजीपतियों की लड़ाई के हथियार बन गए हैं। जनता पैसे देकर ये अख़बार ख़रीदती है और शिकार बनती है। अख़बारी समाचारों का शिकार बनती

है। अखबार तीसरी लड़ाई का डर फैलाते हैं। अखबार सामाजिक बीमारियाँ फैलाते हैं। अखबार हमारे सामने बीमार औरतों, बीमार खेल-तमाशों, बीमार खुशियों का नंगा जाल बिछाते हैं। क्योंकि हम आज़ाद मुल्क के आज़ादी-पसन्द नागरिक हैं, हमें इस जाल में फँसना ही होगा !

हमें बोलने और लिखने की आज़ादी है। हमें समाचार छापने की आज़ादी है। हमें अखबार निकालने की आज़ादी है। आज़ादी है, मगर इस आज़ादी का फ़ायदा उठाने की ताक़त हमारे पास नहीं है। ताक़त है उनके पास, जिनके पास बैंक है, पूँजी है, प्रेस है, मशीनें हैं, काग़ज़ है, आयात-निर्यात का लाइसेन्स है, देश का सोना बाहर और बाहर का सोना देश में लाने की ताक़त है ! ताक़त है उनके पास ! जनता के पास इस ताक़त के नीचे दबे रहने की आज़ादी है। इसके अलावा कुछ भी नहीं है !

निर्मल पद्मावत यह बात जानता है और नए सिरे से लड़ाई करना चाहता है। शीरीं पद्मावत यह बात जानती है और निर्मल के प्रति श्रद्धा रखती है।

इस श्रद्धा के कारण ही शीरीं ज़रा-सी बात पर मेहता को छोड़कर चली आई थी। अब निर्मल की कमज़ोरी के बाद भी उसे त्याग नहीं पाती है। निर्मल को त्यागने की बात वह सोच भी नहीं सकती ! किसी और कारण से नहीं, केवल श्रद्धा के कारण। यह श्रद्धा निरी श्रद्धा नहीं है। इस श्रद्धा में करुणा है—ठीक वही करुणा, जो डॉक्टर रघुवंश में थी कल्याणी के प्रति—सुदूर विदेश में वेश्या का जीवन बिताने वाली कल्याणी के प्रति। निर्मल से शीरीं सारी कहानी सुन चुकी है।

कल्याणी बीमार हो गई थी। निर्मल ने उसके पास न जाने की प्रतिज्ञा कर ली थी। डॉक्टर रघुवंश कल्याणी को बचपन से जानते थे। पढ़ने-लिखने में बड़ी तेज़ लड़की थी। न्यूयार्क की चमक-दमक में आकर

खो गई , बीमार हो गई। समूचे चेहरे पर फफोले निकल आए थे। समूची देह नीली पड़ गई थी। बिस्तरे से उठ नहीं पाती थी। कराहती रहती थी। फफोलों से मवाद निकलता रहता था।

डॉक्टर रघुवंश ने उस पर दया नहीं की। केवल करुणा! इस करुणा में दया नहीं थी। डॉक्टर को पता था, स्वस्थ हो जाने के बाद कल्याणी फिर वही दुर्दान्त और भयानक स्त्री बन जाएगी। फिर वही मछली वन जाएगी, जो पानी के अलावा किसी चीज़ की परवाह नहीं करती है। इसीलिए दया नहीं। मगर इसलिए घृणा भी नहीं। केवल करुणा। इस करुणा में कल्याणी की जीवनी-शक्ति के प्रति श्रद्धा है।

शीरीं पद्मावत की इस करुणा में निर्मल की प्राण-शक्ति के प्रति श्रद्धा है। शीरीं घृणा नहीं कर पाती। निर्मल अन्धी पिपासा में पागल होकर शीरीं का माँस नोच डालता है, हड्डियाँ तोड़ने लगता है, फिर भी नहीं! वह अपने को बचाने की कोशिश नहीं करती। सहती रहती है। वहशी जानवर को सहती रहती है। करुणा करती हैं। शीरीं करुणामयी है। शीरीं बीमार है, भूखी है, न्यूरोटिक है, 'होमोसेक्सुअल' है—मगर करुणामयी है।

शीरीं ग्रीस के पास आइजेन-समुद्र में बसे छोटे-से द्वीप लेस्वस में रहनेवाली ग्रीक-कवयित्री सैफ़ो है। सैफ़ो कम-उम्र लड़कियों से घिरी रहती थी और उनके साथ यौन-संभोग करती थी। उसे एथिस से प्यार था। उसे एथिस और ऐसी ही कितनी लड़कियों से प्यार था। मगर इस प्यार के कारण उसने अपने पति केर्कोलस से घृणा नहीं की। सैफ़ो अपने पति के प्रति करुणामयी ही रही। उसने क्लीस-जैसी प्यारी और ख़ूबसूरत लड़की को जन्म दिया। जन्म देना शीरीं भी चाहती है। मगर उपाय नहीं है। निर्मल कमज़ोर है। निर्मल बीमार है। निर्मल उलझनों, विवशताओं और शत्रुओं से घिरा है।

एक दिन विश्वजीत मेहता ने शीरीं को फ़ोन किया था। शीरीं

उससे मिलने एक रेस्तराँ में गई भी थी। निर्मल उस दिन कलकत्ता से बाहर था। मगर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मेहता साहब शीरीं को दार्शनिक रसेल की उस कहानी की नायिका नहीं बना सके, जिसमें शैतान के जादू से प्रभावित होकर मिसेज़ एलेर्कर अपने पति को आत्म-हत्या के लिए मजबूर कर देती है। शीरीं कहानी की नायिका नहीं है। शीरीं निर्मल पद्मावत की पत्नी है। शीरीं श्रद्धा करती है।

और निर्मल ? निर्मल पद्मावत जानता है, उसकी बीमारी शारीरिक नहीं, मानसिक है। वह हीन-भावना का शिकार है। इस हीन-भावना को दूर करने का उपाय नहीं है। उपाय थी कल्याणी। कल्याणी पार्कस्ट्रीट सीमेट्री में सो रही है। कब्र से बाहर नहीं आ सकती। बाहर आ सकती है प्रिया। मगर प्रिया कल्याणी नहीं है।···शीरीं भी कल्याणी नहीं। कोई भी दूसरी स्त्री कल्याणी नहीं है।

१२

प्रिया बाहर चली आई। मन-ही-मन आतंकित होती रही। निर्मल साहब मुझे क्यों बुला रहे हैं ? क्या उन्हें मेरे और शीरीं के रिश्ते का पता चल गया है ? शीरीं ने उन्हें बता दिया है ? कोई और बात है ? क्या बात है ? प्रिया डरी हुई थी। मन-ही-मन उत्तजित थी। उसने शीरीं और निर्मल को देख लिया था। उन दोनों के समूचे नंगेपन में देख लिया था। भय। उत्तेजना। एक अनजान कँपकँपी। अब क्या होगा ? किस तरह होगा ?

शीरीं के बेडरूम के एक कोने में तिपाई पर एक हवशी ग्रौरत नंगी खड़ी है। ग्रौरत नंगी खड़ी रहती है। लाल-लाल ग्राँखें। लाल होंठ। शीरीं दर्द से तड़पती रहती है। निर्मल के पीछे-पीछे चबती हुई प्रिया सीढ़ियों पर चढ़ती हुई निर्मल के कॉटेज में ग्रा जाती है। दफ़्तर के कमरे में घनवन्तलाल खड़ा है। ईमानदार प्राइवेट सेक्रेटरी। दस साल की नौकरी में घनवन्तलाल ने कुल दो दिन की छुट्टी ली है। पहली बार ग्रपनी शादी के दिन, दूसरी बार ग्रपनी माँ की मृत्यु के कारण। पहले टाइपिस्ट था। फिर मिलर एण्ड मिलर कम्पनी में बड़ा बाबू बन गया। फिर जूट मिल में एकाउन्टेण्ट। ग्रब साहब का प्राइवेट सेक्रेट्री है। दफ़्तर के दूसरे लोग जलते हैं, ग्रौर बेहद डरते हैं। वैसे घनवन्तलाल दोस्ती करने लायक़ ग्रादमी है, डरने लायक़ नहीं। ईमानदारी ग्रौर मेहनत में निर्मल पद्-मावत से ज़रा भी कम नहीं है। कभी झूठ नहीं बोलता। निर्मल के सामने कभी नहीं। इसलिए कभी-कभी निर्मल पर नाराज़ भी होता है। इस फ़र्म को कच्चा माल सप्लाई करने का ठेका क्यों दिया गया? इस ग्रादमी को नौकरी क्यों दी गई? यह ग्रॉडीटर बेईमान है। यह एजेण्ट ज़्यादा कमीशन माँगता है। मगर हर बार ग्राप-ही-ग्राप घनवन्तलाल की नाराज़ी दूर होती रही है। निर्मल बहुत दूर की बात सोचता है। निर्मल भविष्य को समझता है, प्राइवेट सेक्रेटरी नहीं समझता ग्रौर बाद में चकित हो जाता है।

"साहब, जूट मिल तो बन्द हो गया। ग्रब आर्डर पूरा कैसे किया जाए? फ़ोन पर फ़ोन ग्रा रहे हैं? हम कैसे सप्लाई करें? क्या करें?" घनवन्तलाल बेहद ग़ुस्से में है, बेहद उदास है।

"प्रिया, तुम दो मिनट बैठो। मैं ज़रा ग्रपने सेक्रेटरी साहब से निबट लूं," निर्मल प्रिया की ग्रोर देखकर मुसकराता है। प्रिया शरमा जाती है। यह ग्रादमी इतनी जल्दी ग्रपने को कैसे बदल लेता है? किस तरह…

निर्मल टेलीफ़ोन उठाता है। फ़ोन के दूसरे किनारे पर विश्वजीत

मेहता खड़ा है और निर्मल के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा है। निर्मल मुसकराता है, "यस, आई एम स्पीकिंग !...मुझे मंजूर है ! घण्टे-भर में सारे काग़ज़ात तैयार हो जाएँगे। आप जब चाहिए दस्तखत कर दीजिए...जी हाँ, मुझे मंजूर है...थैंक यू !..."

धनवन्तलाल आतंकित हो गया है। भय से उसकी आँखें फैल गई हैं। वह सिर झुकाकर सोफ़े पर बैठ जाता है। निर्मल की मुसकराहट अभी तक होंठों पर कायम है। वह कहता है, "नेशनल जूट मिल मैंने मेहता के यहाँ बेच दी है। बीस हज़ार में बरसों पहले खरीदी थी। दो लाख रुपयों में बेच दी। सौदा घाटे का तो नहीं रहा, क्यों धनवन्त ?"

"ऐसा नहीं कीजिए, साहब ! मेहता साहब के हाथों मत बेचिए... बाज़ार में पद्मावत इण्डस्ट्रीज़ की इज्ज़त है..."

"इज्ज़त नहीं जा रही है," निर्मल ने टेबुल पर पड़े काग़ज़ों को उलटते-पलटते हुए कहा, "तुम ज़रा सोचकर देखो, धनवन्त ! इज्ज़त मेहता की जाएगी, मेरी नहीं ! नेशनल जूट मिल मेहता ने खरीदी है, सारा लेन-देन और लाइबिलिटीज़ के साथ खरीदी है। अब मेरा क्या है ? नेशनल की इज्ज़त उसकी इज्ज़त है, निर्मल पद्मावत की नहीं !"

"मगर आपने बेच क्यों दी ? एक बार आप मिल में चलते तो हड़ताल बन्द हो जाती। मज़दूर आपके सामने सिर नहीं उठा सकते..."

अपने प्राइवेट सेक्रेटरी की इस बात से निर्मल उदास हो गया। आँखें उठाकर उसने डॉक्टर रघुवंश की लड़की को देखा। वह सोफ़े के एक किनारे पाँव-पर-पाँव रखे बैठी थी। सिर झुकाए एक पत्रिका देख रही थी। प्रिया इन्तज़ार कर रही थी, भयभीत हो रही थी।

निर्मल खड़ा हो गया। कुर्सी खिसकाकर फ़्लैट के पीछे की खिड़की पर चला आया। नीचे फैला हुआ शहर दीख रहा है। एक लम्बा जुलूस। प्लेकार्डों पर लिखे हुए नारे। आगे चलती हुई औरतों के हाथों में झण्डे। फुटपाथों पर दोनों ओर जुलूस देखती हुई जनता। जुलूस के पीछे-पीछे चलती हुई पुलिस की गाड़ियाँ। जुलूस के कारण चौराहों पर रुका हुआ

ट्रैफ़िक, ट्रामें, बसें, टैक्सियाँ और ट्रक। जुलूस चौराहा पार कर जाएगा, तब ट्रैफ़िक का रास्ता खुलेगा। जुलूस धीरे-धीरे चलता है और दूसरों के रास्ते रोक देता है।

निर्मल जुलूस देखता रहता है। कहता है, "हड़ताल बन्द नहीं होती, धनवन्तलाल, मेरे जाने से भी नहीं! मज़दूर सिर उठाते, गालियाँ बकते, हो सकता है, ईंट-पत्थर भी चलाते। मज़दूरों की भीड़ जंगल के जानवरों की तरह होती है। एक बार ख़ून का स्वाद चख लेने पर वे ख़ून के प्यासे हो जाते हैं। उन्हें ख़ून चाहिए और कुछ नहीं। ख़ून यानी रुपया। ख़ून यानी सिर्फ़ रुपया! उन्हें ज़्यादा बोनस दो, ज़्यादा मज़दूरी दो, ज़्यादा सुविधाएँ दो। काम के कम घंटे। छुट्टी का ज़्यादा वक़्त। रहने के लिए फ़्री क्वार्टर। फ़्री डॉक्टरी इलाज। फ़्री दवाएँ देते जाओ। भीड़ ख़ूनी जानवर है। वह ख़ून पीती जाएगी। किसका ख़ून है, यह जानने की ज़रूरत भीड़ को नहीं होती है। विश्वजीत मेहता और उसके दोस्तों ने मुझे नीचा दिखाने के लिए नेशनल जूट मिल की भीड़ को मेरे ख़िलाफ़ कर दिया। भीड़ को मेरे ख़ून का स्वाद बता दिया। अब यह जूट मिल अपने पास रखने का कोई फ़ायदा नहीं था। हड़ताल टूट भी जाती, तो मज़दूर काम नहीं करते, चोरी करते, मशीनें तोड़ डालते, रोज़ नई-नई माँगें पेश करते। अब भी वे यही करेंगे। उन्हें ख़ून का स्वाद मिल गया है। ख़ून पद्मावत का हो, या मेहता का, उनके लिए कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। मुझे उम्मीद थी, मेहता नेशनल जूट मिल नहीं ख़रीदेगा। मगर इस बार भी वह मुझसे हार गया। वह नेशनल चला नहीं सकेगा। धनवन्तलाल सप्लाई का एक भी ऑर्डर पूरा नहीं कर सकेगा। इज्ज़त उसकी जाएगी। लॉकअप उसकी फ़ैक्टरी में रहेगा! तुम ज़रा सोचकर देखो, मेरी बात समझ जाओगे..."

निर्मल अभी और बोलता ही रहता, मगर धनवन्तलाल मुसकराता हुआ बाहर जा चुका था। वह लिफ़्ट से नीचे उतरेगा। सीधा नेशनल जूट मिल जाएगा। मज़दूरों के लीडरों से बातें करेगा। हड़ताल टूटनी

नहीं चाहिए। किसी तरह भी नहीं···

धनवन्तलाल के चले जाने से प्रिया और भी ज़्यादा डरने लगती है। शरीर-विज्ञान की किताबों में लिखा है, मानसिक रूप से कुण्ठित व्यक्ति और भी अधिक भयानक होता है। दूसरों को कष्ट देकर वह अपनी शारीरिक हीनताओं को भूलना चाहता है। दूसरों को पीड़ित करके वह अपनी दुर्बलताओं का बदला लेना चाहता है। पता नहीं, अब क्या होगा···

प्रिया सिर झुकाए मैगज़ीन देखती रही। निर्मल पद्मावत खिड़की के बाहर बिखरा हुआ शहर देखता रहा। पद्मावत कुछ सोच नहीं रहा है, यह भी नहीं कि उसने प्रिया को शीरीं के कमरे से क्यों बाहर खींच लिया है। क्या केवल शीरीं को अपनी ताक़त बताने के लिए? प्रिया सोच रही है।

प्रिया सोच रही है, वह स्वयं शीरीं के स्थान पर खड़ी हो जाए। कष्ट सहने का भी एक अलग आनन्द होता है। सैल्फ़-टॉर्चर का आनन्द! वह चाहे तो खड़ी हो सकती है। कोई उसे रोक नहीं सकता। उसने केवल मेडिकल साइन्स की किताबें ही नहीं पढ़ी हैं, उसने दुनिया देखी है। वह चाहे तो निर्मल पद्मावत को सँभाल सकती है। कोशिश कर सकती है कि निर्मल कमज़ोर न रहे। शायद सफल भी हो सकती है।

निर्मल काले पत्थरों का पहाड़ है। वह कोशिश करे तो इस पहाड़ पर हरियाली उगा सकती है। मीठे पानी का झरना बहा सकती है। वह कोशिश करे तो···

"आप शीरीं को इतना क्यों सताते हैं, निर्मल साहब? शी इज़ सच ए फ़ाइन क्रीचर···" अन्त में प्रिया ने इसी तरह अपनी बात शुरू की। निर्मल चौंककर पीछे घूम गया।

निर्मल प्रिया की बग़ल में सोफ़े पर बैठ गया। उसकी आँखों में देखता हुआ, उपहास के स्वर में बोला, "मैं उसका स्वामी हूँ और

सताना मुझे अच्छा लगता है ! वह विरोध क्यों नहीं करती ?"

निर्मल ने प्रिया के उत्सुक, कोमल और क्रमशः कठोर होते हुए चेहरे को भरपूर निगाहों से देखा। प्रिया ने निर्मल को नहीं देखा। देखने की शक्ति नहीं है। शब्दों के अन्तराल में जाने की शक्ति नहीं है। शब्दों के अन्दर शब्द हैं। शब्दों के अन्दर ध्वनियाँ हैं। ध्वनियों के अन्दर प्रतीक। प्रतीक में अर्थ है, या नहीं है, जानने की शक्ति नहीं है। शून्य को जानने-समझने की शक्ति नहीं है।

"आप तो पुराने सामन्तों की तरह बातें करते हैं !" प्रिया का चेहरा कठिन हो जाता है। प्रिया ने सर वाल्टर स्कॉट और अलेक्जेंडर ड्यूमा के उपन्यास पढ़े हैं। ब्रिटिश नाइटों और फ्रांसीसी मस्केटियरों की कहानियाँ। मादाम दि वैलरीज़ के लिए तलवारबाज़ी करते हुए बहादुर योद्धा···रूसी राजकुमारियाँ···अपनी रानी के कोमल हाथों के एक चुम्बन के लिए नौलखा हार चुरा लाने वाला दि आर्तग्ना···

"आप तो पुराने सामन्तों की तरह बातें करते हैं, निर्मल साहब !" आवाज़ बन्द टोकरी को तोड़कर निकलते हुए भूखे साँप की तरह बाहर निकली। फन काढ़कर कमरे में नाचने लगी। इस साँप को देखकर प्रिया स्वयं आतंकित हो गई। शीरीं ने कहा था···शीरीं ने कहा—शीरीं ने···

"बातें करने का मेरा तरीका मेरा अपना है प्रिया ! इतिहास की किताबों से उधार लिया हुआ नहीं," निर्मल ने बड़े ही धीमे स्वर में कहा। फिर चुप हो गया। प्रिया के पास और कोई सवाल नहीं है। सवाल हो भी, तो पूछने का साहस नहीं है। उसने शीरीं की पीठ पर निर्मल के दाँत और पंजों के निशान देखे हैं। पीठ पर, जाँघों पर, शीरीं ने खुद ही कितनी बार निशान दिखाये हैं। निर्मल जानवर हो जाता है। रात के अँधेरे में और दिन के उजाले में जानवर हो जाता है। स्याह दाग़ों से शीरीं का गोरा शरीर भर देता है। स्याह दाग़। अजनबी दाग़। बीमार दाग़।

शीरीं पद्मावत जब अपने बेड-रूम में होती है, तब ये दाग़ प्रिया को दिखाती है। सिटिज़ेन्स-क्लब में अपने जन्म-दिन के उत्सव में मिलने के बाद से ही दिखाती है। शीरीं प्रिया की सहानुभूति चाहती है। सहानुभूति के बाद अपनत्व। अपनत्व के बाद स्नेह। स्नेह के बाद शारीरिक सम्पर्क। सोफ़े पर लेट जाती है और अँगड़ाई लेती हुई कहती है, "मैं मर रही हूं, प्रिया!"

✓यह मरण शब्दों में चित्रित नहीं किया जा सकता, रेखाओं में अंकित नहीं किया जा सकता। यह मरण सत्य है। और सत्य शब्दातीत है, रेखातीत। यह सत्य काल, स्थान और पात्र की सीमाओं से परे है। यह सत्य असत्य है।✓

पृथ्वी नहीं है। शून्य है और आदिम अन्धकार। शून्य है और दो स्त्री-छायाएँ हैं। पुरुष नहीं है। पुरुष नहीं था। दो स्त्री-छायाएँ हैं। अन्धकार है, शून्य है, किसी वस्तु का कोई आधार नहीं है। कोई कारण नहीं है। कोई धर्म नहीं, स्वरूप नहीं, अवस्था नहीं। केवल दो स्त्री-छायाएँ। बाँहें नहीं हैं, हाथ नहीं हैं, उँगलियाँ नहीं, घुटने नहीं, पाँव नहीं, केवल दो मछलियाँ हैं। नीली मछलियाँ। और अन्धकार का सागर है।

मछलियाँ अँधेरे में तैर रही हैं, एक-दूसरे को पकड़ने के लिए उछल रही हैं। मगर बाँहें नहीं हैं। मछलियाँ एक-दूसरे में लिपटने के लिए तड़प रही हैं, मगर पांव नहीं हैं।

अन्धकार सिकुड़ता है। सघन होता है। मछलियाँ पास आती हैं। सिमटती हैं। सटती हैं। एक-दूसरे से चिपक जाती हैं। एक-दूसरे से लिपटी रह जाती हैं। काल रुक जाता है। स्थान मिट जाता है। पात्रत्व समाप्त हो जाता है। दो नीली मछलियाँ हैं और अन्धकार है, शून्य है।

एक मछली कहती है, "और पास आओ, अपने होंठों से मुझे पी जाओ। मेरे होंठों में अपनी जीभ डाल दो। अपने शरीर से मुझे रगड़ती रहो। मैं मर रही हूँ..."

दूसरी मछली कहती है, "मैं मर रही हूँ···मेरी हड्डियाँ तोड़ डालो ! मेरे होंठ अपने दाँतों से कुतर डालो । मार डालो मुझे···मैं मरना चाहती हूँ !"

लेकिन मरना चाहकर भी मर जाना आसान नहीं है । मछलियाँ इसलिए मरती हुई रहकर भी ज़िन्दा रह जाती हैं ।···क्योंकि दोनों के मन में एक पुरुष ज़िन्दा है । एक ही पुरुष !···उसका नाम है,

निर्मल पद्मावत !

पास न होकर भी, शीरीं और प्रिया के मन में काले ब्रोंज की काली मूर्ति की तरह निर्मल पद्मावत खड़ा है···मुसकराता हुआ । दो 'लेस्बियन' औरतें और दोनों के मन में, दिलो-दिमाग़ में, अंग-अंग में ब्रोंज की मूर्ति ।

किन्तु, निरीह एकान्त में निर्मल के लिए सबसे बड़ा दुःख ! ऐसा दुःख जो पुराने रोग की तरह उसका साथी और हमदर्द बन गया हो ।

१३

१७६० ई० में मार्क्विस-दि-सादे के दो उपन्यास 'जूलिएट' और 'जस्टीन' प्रकाशित हुए । दोनों में ही स्त्रियों के समलैंगिक प्रेम-काण्डों का विस्तृत विवरण किया गया । कॉन्वेन्टों में, बोर्डिंग-हाउसों में, शिक्षा-संस्थाओं और वेश्या-गृहों में रहने वाली स्त्रियाँ···

बालजाक़ के उपन्यासों 'सुनहली आँखों वाली लड़की', 'पियरे गोरियो', 'सेराफिटा' और 'पेरिस-जीवन के दृश्य' में फ्रांसीसी समाज के सामन्ती परिवारों में फैले हुए 'लेस्बियनिज़्म' के चित्र उपस्थित किये गए हैं ।

१८६४ में प्रकाशित एल्फोन्ज़ डाउडे की किताब, सैफ़ो, पेरिस के जीवन का एक चित्र···१८७१ में प्रकाशित थामस हार्डी का उपन्यास 'डेस्पोट रेमेडीज़'···

'डेस्पोट रेमेडीज़' की नायिका सिथेरिया कुल अठारह साल की लड़की है। चालीस साल की मिस एल्डक्लिफ़ के साथ उसे शारीरिक काम-सम्पर्क में आना पड़ता है।···बेडरूम के दरवाज़े पर खड़ी होकर एक रात मिस एल्डक्लिफ़ पूछती है, "मैं भीतर आ जाऊँ, सिथेरिया !" बिस्तरे में आकर अपनी बाँहों में बाँधकर उसे कसकर दबाती हुई वह धीमे लहज़े में कहती है, अनुनय-भरे स्वर में, "अब मुझे चूमो, डार्लिंग !"

सिथेरिया पहले इन्कार करती है। इस बूढ़ी और बेहद पकी हुई औरत को चूमना उसे अजीब-सा लगता है। मगर एल्डक्लिफ़ के पास उसके अपने तर्क हैं। वह अपनी 'प्रेमिका' को समझाती है, "जिस तरह मैं तुम्हें चुम्बन लेती हूँ, तुम क्यों नहीं चूमती हो ?···तुम्हारे होंठों में गर्मी नहीं है। क्या किसी मर्द ने कभी तुम्हें चूमा नहीं ?···कभी गर्म नहीं किया तुम्हें ?···सिथेरिया, मेरी प्यारी सिथेरिया, जितना प्यार तुम अपने प्रेमी को देती हो, मुझे उससे ज़्यादा प्यार दो ! कोई भी मर्द तुम्हें जिस तरह प्यार करता होगा, मैं उससे बहुत ज़्यादा सुख दूँगी !···मुझे प्यार करो, सिथी ! मेरे और अपने बीच तुम किसी अजनबी मर्द को मत लाओ। मैं यह बात बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

हार्डी के इस उपन्यास के पूरे सत्तावन वर्ष बाद, १९२८ में एक अँग्रेज़ लेखिका रैडक्लिफ़ हाल का उपन्यास, 'द वेल ऑफ़ लोनलीनेस' (अकेलेपन का अन्धा कुआँ) बाज़ार में आया।···स्टीफ़ेन गॉर्डन एक ब्रिटिश सामन्त-परिवार की लड़की है। अपने माता-पिता की अकेली सन्तान ! उसे लड़कों की तरह मरदाने लिबास में पाला जाता है। लड़कों-जैसा उसका नाम 'स्टीफ़ेन' और वैसा ही रहन-सहन।

युवावस्था में पाँव रखते ही, स्टीफ़ेन अपनी एक सहेली एन्जेला से

'इश्क़' करने लगती है, और उसे मजबूर करती है कि वह अपने पति राल्फ़ क्रोस्बी को त्यागकर स्टीफ़ेन के साथ रहने लगे।

एन्जेला जी-जान से बढ़कर स्टीफ़ेन को प्यार करती है। मगर वह अपने पति को किस तरह छोड़ दे? एन्जेला अपने पति से शारीरिक सुख और सुरक्षा पाती है।…'इश्क़' की यह बात खुल गई। पड़ोस के लोगों ने जान लिया कि एक क्वाँरी लड़की दूसरी एक विवाहित लड़की के प्यार में पागल हो रही है।

…स्टीफ़ेन भागकर पेरिस चली आई। विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। वह एक एम्बुलेन्स कोर में शामिल होकर आहत सैनिकों की देख-भाल करने लगी। वहीं उसे मेरी लेवेलिन से मुलाक़ात हुई। एन्जेला न सही, लेवेलिन ही सही!…स्टीफ़ेन ने अपनी नई 'प्रेमिका' के साथ यौन-सम्पर्क किया। युद्ध समाप्त होने पर दोनों औरतें पेरिस लौट आईं। फिर वेलेरी सेमावर की सहायता से 'लेस्बियन' ज़िन्दगी बिताने वाली औरतों के एक दल में आ मिलीं।

स्टीफ़ेन, ज़ेमी, लेवेलिन और बारबरा, ये चार औरतें अपने बन्द कमरे के एकान्त में एक-दूसरे के शरीर से खेल-तमाशे करने लगीं।… बारबरा को निमोनिया हुआ। वह मर गई। ज़ेमी को बारबरा से बेहद प्यार था। उसने आत्महत्या कर ली।…अपनी प्रेमिका के बिना जीते रहना व्यर्थ है।

इन घटनाओं के बाद मेरी लेवेलिन को अपने 'वर्तमान' और अपने व्यक्तित्व से घृणा हो गई। वह किसी एक स्वस्थ युवक के साथ शहर छोड़कर चली गई।…अब अकेली रह जाती है स्टीफ़ेन गार्डन! और भगवान् से प्रार्थना करती है—

"हमने तुम्हारे अस्तित्व से इन्कार नहीं किया है, प्रभु! इसलिए तुम आओ और हमारी रक्षा करो। हमें स्वीकृति दो। हमें सारे संसार के सामने जीने का अधिकार दो, भगवान्! हमारे अस्तित्व को स्वीकार करो।"

१९३९ में डायना फ्रेड्रिक्स की 'आत्मकथा' प्रकाशित हुई। १९५३ में कैरोल हेल्स का उपन्यास 'विंड-वोमन'...

प्यानो बजाने वाली एक लड़की लॉरेल डीन पहले अनजाने में, फिर जान-बूझकर वायलिन बजाने वाली एक लड़की ज़ेल्डा से प्यार करने लगती है। यह प्यार भी 'होमोसेक्सुअल' है..."लारेल को महसूस हुआ कि वह मर जाएगी, अगर वह जेल्डा के कोमल शरीर पर अपनी उँगलियाँ न फेरती रहे !...अगर वह उसके शरीर की गोल गहराइयाँ महसूस न करे...अगर वह उस ख़ूबसूरत और गर्म मांसपिंड में...!"

यही चाहती है प्रिया। प्रिया शीरीं के ख़ूबसूरत और गर्म मांसपिंड की गहराइयों में खो जाना चाहती है। मगर वह मछली है। उसके पास बाँहें नहीं हैं, पाँव नहीं हैं। वह तैर सकती है। डूब नहीं सकती। डूब जाना वह चाहती है। शीरीं में, निर्मल में नहीं। निर्मल आदमी नहीं है, जानवर है, खूँखार जंगली जानवर...

जंगली जानवर कहता है, "बातें करने का मेरा तरीक़ा मेरा अपना है। मैं किसी दूसरे का तरीक़ा नहीं अपनाता हूँ, प्रिया, तुम मुझे ग़लत न समझो..."

"नहीं, मैं ग़लत नहीं समझती। आप किसी की नक़ल नहीं करते, मैं जानती हूँ। मगर शीरीं इतनी अच्छी औरत है...आप कोई सही तरीक़ा क्यों नहीं निकालते...आख़िर...शी इज़ योर वाइफ़ !"

"मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम यहाँ तक और इतने नीचे उतर आओगी ! तुम्हारा इशारा मैं समझ रहा हूँ। ऐसे इशारे मुझे पसन्द नहीं हैं प्रिया !"

"पसन्दगी का सवाल नहीं है। एक औरत की ज़िन्दगी का सवाल है। आप उसे एक सन्तान नहीं दे सकते, तो उसके पास क्यों जाते हैं ? एक ही बार उसे मार क्यों नहीं डालते ?" प्रिया सोफ़े से उठकर खड़ी हो गई। वह कमरे से बाहर भाग जाना चाहती है। यहाँ अब वह रुक नहीं सकती। निर्मल पद्मावत जानवर है। उसका मन जानवर का

जंगलीपन देखना चाहता है। उसका शरीर नहीं। शरीर थरथराने लगा है। उँगलियाँ काँप रही हैं। काँपती हुई उँगलियाँ शीरीं के पास लौट जाना चाहती हैं। शीरीं की कोमल देह···देह में वासनाओं का पागल ज्वार···अन्धकार सागर का ज्वार···तैरती हुई दो मछलियाँ···

अचानक समूचा फ़्लैट हिलने लगता है। दीवारें हिलने लगती हैं। बाहर अल्सेशियन कुत्तों का जोड़ा भयानक आवाज़ में भूँक रहा है। आकाश फट जाएगा। धरती का गोला टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाएगा।

कल्याणी पार्क-स्ट्रीट सीमेट्री से निकलकर निर्मल-पद्मावत के फ़्लैट में चली आई है। कल्याणी कहती है, "इतने कमज़ोर हो तो क्यों पास आते हो? किसलिए? आखिर किसलिए?"

"मैं कमज़ोर नहीं हूँ, यही बात मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ, कल्याणी!" निर्मल कहता है और 'कल्याणी-मेन्शन' की छत पर बने अपने फ़्लैट का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लेता है। यह दरवाज़ा अब कभी नहीं खुलेगा। प्रिया की चीख़-पुकार में दरवाज़ा खोलने की ताक़त नहीं है।

१४

निर्मल पद्मावत के पास अब कुल तीन चीज़ें बच गई हैं—मिलर एन्ड मिलर कम्पनी। कल्याणी-मेन्शन। वेस्ट बंगाल बैंक के शेयर। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के अफ़सर इन तीनों के हिसाबखाते की जाँच कर रहे हैं।

अफ़सरों का कहना है कि निर्मल ने इनकम-टैक्स का लाखों रुपया ग़बन कर लिया है। निर्मल पद्मावत के सारे रजिस्टर जाली हैं। सारा एकाउन्ट जाल-फ़रेब है। इतने बरसों की मेहनत और होशियारी से उसने जो इमारतें खड़ी की हैं, सब झूठ हैं···

अफ़सर यही कहते हैं। क्योंकि विश्वजीत मेहता यही कहता है। सेठ ताराचन्द मनहरलाल यही कहता है। खानबहादुर यूसुफ़अली, महारानी श्यामगढ़, जूट प्रिन्स कृष्णन् चेट्टियर, राजा हरिसिंह देव यही कहते हैं। विश्वजीत मेहता अकेला नहीं है। अकेला है निर्मल पद्मावत। अकेला ही रहना चाहता है। उद्योगपतियों के किसी भी दल में मिलना नहीं चाहता। अपना अलग दल भी नहीं बनाना चाहता है।

प्रभासचन्द्र नियोगी के साथ वह ग्रुप बना सकता था। शहर के सभी पुराने पूँजीपति नियोगी का साथ देते हैं। इन लोगों के व्यापार का ढँग पुराना है। किसी भी नये व्यवसाय में पूँजी नहीं लगाते। मुनाफ़े को सोने-चाँदी में बदलते हैं। बैंकों में या घर की दीवारों में जमा रखते हैं। खास मौकों पर बैंकों और दूसरे उद्योगपतियों को खासे सूद पर कर्ज़ देते हैं। करोड़ों रुपये का कर्ज़। लाखों रुपये का सूद। सूद की रक़म बढ़ती है। सोने की ईंटें बढ़ती हैं। दीवारें मोटी होती जाती हैं। सोने की दीवारों के ऊपर स्टील की दीवारें मोटी होती जाती हैं। मगर पुराने पूँजीपति नये उद्योग-धन्धों में विश्वास नहीं करते। किसी को नया कल-कारखाना खोलने की सलाह नहीं देते। काँग्रेसी सरकार पर नाराज़ रहते हैं। कहते हैं, सरकार बेईमान है, सारे धन्धों को नेशनलाइज़ कर रही है।

नये उद्योगपति सरकार को बेईमान नहीं कहते हैं। वे सरकार को ईमानदार कहते हैं और समझते हैं कि ईमानदारी बड़ी आसानी से खरीदी जा सकती है। विश्वजीत मेहता नये उद्योगपतियों में हैं। पुराने राजा और पुराने नवाब अब उद्योगपति बन गए हैं। पुरानी रानियों ने अपने ज़ेवरात और हीरे-जवाहरात बैंकों में जमा कर दिये हैं। पुरानी

ज़मीन-जायदाद बेचकर नये कारोबार शुरू किये हैं। नये कारोबार। विदेशों से जहाज़ों में लदकर चोरी से सोना आता है। महारानी श्याम-गढ़ ख़ुद नहीं लातीं, उनके ख़रीदे हुए नौकर लाते हैं। करोड़ों रुपयों का सोना। यह सोना विदेशी बैंकों में जमा होता है। महारानी साहबा साल में कई बार विदेश जाती हैं। न्यूयार्क, लन्दन, पेरिस, रोम। अपने हवाई जहाज़ से जाती हैं। साथ में जाते हैं विश्वजीत मेहता या सेठ ताराचन्द या कृष्णन चेट्टियर। आसाम के बाग़ानों की चाय फ्रांस में बेची जाती है। हज़ारीबाग और कोडरमा-तिलैया का अभ्रक वाशिंगटन में ख़रीदा जाता है। विदेशों से मशीनें ख़रीदकर भारत में लाई जाती हैं। विदेशी पूँजीपतियों की सहायता से देश में नये उद्योग-धन्धे खुलते हैं। धान और गेहूँ की उपज घटती जा रही है। फ़ैशन और ऐश-आराम के साधनों की उपज बढ़ती है। पूँजीपति सरकार से एक क़दम पीछे नहीं रहेंगे। 'प्राइवेट सेक्टर' हमेशा पब्लिक सेक्टर से आगे बढ़ता रहेगा। सरकार जीवन-बीमे की संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण करेगी। पूँजीपति ट्रांसपोर्ट में पूँजी लगाएँगे। सरकार ट्रान्सपोर्ट के साधनों का राष्ट्रीयकरण करेगी। पूँजीपति मनोरंजन के साधनों में पूँजी लगाएँगे। फ़िल्म कम्पनियों में पूँजी लगाएँगे। अख़बारों में, पुस्तक-प्रकाशन में, शिक्षा-संस्थाओं में पूँजी लगाएँगे।

सरकार ईमानदार है। ईमानदारी अब ख़रीद-बिक्री की चीज़ हो गई है। जनता के वोट ख़रीदे जाते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ ख़रीदी जाती हैं। एम० एल० ए० और एम० पी० बिकते हैं। मिनिस्ट्री बिकती है। पूँजी हो, ख़रीदने की अक्ल हो, दुनिया-की-दुनिया ख़रीदी जा सकती है। नये पूँजीपति यह बात जानते हैं। इसीलिए उन्होंने निर्मल पद्मावत को चारों ओर से घेर लिया है। उसके पीछे खूँख़ार शिकारी कुत्ते लगा दिये हैं। जाल बिछ गया है। तमाशा शुरू हो गया है···

अब देर नहीं है। निर्मल पद्मावत समझ रहा है, अब देर नहीं है। प्रभासचन्द्र नियोगी ने उसे बार-बार समझाया है, वह लक्ष्मीचन्द्र

कविरत्न को अपने यहाँ बुलाये और उसे सारी बातों का निपटारा करने का अधिकार दे। सब-कुछ ठीक हो जाएगा। लक्ष्मीचन्द्र अपनी गाड़ी में बैठेगा। 'ग्रेट ईस्टर्न' होटल के अपने फ़्लैट में आएगा। ह्विस्की की एक पूरी बोतल खोलकर बैठ जाएगा। टेलीफ़ोन करना शुरू करेगा। इनकम-टैक्स कमिश्नर रामकृष्ण गोस्वामी। सेठ ताराचन्द का चीफ़ सेक्रेटरी रामवरन लाल। महारानी श्यामगढ़ का खास दोस्त सरदार किशनसिंह। ट्रेड यूनियन कांग्रेस का नेता प्रभात चक्रवर्ती।

रात के ग्यारह बजते-बजते सभी लोग लक्ष्मीचन्द्र कविरत्न के फ़्लैट में चले आएँगे। होटल का यह फ़्लैट ऐसे ही मौकों के लिए किराये पर ले रखा गया है। यह फ़्लैट और तीन-चार एंग्लो-इंडियन और बंगाली लड़कियाँ। लड़कियाँ रात के कपड़े पहनकर आ जाएँगी। चुस्त-दुरुस्त कपड़े। टाइट-फ़िट।

सुबह तक निर्मल पद्मावत की किस्मत का फ़ैसला हो जाएगा। महारानी श्यामगढ़ अपने मोहरों के साथ पद्मावत की तरफ़ आ जाएंगी। शतरंज का खेल पलट जाएगा। इनकम-टैक्स कमिश्नर के पास एक लम्बी-चौड़ी नई कार होगी। कार में दो-एक अदद गुड़ियों-जैसी लड़कियाँ होंगी।

क्योंकि लक्ष्मीचन्द्र कविरत्न दलाल है और कोई काम नहीं जानता है, बीच में खड़ा होना जानता है। बीच में खड़ा होना बुरा काम नहीं है। इस काम के बिना देश और समाज का काम नहीं चलता। कोई-न-कोई व्यक्ति, कोई-न-कोई जाति, कोई-न-कोई राष्ट्र, कोई-न-कोई सभ्यता दलाली करती ही रहती है। इसके बिना दुनिया आगे नहीं बढ़ सकती। इसके बिना विनिमय नहीं हो सकता। सौदा नहीं हो सकता। न किसी वस्तु का, न किसी विचार का।

नियोगी ने कहा, "तुम खुद नहीं कर सकते, तो मैं कविरत्न को फ़ोन कर देता हूँ। वह सज्जन है। स्वयं तुम्हारे पास चला आएगा। ज़्यादा-से-ज्यादा दो लाख रुपये खर्च होंगे। मिलर कम्पनी में सेठ तारा-

चन्द को थोड़े-से शेयर देने होंगे और रानी साहबा के साथ किसी नये बिज़नेस में साझेदारी करनी होगी। तुम तैयार हो जाओ, निर्मल ! नयी दुनिया का तौर-तरीक़ा यही है…"

निर्मल पद्मावत दूसरों का तरीक़ा नहीं अपनाता है। उसने एक ही वाक्य में उत्तर दिया, "मैं सिर्फ़ 'कल्याणी मेन्शन' बचाना चाहता हूँ।"

निर्मल के सोचने-समझने का तरीक़ा उसका एकदम अपना है। वह सोचता है तीस-पैंतीस साल पहले की बात। जब उसकी माँ एक लॉरी-वाले के साथ भाग गई थी। वह सोचता है—उसकी माँ लौटकर उसके पास आ जाए। रहने के लिए एक घर माँगे। सिर के ऊपर एक छाँव ! और वह उसे यह 'कल्याणी-मेन्शन' दे सके। तीस मंज़िलों का ऊँचा स्काई-स्क्रैपर !

निर्मल अपनी माँ के लिए यह स्काई-स्क्रैपर बचाना चाहता है। और किसी चीज़ की उसे परवाह नहीं है। डॉक्टर रघुवंश या डॉक्टर रघुवंश की पत्नी कल्याणी या कल्याणी की लड़की प्रिया की भी नहीं…

१५

प्रिया आधी रात के बाद निर्मल पद्मावत के कॉटेज से निकली, जैसे नरक की अँधेरी गुफ़ा से कोई प्रेतनी…

यह प्रेतनी बहुत थके हुए क़दमों से कल्याणी मेन्शन की सीढ़ियाँ

उतरने लगी। चालीस-पचास सीढ़ियाँ उतरने के बाद रेलिंग का सहारा लेकर बैठ गई। उसे उबकाई आ रही थी। सामने झुककर क़ै करने लगी। कपड़े भीग गए। आँखें बन्द हो गईं। पेट के अन्दर की अंतड़ियाँ ऐंठने लगीं। बड़ी तीखी दुर्गन्ध से साँस घुटने लगी। दम बन्द होने लगा।

प्रिया मर जाएगी। नरक से बाहर आ गई है, मगर बच नहीं सकेगी। क़ै करती-करती मर जाएगी। अंतड़ियाँ बाहर निकल आएँगी। कलेजा बाहर निकल आएगा।

प्रिया ने जीभ बाहर निकाली और अपने होंठ तर करने लगी। होंठों पर क़ै का पीला लुआब जम गया है। आँखें बुझी जा रही हैं। नाक जल रही है। कपड़े रक्त और शराब से लथपथ हैं। ब्लाउज़ की एक बाँह फटकर नीचे उतर आई है। एक स्तन खुल गया है। स्तन पर नाख़ूनों और दाँत के दाग़ हैं। ख़ून से छलछलाते दाग़! दूसरे स्तन का अगला हिस्सा फट गया है। प्रिया की जीभ कट गई है।

प्रिया ने विरोध किया था। मगर प्रिया मर चुकी थी। फ़्लैट के फ़र्श पर औंधी पड़ी हुई प्रिया मर चुकी थी और निर्मल पद्मावत ड्राअर से रम की बोतल निकालकर बार-बार पीता था और बार-बार चीख़ता था, "प्रिया, तुम्हें निर्मल पद्मावत की ताक़त का पता नहीं है।"

प्रिया को उसकी बातें सुनने का होश नहीं था। उसे ग़श आ गया था। उसके होंठों में शराब की भरी बोतल फँसाकर निर्मल उसे बार-बार होश में लाता था। होश में आने पर वह बड़ी ही पागल हँसी हँसती थी और कहती थी, "और करो······अभी मैं ज़िन्दा हूँ! अभी मैं होश में हूँ···" और क्षण-भर बाद फिर बेहोश हो जाती थी।

साड़ी जगह-जगह से चिथड़े हो गई है।···नसों की स्याह रेखाएं। प्रिया होश में आती है। सीढ़ियों पर पांव फैलाये बैठी अपनी जांघें सहलाती है। हाथों की उँगलियाँ फूल गई हैं। जाँघों पर हल्के-हल्के हाथ फेरना अच्छा लगता है। हल्का-हल्का दर्द उभरता है। पेट के निचले

हिस्से में कितनी जलन है ! आग की लपटें उठ रही हैं ।

प्रिया दोनों हाथों से अपना पेट दबाती है, जैसे अंतड़ियाँ बाहर निकल आएँगी । पेट दबाये, दाँतों से निचला होंठ काटती हुई, आँखें बन्द किये हुए, वह सीढ़ियाँ उतरने लगती है और कितना नीचे उतरना होगा ? और कितनी सीढ़ियाँ हैं ? कितनी सीढ़ियों के नीचे हवा है, खुलापन है, रोशनी है ? या रोशनी की एक भी किरन कहीं बाक़ी नहीं है ?

प्रिया के पाँव लड़खड़ाये । फिसल गई । रूई के गट्ठर की तरह सीढ़ियों से नीचे लुढ़कने लगी ।

निर्मल ने नीचे दरबान को फ़ोन कर दिया था । लिफ़्ट प्रिया को लेने के लिए ऊपर जाकर नीचे लौट आई थी । लिफ़्टमैन और दरबान सीढ़ियों से होकर बेतहाशा ऊपर भागते आ रहे थे । उन्होंने प्रिया को उठा लिया । फिर एक क्षण भी रुके नहीं । कार की पिछली सीट पर वह सुला दी गई । कुल दस ही मिनट के बाद डॉक्टर रघुवंश की कोठी के नीचे कार रुकी । नेपाली दरबान ने घंटी बजाई । डॉक्टर रघुवंश अब तक सोये नहीं थे । प्रिया का इन्तज़ार कर रहे थे । चिन्तित नहीं थे । निर्मल ने शाम ही को फ़ोन कर दिया था, प्रिया उसके यहाँ है और शायद उसे लौटने में देर होगी···

डॉक्टर ने दरवाज़ा खोल दिया । दरबान कुछ बोले नहीं । प्रिया को गाड़ी से निकालकर उन्होंने बड़ी हिफ़ाज़त से अन्दर ड्राइंग-रूम के एक सोफ़े पर लिटा दिया और चुपचाप वापस चले गये । डॉक्टर रघुवंश को लगा जैसे वे पागल हो जाएँगे । जैसे उनकी साँसें रुक जाएँगी । मगर वे डॉक्टर हैं । दूसरों को मौत से बचाना ही उनके जीवन का उद्देश्य है । प्रिया मर चुकी है ? प्रिया मर जाएगी ? क्या···

रात के ठीक तीन बजे थे । प्रिया को नहलाने-धुलाने के बाद मरहम-पट्टी करके डॉक्टर ने उसे पलंग पर सुला दिया था । ख़ुद उसके

सिरहाने बैठे गाइनोकोलॉजी की एक नई किताब पढ़ रहे थे। तभी निर्मल पद्मावत ने फ़ोन किया, "डॉक्टर, प्रिया की हालत कैसी है ?"

अत्यन्त शान्त-स्थिर स्वर में डॉक्टर रघुवंश ने उत्तर दिया, "थोड़ी देर पहले तक बेहोशी में बड़बड़ा रही थी। अब सो गई है। मैंने उसे मॉर्फ़िया दे दिया है। सुबह दस-ग्यारह से पहले नींद नहीं खुलेगी।"

बस, इतना कहकर डॉक्टर ने फ़ोन रख दिया। वे जानते थे, निर्मल फ़ोन करेगा। क्षमा-याचना नहीं करेगा, पश्चात्ताप नहीं करेगा, केवल प्रिया का हाल पूछेगा। वे जानते थे, किसी-न-किसी दिन यह बात ज़रूर होगी। निर्मल किसी-न-किसी दिन पागल हो जाएगा। कल्याणी और प्रिया में कोई फ़र्क़ नहीं समझेगा।

कल्याणी ने उन्हें निर्मल पद्मावत का नाम बताया था। 'संग्रीला' होटल की घटनाएँ बताई थीं। सब-कुछ बता दिया था। यह भी कि निर्मल सेक्स के मामले में 'मेल-एडजस्टेड' है। बीमार है।

प्रिया स्वस्थ हो गई। हफ़्ते-भर में उसके शरीर के ज़ख्म भर गए। फिर भी वह अपने मकान से बाहर नहीं निकली। शीरीं पद्मावत ने कितनी बार फ़ोन किया। कई सहेलियाँ मिलने आईं। डॉक्टर ने खुद कितनी बार कहा, "एक बार निर्मल से मिल आओ। उसे तुम्हारी सख्त जरूरत है। उससे मिलकर तुम्हारी उदासी भी दूर हो जाएगी..."

प्रिया नहीं गई। डॉक्टर रघुवंश मेडिकल कॉलेज जाते रहे। हॉस्पिटल जाते रहे। मरीज़ों को देखते रहे। जो कुछ जिस तरह किया करते थे, करते रहे। और अन्त में एक रात, जब प्रिया सो चुकी थी, वे निर्मल पद्मावत के लिए एक पत्र लिखने बैठे।

शायद इससे पहले ऑफ़िशियल पत्रों के सिवा, उन्होंने कभी किसी को छोटा-सा भी कोई पत्र नहीं लिखा था। शायद इसके बाद भी नहीं लिखा !

डॉक्टर रघुवंश का पत्र :

"यह खत लिखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मगर आदमी कभी-न-कभी कोई बेज़रूरत काम ज़रूर करना चाहता है। मेरे जैसा आदमी भी। इतनी छूट तो एक बूढ़े आदमी को मिलनी ही चाहिए। ख़ैर,

"तुम्हें शायद पता नहीं है। मगर मुझे मालूम था कि तुम कल्याणी के प्रेमी रह चुके हो। तुमने उसके लिए नक़ली हीरों का एक हार ख़रीदा था। उस रात जब प्रिया तुम्हारे नौकरों के साथ मेरे यहाँ लाई गई, तो वह हार प्रिया की गर्दन में झूल रहा था। हार को देखकर मुझे बड़ी हँसी आई। आदमी कभी-कभी बच्चों-जैसी हरक़तें कर बैठता है। तुमने वह पुराना और टूटा हुआ हार प्रिया के गले में क्यों डाल दिया? क्या औसत लोगों की तरह नाटक करना तुम्हें भी अच्छा लगता है? मेलोड्रामा? क्या तुम भी उस जिप्सी-नाच के नायक बनना चाहते थे, जिसमें कहानी का नायक अपनी प्रेमिका की बड़ी लड़की से विवाह कर लेता है? क्या जीवन में यह सम्भव है? सम्भव भी हो तो क्या यह उचित है?

"मैं तुम पर सम्भावनाओं और औचित्य के प्रश्न नहीं लादना चाहता। प्रश्नों का उत्तर तुम नहीं दे सकोगे। उत्तर तुम्हारे पास नहीं है। मेरे पास है।

"कल्याणी से मैंने विवाह किया था। विवाह करके मैंने उस पर दया नहीं की थी। मैंने दया अपने-आप पर की थी। पढ़ाई, पढ़ाई के बाद नौकरी, नौकरी के बाद डॉक्टरी के पेशे में उलझ जाने के कारण मुझे विवाह की फ़ुरसत ही नहीं मिली थी। अमरीका गया, तो संयोग से वहाँ कल्याणी से मुलाक़ात हो गई। वह बीमार थी। मर रही थी। उसे बचाना बहुत मुश्किल था। बीमारी ज़हर बनकर नस-नस में फैल गई थी।

"मगर अपने डॉक्टर दोस्तों की सहायता से मैंने उसे बचा लिया।

वह खूबसूरत औरत थी। मैं फ़ुरसत में था। मैंने उससे शादी कर ली। शादी से पहले ही उसने मुझे बता दिया था कि वह अनगिनत मर्दों के साथ सो चुकी है। यही उसका पेशा रहा है। होटलों में नाचती रही है। शराब पीती रही है। सोती रही है। मैंने उससे नफ़रत नहीं की। मैंने अपने-आप पर दया की। मैं उसे साथ लेकर देश लौट आया। कुछ ही दिनों के बाद प्रिया का जन्म हुआ। और कुछ ही बरसों के बाद कल्याणी का देहान्त।

"कल्याणी ने मुझे बताया था कि वह तुम्हें प्यार करती थी। तुम्हें अपने कमरे से निकाल देने के बावजूद प्यार करती थी। उसे यक़ीन था, तुम उसके पास लौट आओगे। वह समझती थी, तुम केवल शर्म के कारण ही नहीं आ रहे हो। अपमान के कारण नहीं। उसे यक़ीन था कभी-न-कभी तुम्हारी शर्म धुल जाएगी। तुम किसी दूसरी औरत के पास जाओगे, जो तुम्हें मौक़ा देगी और तुम्हारी शर्म धुल जाएगी। तुम उसके पास लौट आओगे। तुम ताक़तवर आदमी हो। उसे मुझसे छीन-कर अपने साथ ले जाओगे। अपनी सुरक्षा के लिए ही उसने मुझसे शादी की। तुम्हारे लिए, सिर्फ़ तुम्हारे लिए उसने अपने को सुरक्षित रखना चाहा। अपना स्वास्थ्य, अपना रूप, अपना जीवन सुरक्षित रखना चाहा।

"मैं यह बात समझ भी रहा था। मैं जानता था कि कल्याणी-जैसी स्त्री ही प्यार कर सकती है। गृहस्थ स्त्रियाँ प्यार नहीं कर सकतीं। प्यार कर सकती हैं आवारा औरतें। जिन्हें किसी चीज़ की परवाह नहीं है। जो सामाजिक मर्यादाएँ नहीं मानतीं। नैतिक नियन्त्रण नहीं मानतीं। धर्म नहीं मानती हैं। ऐसी औरतें क़दम-क़दम पर देह बेचती चलती हैं, मगर मन नहीं बेचतीं। पत्नी बनकर भी नहीं। वेश्या बनकर भी नहीं।

"कल्याणी जब तक जीवित रही, मेरे और उसके बीच दीवार बन-कर तुम खड़े रहे। मैं तुम्हें पहचानता नहीं था। मगर कल्याणी को सीमेट्री में दफ़नाकर (वह न्यूयार्क में क्रिश्चियन हो गई थी और धर्म की बड़ी पाबन्द थी, इसीलिए मैंने उसे दफ़नाना ही उचित समझा) मैं

शराब पी रहा था और पहली बार मैंने तुम्हें देखा। देखते ही तुम्हें पहचान गया। कल्याणी तुमसे कम ताक़तवर आदमी से प्यार नहीं कर सकती थी।

"प्यार तुम्हें मैंने भी किया। कल्याणी नहीं थी और तुम्हें प्यार की बेहद ज़रूरत थी। तुम्हारे पागल जानवर को पालतू बनाने की ज़रूरत थी। मैंने सोचा था, प्रिया समझदार होकर तुम्हें पालतू बना लेगी। मगर तुमने अपनी व्यापारिक उलझनों में पड़कर शीरीं मेहता से शादी कर ली। पहली बार उसी दिन मुझे दुःख हुआ था। तुम्हारे लिए दुःख हुआ था।

"शीरीं मेहता, 'होमोसेक्सुअल' थी। ऊँची सोसाइटी की कितनी ही लड़कियाँ उसके पीछे-पीछे भागती थीं। विश्वजीत मेहता कई बार शीरीं के साथ मेरे पास आये थे। उसका यह रोग दूर करना चाहते थे। मेरे पास कोई इलाज नहीं था। मैंने शीरीं को दूसरे डॉक्टरों के पास भेजा था। वह जाना नहीं चाहती थी। उसे अपनी ज़िन्दगी बेहद प्यारी थी। उसे प्यारी थीं लड़कियाँ।

"तुमने उसीसे विवाह किया। मुझे कष्ट हुआ था। वह तुम्हारी कमज़ोरी दूर नहीं कर सकेगी। वह तुम्हें अपने स्त्रीत्व का सुख नहीं दे सकेगी। सुख उसने नहीं दिया और तुम जानवर बने रहे। साधारण मनुष्य नहीं बन सके।

"साधारण मनुष्य होने से बढ़कर सुख की बात दूसरी नहीं है, निर्मल!

"कल्याणी होती और तुम्हारे पास होती, तो तुम्हें यह विश्वास हो जाता।

"असाधारण बनना, 'एब्नॉर्मल' बनना अधिक कठिन नहीं है। आदमी शराब की एक बोतल पीकर असाधारण बन सकता है। दौलत का थोड़ा-सा नशा, यौन-पिपासाओं की थोड़ी-सी उच्छृंखलता, थोड़े-से असामाजिक-अनैतिक कार्य आदमी को 'एब्नॉर्मल' बना देते हैं। कठिन है

साधारण बनना। कठिन है अपनी जीवन-चर्या को सामान्यता-साधारणता में बाँधकर रखना। प्रवृत्ति सहज है। कठिन है निवृत्ति।

"मैं चाहता था, तुम अपनी उपलब्धियों में असाधारण बनो। अपनी परिस्थितियों में नहीं। मैं चाहता था, तुम ज्ञान में, शक्ति में, साहस में, धैर्य में, तुम अपनी आत्मा में असाधारण बनो। अपने शरीर में नहीं। किन्तु शीरीं के सम्पर्क में रहकर यह सम्भव नहीं था, क्योंकि···

"आदमी की शुरुआत उसके अपने परिवार से ही होती है। परिवार का वातावरण और परिस्थितियाँ ही सबसे पहले उसके व्यक्तित्व और कार्यों पर प्रभाव डालती हैं। तुम पर शीरीं का प्रभाव पड़ा। तुम्हारा जानवर और भी जंगली बनता गया।

"और इस जंगलीपन का शिकार हुई, कल्याणी की लड़की—प्रिया!

"पर शिकार बनकर भी प्रिया ने वह काम कर दिया, जो कल्याणी करना चाहती थी। तुम आदमी बन गए। तुम जो कमज़ोरी महसूस कर रहे थे, वह दूर हो गई। मैंने ख़ून से लथ-पथ प्रिया का शरीर देखा था। तुमने उसके साथ बलात्कार किया। एक बार नहीं, कई बार। कल्याणी ने तुम्हारी जो शक्ति छीन ली थी, प्रिया ने उसे वापस लौटा दिया। यह एक अच्छी बात हुई।

"मुझे इस बात का जरा भी दुःख नहीं है कि तुमने मेरी बेटी के साथ राक्षसों-जैसा व्यवहार किया। मुझे खुशी है, क्योंकि शीरीं की दोस्ती करके प्रिया भी 'होमोसेक्सुअल' हो गई थी। और इसी तरह का राक्षसी व्यवहार उसे फिर से साधारण स्त्री बना सकता था। अब वह बीमार नहीं है। स्वस्थ हो गई है, स्वाभाविक हो गई है।

"तुम चारों ओर से मुसीबतों में घिरे हो। तुम्हारा जीवन संकट में है। शहर के ज़्यादातर अमीर आदमी तुम्हारे खिलाफ़ हैं। अख़बारों में

तुम्हारे नाम पर गन्दे प्रचार किए जा रहे हैं। मगर मुझे इन बातों की चिन्ता नहीं है। तुम्हारा दिमाग़ ठीक रहा, तो कोई तुम्हें पराजित नहीं कर सकेगा। तुम सबसे ऊपर ही रहोगे। केवल अपने दिमाग़ पर कब्ज़ा रखो।

"यह ख़त एक लम्बे उपदेश की तरह हो गया है। ऐसा होना नहीं चाहिए था। तुम्हें उपदेश देने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मेरे इस बेज़रूरत काम पर ध्यान नहीं दोगे। मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ।

"मेरे पास जो रुपये हैं, जो जायदाद है, सारा कुछ मैं शीतलदास मेडिकल कॉलेज के न्यूरोलॉजिकल डिपार्टमेंट को दिए जाता हूँ। मेरे पास अब अपना कुछ नहीं है। कुछ भी नहीं है, जिसके लिए मुझे दुनिया की और दुनिया को मेरी ज़रूरत हो सके।

"मुझे नींद की ज़रूरत है और मौत से ज़्यादा आरामदेह नींद और क्या हो सकती है!"

१६

निर्मल पद्मावत के लिए लिफ़ाफ़े में पत्र बन्द करने के बाद डॉक्टर रघुवंश ने अलमारी से ब्रांडी की बोतल निकाली। गिलास में शराब भरकर देर तक पीते रहे। फिर वहीं टेबुल पर बाँहें पसारकर सो गए।

सुबह प्रिया की नींद नौकरों की चीख़-पुकार और लोगों के शोर मचाने से खुली। वह अन्दर से दरवाज़ा बन्द करके सोई थी। बेख़बर।

बेसुध ।

जब वह पिता के कमरे में पहुँची, तब डेथ-सर्टिफ़िकेट लिखा जा रहा था। ब्रेन-हैमोरेज से ही डॉक्टर रघुवंश की मौत हुई है। घाव अन्दर-ही-अन्दर पक रहा था। ज़्यादा शराब पीने के कारण घाव फट गया।

लाश सफ़ेद चादर से ढकी जा चुकी थी। प्रिया माथे पर आँचल डालकर पास चली गई। चादर हटाकर उसने पिता का चेहरा देखा। फिर पाँवों के पास आकर प्रणाम किया। फिर कमरे से बाहर जाने के लिए घूमी ही थी कि जैसे उसे चक्कर आ गया। बेहोश होकर गिरने लगी, मगर पीछे खड़े निर्मल पद्मावत ने उसे सँभाल लिया। प्रिया सँभल गई। बोली, "ज़रा चक्कर आ गया था···अब ठीक हूँ!" और किनारे हटकर खड़ी हो गई।

लाश कुछ घण्टों तक वहीं पड़ी रही। बाहर अर्थी तैयार की जा रही थी। शहर के सभी डॉक्टर आते रहे। मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी और नर्सें। पुराने दोस्त, पुराने मरीज़, रिश्तेदार सभी आते रहे। प्रिया एक किनारे खड़ी रही, चुपचाप, उदासीन, जैसे डॉक्टर रघुवंश मरे नहीं हैं। जैसे यह सब नाटक हो रहा है। दुःखान्त नाटक।

नाटक खत्म हो जाएगा और डॉक्टर रघुवंश नींद से उठकर कहेंगे, "प्रिया, इतने लोग आये हैं, देखो, कॉफ़ी पिलाई जा सकती है···"

रेशमी चादर और फूलों से ढकी लाश सामने पड़ी है। मगर यक़ीन नहीं होता है। मौत का यक़ीन नहीं होता है।

प्रिया ने दूसरी बार मौत देखी है। माँ हास्पिटल में मरी थी। नर्सों-डॉक्टरों के बीच। दवा की बोतलें। गैस्पिरेटर। रबर की नलियाँ। ऑपरेशन-थियेटर। सिर के ऊपर जलता हुआ हज़ारों वाट का बल्ब। एक नर्स प्रिया को बाहर ले गई थी। नीचे पार्क में फूलों की क्यारियों के पास। प्रिया ने कहा था, "नर्स, वह बड़ा-सा फूल तोड़ दो। माँ को दूँगी। माँ को फूल बड़े प्यारे हैं···"

सूरजमुखी का एक फूल वह पिता को भी देना चाहती है। सूरज-मुखी का एक फूल—प्रिया !

बड़े-से ट्रक पर अर्थी रखी गई। शव-यात्रा का जुलूस श्मशान की ओर विदा हो गया। प्रिया ट्रक पर डॉक्टर रघुवंश के पाँवों के पास बैठी रही। नीचे पैदल चलते हुए निर्मल पद्मावत को देखती रही। वह नंगे-पाँव चल रहा था। शान्तिपुरी धोती पहने था, और सफ़ेद बनियान के ऊपर सफ़ेद चादर। निर्मल आगे-पीछे चलते हुए हज़ारों लोगों की भीड़ में था। फिर भी भीड़ से अलग था। ऊपर था। अकेला था। उसके साथ प्रिया भी नहीं थी। उसके साथ था डॉक्टर रघुवंश का शव। और वह अपने ऊँचे और मज़बूत कन्धों पर विशालकाय दैत्य की तरह शव उठाये था। क्षितिज के लाल, जलते हुए श्मशान की ओर अकेला चला जा रहा था······एकदम अकेला। डॉक्टर रघुवंश का शव। कल्याणी का शव। प्रिया और शीरीं का शव। निर्मल के कन्धों पर एक ही शव नहीं है······

प्रिया ने अपनी आँखें बन्द करके मन-ही-मन निर्मल को प्रणाम किया।

डॉक्टर रघुवंश की लाश ट्रक से उतारकर, केवड़ातल्ला श्मशान-गृह की बिजली से जलने वाली चिता पर ले जाई गई। प्रिया बाहर खड़ी रही। हज़ारों लोग बाहर खड़े रहे। भीड़ में प्रिया ने निर्मल को ढूँढ़ने की चेष्टा की। निर्मल कहीं नहीं है। डॉक्टर रघुवंश की लाश जल रही है। निर्मल कहीं नहीं है।

प्रिया हाथ-रिक्शे पर बैठकर अपने घर चली आई। अभिमान से भरी हुई, पीड़ाओं से भरी हुई। सारा दिन सोई रही। रेडियो सुनती रही। सहानुभूति और संवेदनाओं से भरे पत्र और टेलीग्राम पढ़ती रही। अख़बारों में छपी 'ओबिचुरी' पढ़ती रही। टेलीफ़ोन पर पिता के मित्रों, हितैषियों और शिष्यों-सहयोगियों का रुदन-सिक्त कण्ठ-स्वर सुनती

रही । प्रतीक्षा करती रही । किसकी प्रतीक्षा ? निर्मल ने फ़ोन तक नहीं किया । शीरीं पद्मावत नहीं आई ।

पूरा हफ़्ता गुज़र गया । प्रिया अपने पिता की लाइब्रेरी और लेबोरेटरी शीतलदास सेठ मेडिकल कॉलेज के अधिकारियों को सुपुर्द करने में व्यस्त रही । पिता ने अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति मेडिकल कॉलेज को दे दी है । प्रिया के लिए कुछ भी नहीं रहने दिया है । कुछ भी नहीं । मकान किराये का है । अब प्रिया कहाँ जाएगी ?

डॉक्टर रघुवंश की मृत्यु के आठ दिन बाद, प्रिया अपने मकान से बाहर निकली । टैक्सी पर बैठ गई । उसके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा था—निर्मल पद्मावत के नाम डॉक्टर रघुवंश का पत्र । पत्र प्रिया ने पढ़ा नहीं था ।

प्रिया फ़्लैट के दरवाज़े पर आई । अल्सेशियन कुत्ते भौंकने लगे । निर्मल ने कहा, "अन्दर चली आओ प्रिया !"

कमरा उसी रात की तरह बिखरा पड़ा था । कोई चीज़ कहीं से हटाई नहीं गई थी । फ़र्श पर फूलदान टूट गया था, सिगरेट के टुकड़े, किताबें, सोफ़े का गद्दा फट गया था । टेबुल अपनी जगह पर नहीं । शराब की खाली बोतलें । गिलास । शीशे की सुराही एक ओर लुढ़की पड़ी थी ।

कमरे में वही गन्ध थी, जो गन्ध पिता के मरने की रात तक प्रिया का पीछा करती रही थी । प्रिया को बेहोश कर रही थी, वही गन्ध ।

प्रिया अन्दर चली आई । उसने लिफ़ाफ़ा टेबुल पर रख दिया । वह सोफ़े से उठकर खड़ा हो गया । सीधी निगाहों से प्रिया की आँखों में देखने लगा । जैसे शिकारी बुल-टेरियर हिरनों के झुंड की ओर देखता है । वह उदास था, गम्भीर, क्रोधित, जर्जर, बेहद थका हुआ । प्रिया दो क़दम पीछे हट गई । दरवाज़े पर झूलता पर्दा पकड़कर खड़ी हो गई ।

तब उसने ऐशट्रे में सिगरेट का टुकड़ा दबा दिया और प्रिया की ओर वढ़ा। तेज़ी से आगे बढ़ा। उसके होंठों पर बड़ी ही प्यारी मुसकराहट तैरने लगी थी। शान्ति, स्निग्धता, करुणा, विष, सूरजमुखी और मुसकराहटें…!

वह दरवाज़े पर झूलते हुए पर्दे में लिपट गई।…निर्मल आगे नहीं बढ़ा। वापस लौट आया। लौटकर पास ही रखी बड़ी कुर्सी पर बैठ गया, चुपचाप। अन्दर-ही-अन्दर थका हुआ। प्रिया नज़दीक चली आई। बोली कुछ नहीं। सोफ़े के एक किनारे पर बैठ गई, चुपचाप।

वक़्त बीतता रहा। वक़्त बहुत तेज़ी से बीतता रहा।…लगभग आधे घण्टे तक दोनों व्यक्ति, एक-दूसरे से अजनबी बैठे रहे। फिर प्रिया ने पूछा, "अलमारी की चाबी कहाँ है? कॉफ़ी बनाऊँगी! तुम पियोगे, न?"

निर्मल ने कहा, "अलमारी खुली है। तुम जब तक कॉफ़ी तैयार करो, मैं ज़रा नीचे दफ़्तर हो आता हूँ।…इन्कम-टैक्स वाले मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे।…मिलर कम्पनी का ऑडिट चल रहा है।"

नीचे इन्कम-टैक्स के तीन-चार अफ़सर बैठे थे। कम्पनी के हिसाब की जांच कर रहे थे। घनवन्तलाल, इनकम-टैक्स कमिश्नर, श्रीनिवास सर्वाधिकारी, मिलर एन्ड मिलर कम्पनी का मैनेजर, रामचन्द्रन, दो-तीन किरानी, और लक्ष्मीचन्द्र कविरत्न। निर्मल के मना करने पर भी प्रभासचन्द्र नियोगी ने कविरत्न को उसकी मदद के लिए भेज दिया था।

निर्मल पद्मावत वहाँ रुका नहीं। सभी लोग उसकी ओर देखते रहे। वह बग़ल के अपने चैम्बर में चला गया। थोड़ी देर बाद श्रीनिवास सर्वाधिकारी और लक्ष्मीचन्द्र वहाँ आए। लक्ष्मीचन्द्र ने मुसकराते हुए कहा, "एकाउंट की जाँच लगभग पूरी हो चुकी है। कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है। आप कोई फ़िक्र न कीजिए, पद्मावतजी, सब-कुछ ठीक हो गया है। मैंने घनवन्तलाल से बात कर ली है। कमिश्नर साहब से भी

बात तय हो चुकी है।"

"क्या तय हो चुका है ?" निर्मल सीधा तनकर बैठ गया, "मिलर कम्पनी के बारे में दूसरे किसी को कुछ तय करने का हक़ नहीं है। कविरत्नजी, कमिश्नर साहब से कहिए, जो कहना है, साफ़-साफ़ मुझे बताएँ।"

श्रीनिवास सर्वाधिकारी की आँखों में लालसा थी और भय था। बेहद मोटे-तगड़े आदमी थे। ऊँची तोंद, छोटी-छोटी आँखें। पहले किसी कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर थे। सर्विस कमीशन का इम्तहान पास करके आई० टी० ओ० हुए। अब कमिश्नर हुए हैं। पहले कभी घूस नहीं ली है। साल-दो-साल बाद रिटायर होनेवाले हैं। फिर भी, कभी घूस नहीं ली। डरते थे, अब भी डरते हैं। मगर अब रिटायर होनेवाले हैं, अपना मकान तक नहीं बना पाए। अपनी गाड़ी तक नहीं है। इसी साल सबसे छोटी लड़की की शादी करनी है। कोई लड़का विलायत जाने के खर्च से कम की बात नहीं करता। दहेज में नयी कार चाहिए। लड़की बदसूरत है। इसी उम्र में दो-तीन बार लेडी-डॉक्टरों की मदद ले चुकी है। पत्नी कहती है, "सभी लेते हैं। तुम क्यों घूस नहीं लोगे ? सिनहा साहब ने राँची में शानदार कोठी बनवाई है। चोपड़ा साहब के तीनों लड़के लन्दन में पढ़ रहे हैं। शास्त्री तुमसे कितना जूनियर है, मगर उसकी बीवी हर साल गर्मियों में कश्मीर जाती है।"

सर्वाधिकारी ईमानदार आदमी हैं। कहते हैं, "साफ़ बात यही है, मिस्टर पद्मावत कि मिलर कम्पनी ने इनकम-टैक्स का ग़लत रिटर्न दिखाया है। पिछले चार साल से ग़लत दिखाया है। सरकारी ऑडिटरों की रिपोर्ट है कि कुल तीस लाख रुपयों की गड़बड़ की गई है।"

"मगर यह गड़बड़ ठीक हो सकती है। मेरी बात हो चुकी है। सर्वाधिकारी साहब को ज्यादा नहीं, कुल पचास हज़ार रुपये चाहिए। तीस लाख रुपयों की गड़बड़ी इतने से मिट जाएगी। आप धनवन्तलाल से कहिए, कैश पेमेन्ट का इन्तज़ाम कर लें। नियोगीजी ने कहा है, "आपको कैश देने में अभी कोई दिक्क़त हो, तो वे कर देंगे···" कविरत्न ने होंठों

पर बड़ी ही मीठी मुसकान जमाते हुए कहा।

निर्मल पद्मावत सोच रहा था। पचास हज़ार रुपयों की बात नहीं, मिलर कम्पनी की बात नहीं, निर्मल कराची के अपने उस चायखाने की बात सोच रहा था, जिसे पुलिस ने उखाड़ फेंका था। आज मिलर कम्पनी को उखाड़ फेंका जा रहा है। कल कल्याणी-मेन्शन···

निर्मल हँसने लगा। कल कल्याणी-मेन्शन छीन लिया जाएगा। कल या परसों या चौथे दिन छीन लिया जाएगा। उसने कहा, "मैंने कभी कोई बेईमानी नहीं की है। मैं एक पैसा घूस नहीं दूँगा···आप लोग जा सकते हैं। आप लोग चले जाइए। मैं कभी किसी से नहीं बताऊँगा कि इनकम-टैक्स वाले मुझसे घूस माँग रहे थे। मैं नहीं कहूँगा। मैं फ़रियाद नहीं करता। नहीं तो मैं पुलिस को खबर दे सकता था। बग़ल के कमरे में सी० आई० डी० के अफ़सरों को बिठाये रख सकता था। टेप-रिकार्ड पर आप लोगों की बातें टेप कर सकता था।··· आप लोग जा सकते हैं। मैं घूस नहीं दूँगा।"

"आप दोबारा सोच लीजिए, निर्मल साहब," कविरत्न के स्वर में सहानुभूति थी, "यह मौक़ा फिर नहीं आएगा। मेरा इसमें कोई स्वार्थ नहीं है। मुझे इस 'डील' में सौ रुपये भी नहीं मिलेंगे। फिर भी मैंने सर्वाधिकारीजी को आपके लिए तैयार किया है। आप दोबारा सोच लीजिए।"

निर्मल पद्मावत चुपचाप कविरत्न की बातें सुनता रहा, सर्वाधिकारी की बातें सुनता रहा, देर तक। नेशनल जूट मिल बन्द है। विश्वजीत मेहता में ताक़त नहीं है कि मिल चालू कर सके। मिलर कम्पनी पर सरकारी ताला लग चुका है। पद्मावत इन्डस्ट्रीज़ की सारी बाँहें तोड़ डाली गई हैं। कल या परसों कल्याणी मेन्शन छीन लिया जाएगा। कल या परसों या चौथे दिन। और इससे बचने का तरीक़ा एक ही है, पचास हज़ार रुपए।

"आप परिस्थिति समझ रहे हैं, पद्मावतजी ?" लक्ष्मीचन्द्र कवि-

रत्न पूछता है।

"हाँ," पद्मावत कहता है। सिर झुकाए रहता है। वह मेज़ पर फैले हुए अपने दोनों हाथों की ओर देख रहा है। ये हाथ उसके अपने हैं।

"फिर क्या तय करते हैं?" सर्वाधिकारी की आँखों में अब तक लालसा चमक रही है। निर्मल पद्मावत अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधता है। बाँहों में मछलियाँ उभरने लगी हैं। वह उठकर खड़ा हो जाता है। कहता है, "नहीं, मैं घूस नहीं दूँगा।"

यह पागलपन है। यह आत्महत्या है। आज की दुनिया में ऐसा नहीं होता है। कोई भी समझदार आदमी ऐसा नहीं करता। मगर निर्मल पद्मावत समझदार आदमी नहीं है। पागल है, वहशी है। वह लिफ़्ट पर चढ़ता है और अपने फ़्लैट के सामने पहुँचकर पूछता है, "क्यों प्रिया, कॉफ़ी ठण्डी तो नहीं हो गई?"

१७

शीरीं पद्मावत के जीवन का कोई अर्थ नहीं रह गया है। वह अपने कमरे में लेटी रहती है। वारमूथ, शेरी, पोर्ट, रम के गिलास गले में डालती रहती है। रापबर्गर की लाल शराब। पीला कॅनियैक। सफ़ेद गिलास में सफ़ेद बोर्दा। शियान्ती। भरी दोपहरी में जिन। शाम को आरमँग्ना। अकेली रात और बर्गन्डी का नशा। किसी भी शराब का

नशा। किसी भी ख़याल का नशा। कोई भी प्यार। कोई भी भुलावा...

अपने-आपको भुलावे देती रहती है। लेटी रहती है। जैसे उसे पैरेलेसिस हो गया हो। दोस्त औरतें आती हैं। सोसाइटी-लेडीज़ ! अमीर औरतें आती हैं। कुछ देर हँस-बोलकर वापस चली जाती हैं। नहीं आती है प्रिया। क्षण-भर के लिए भी नहीं।

शीरीं जानती है, प्रिया निर्मल के फ़्लैट में है। कॉफ़ी बना रही है। कोई गीत गुनगुना रही है। सो रही है। छत पर घूम रही है। हँस रही है। शरमा रही है। शीरीं जानती है और गिलास में शराब ढालती है, पी जाती है। कंठ जलता है, कलेजा जलता है। प्राण...

निर्मल पद्मावत शीरीं को भूल नहीं गया था। उसे याद था, शीरीं अपने बेडरूम में है। किसी औरत के साथ है। अकेली है। उसका इन्तज़ार कर रही है। उसका या प्रिया का इन्तज़ार? मगर वह स्वयं शीरीं के बेडरूम में नहीं जाता था। प्रिया को भेजता भी नहीं था। वह चाहता था, शीरीं ऊपर आये। निर्मल के फ़्लैट में आये। या हमेशा-हमेशा के लिए कल्याणी-मेन्शन छोड़कर चली जाए। कहीं भी चली जाए। और कहीं नहीं, तो विश्वजीत मेहता के पास। मेहता शीरीं को अपना लेगा। मेहता निर्मल की हर चीज़ अपना लेगा।

निर्मल शीरीं के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा था। वह क्या करेगी?

शीरीं प्रिया के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रही थी। वह क्या करेगी?

मिलर एण्ड मिलर कम्पनी चली गई। धनवन्तलाल भी चला गया। निर्मल ने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को बर्ख़ास्त कर दिया। क्योंकि धनवन्तलाल ने लक्ष्मीचन्द्र कविरत्न से कहा था, वह निर्मल पद्मावत को मना लेगा। उसने निर्मल को ग़लत समझा। निर्मल ग़लत समझनेवाले आदमी से नफ़रत करता है।

धनवन्तलाल चला गया। और भी बहुत सारी चीज़ें चली गईं।

कल्याणी-मेन्शन ?

निर्मल पद्मावत ने अपने जीवन में पहली बार बेईमानी की। पहली बार उसने हिसाब-किताब में गड़बड़ी की। नेशनल जूट मिल की बिक्री के रुपयों और वैस्ट बंगाल बैंक के शेयरों की बिक्री के रुपयों से उसने इनकम-टैक्स और जुरमाने की रक़म भर दी। कुल पैंतीस लाख रुपये। और इसके बाद उसने एकाउन्ट में दिखाया कि कल्याणी-मेन्शन बनवाते वक़्त उसने डॉक्टर रघुवंश से कई लाख रुपये कर्ज़ लिये थे। उसने साबित किया कि ये रुपये डॉक्टर रघुवंश के नहीं थे। रुपये कल्याणी के थे, जिन्हें वह मरने के वक़्त अपने पति के पास छोड़ गई थी। कैश रुपये नहीं थे, ज़ेवर और हीरे-जवाहरात की शक्ल में थे।

और इस कर्ज़ को चुकाने के लिए निर्मल पद्मावत ने कल्याणी-मेन्शन प्रिया के नाम बेच दिया। यही एक तरीक़ा था, जिससे कल्याणी मेन्शन को बचाया जा सकता था। नहीं तो तीस मंज़िलों का यह मकान ज़ब्त कर लिया जाता। नीलाम कर दिया जाता। हो सकता है, विश्वजीत मेहता या महारानी श्यामगढ़ या सेठ ताराचन्द द्वारा खरीद लिया जाता।

निर्मल ने दस्तावेज़ प्रिया के हवाले कर दिए। रजिस्ट्रार के यहाँ प्रिया को ले गया। काग़ज़ात पर दस्तखत हो गए। प्रिया ने एतराज़ नहीं किया। वह समझ रही थी, इसमें सिर्फ़ कानूनी चाल है, निर्मल का कोई और मक़सद नहीं है। वह सिर्फ़ कल्याणी की स्मृति को बचाना चाहता है, अपने पास रखना चाहता है।

पद्मावत इण्डस्ट्रीज़ का दीवाला निकल गया। निर्मल पद्मावत के पास कुछ भी नहीं रहा। दाएँ हाथ की उंगली में बड़ा-सा नीलम रह गया। और कुछ नहीं। कहीं कुछ नहीं।

प्रिया को लिफ़्ट तक पहुँचाकर उसने कहा, "तुम ऊपर चलो। मैं

थोड़ी देर में ग्रा रहा हूँ।"

ग्रौर वह सड़क के इस पार ग्राकर खड़ा हो गया। सड़क के इस पार एक छोटा-सा तालाब है। तालाब के चारों ग्रोर पेड़-पौधे लगे हैं ग्रौर बैठने के लिए सीमेन्ट की बेंच है। तालाब पुराना है। संगमर्मर के घाट पर ग्रजनबी झाड़ियाँ उग ग्राई हैं। ग्रजनबी फूल नीले जल के शीशे में ग्रपनी मुसकराहटें देखते हैं। घाट के एक किनारे ग्राखिरी सीढ़ी पर एक एंग्लो-इंडियन लड़की बैठी है, चुपचाप। पानी में उगी झाड़ियों को देखती हुई ग्रपनी बातें सोच रही है।

...तालाब के शान्त जल की सतह पर फैली हुई है—कल्याणी-मेन्शन की छाया। निर्मल घाट पर खड़ा है ग्रौर झिलमिलाती हुई छाया देख रहा है। नीले जल पर सफ़ेद छाया !

ग्रचानक एक बड़ी-सी मछली ऊपर उछलती है। टूट जाती है जल की सतह। कल्याणी-मेन्शन हिलने लगता है। देर तक थरथराता रहता है।...निर्मल पद्मावत देख रहा है, ग्राश्चर्यचकित होकर। वह पहली बार इस तालाब पर ग्राया है। पहली बार उसने यहाँ खड़े होकर देखा है कि कल्याणी-मेन्शन की ग्राकृति मिटती जा रही है।

निर्मल घूमकर ग्रपना चेहरा ग्रपने मकान की तरफ़ कर लेता है, शहर का सबसे ऊँचा मकान—'कल्याणी-मेन्शन ! निर्मल की तरह ऊँचा ग्रौर नीले जल की सतह पर हिलता-थरथराता हुग्रा।'

दूसरी मछली उछलती है।

ग्राखिरी सीढ़ियों पर बैठी हुई एंग्लो-इन्डियन लड़की निर्मल को पहचान लेती है। ग्राश्चर्य से भर उठती है।...

मिस्टर पद्मावत यहाँ खड़े हैं ? ग्रकेले ? वह उठ खड़ी होती है। पास ग्राकर नमस्ते करती है।

निर्मल मुसकराता है, "कैसी हो मिस ? कहाँ काम कर रही हो ?"

"सब ठीक ही है, सर ! ग्रगले हफ़्ते मेरी शादी हो रही है। ग्राप

शादी के जल्से में आएँगे तो ?" वह पूछती है और मुसकरोती रहती है। जैसे ताज़ा खिला हुआ कोई फूल। जैसे ख़ूबसूरती, जैसे प्यार !

निर्मल सोचता है कि शादी उसने ख़ुद भी की है। शीरीं मेहता से की है। मगर उसने कभी शीरीं को एक साधारण स्त्री समझकर नहीं देखा है। उसे स्त्री समझकर नहीं देखा है। देखा है, जैसे वह भी कल्याणी-मेन्शन की कोई एक मंज़िल हो, एक फ़्लैट हो, जहाँ रात-भर ठहरा जा सकता है। नेशनल जूट मिल के पावर-लूम का कोई पुर्ज़ा। मिलर कम्पनी का कोई बही-खाता।

निर्मल पद्मावत ने शीरीं को देखा-समझा नहीं है। अपने इर्द-गिर्द के किसी व्यक्ति को नहीं। समाज को तो और भी नहीं। निर्मल के चारों ओर एक समाज है, इसे उसने कभी देखने-समझने की कोशिश नहीं की है। इसकी उसे फ़ुरसत नहीं मिली थी। किसी दिन नहीं। फ़ुरसत आज मिली है, इतने दिनों बाद। क्योंकि आज फिर वह फ़ुटपाथ पर आ गया है। सर्वहारा होकर ही आया है और उसका इस फ़ुटपाथ से पुराना परिचय है। कराची के फ़ुटपाथ, बम्बई के फ़ुटपाथ, न्यूयार्क, वाशिंगटन, काहिरा, कलकत्ता के फ़ुटपाथ। फ़ुटपाथों में कोई अन्तर नहीं है। हर शहर के फ़ुटपाथ एक-ही जैसे होते हैं। अन्तर होता है, मकानों में। मकान में रहनेवाले लोगों में। लोगों की ज़िन्दगी में, तहज़ीब में, तवारीख में अन्तर होता है।

निर्मल ने यह अन्तर समझने की कभी कोशिश नहीं की थी और इसीलिए आज वह फ़ुटपाथ पर आ गया है। विश्वजीत मेहता और उसके दोस्तों से निर्मल पद्मावत जीत नहीं सका। क्योंकि उसे इस शहर का क़ायदा मालूम नहीं था। मंज़ूर नहीं था उसे इस शहर का क़ानून ! क़ानून ने उसे पराजित किया। निर्मल के इस्पात ने उसे पराजित किया......

वह लड़की नमस्ते करके चली गई। अगले हफ़्ते उसकी शादी हो

रही है। निर्मल तालाब की सरहद से बाहर आ गया। सड़क के किनारे फुटपाथ। सड़क पर कारें और टैक्सियां भाग रही हैं। फुटपाथ खाली है। प्रिन्सेस स्ट्रीट में कोई पांव-पैदल नहीं चलता है।

निर्मल पैदल चलता हुआ, सड़क पार कर गया। कल्याणी-मेन्शन की लिफ़्ट के पास आया। लिफ़्टमैन नया है। उसे पहचानता नहीं। पूछता है, "कहाँ जाना है ?"

"तीसवाँ फ़्लोर !" निर्मल लिफ़्ट में आईने के सामने खड़ा हो जाता है। दो-तीन लोग और आ जाते हैं। एक मोटी पंजाबिन है, मिसेज़ सिंह। दो आदमी रेस के घोड़ों की बातें कर रहे हैं। एक आदमी सिर झुकाए कोई किताब पढ़ रहा है। लिफ़्ट ऊपर चलती है। मिसेज़ सिंह निर्मल को पहचान रही है। मुसकराती है, सिर झुकाती है। गेहूँ से भरे दोनों थैले सँभालती हुई कहती है, "नमस्ते पद्मावत साहब ! मैंने सुना, आपने यह कोठी बेच दी है ? किसी डॉक्टर की कोई लड़की है……"

"हाँ, बेच ही दी है।" निर्मल हँसकर कहता है। सफ़ेद दाँतों की पंक्तियां चमक उठती हैं। चमक उठते हैं लिफ़्ट में खड़े लोग। लिफ़्टमैन कांप उठता है। यही हैं कल्याणी-मेन्शन के मालिक—निर्मल पद्मावत !

धीरे-धीरे सभी लोग उतर जाते हैं। निर्मल अकेला रह जाता है। लिफ़्टमैन भय और लज्जा से सिर झुकाये कहता है, "मैं हुज़ूर को पहचान नहीं सका। मुझे माफ़ कर दिया जाए…"

"मुझे पहचानने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस मकान की मालकिन ऊपर फ्लेट में रहती है। उसी को पहचानने की कोशिश करो," निर्मल कहता है और शीरी के फ़्लैट के सामने उतर जाता है।

तीन हफ़्तों से ज़्यादा हो गए थे। वह शीरीं से नहीं मिला था।

शीरीं अपने पलंग पर सोई पड़ी थी, नींद में बेसुध, नशे में बेहोश। इन तीन हफ़्तों में उसने शराब पीने और सोसाइटी की सस्ती औरतों के साथ शोरगुल मचाने के सिवा कुछ भी नहीं किया है। निर्मल की याद

ग्राई है तो शराब पीकर भुलाती रही है। पागल होती रही है। अपना ही शरीर नोचती रही है। अपना ही शरीर···

शीरीं की ग्राँखें खुल गईं। वह बिस्तर से उठी नहीं, अँगड़ाई लेकर उसी तरह लेटी रह गई और मुसकराई। शीरीं की मुसकराहट में दर्द है। वह निर्मल का इन्तज़ार करती रही है।

शायद निर्मल ने पहली बार महसूस किया कि इस मुसकराहट में दर्द है। और यह मुसकराट हर सवाल का जवाब है, हर दुःख की दवा है, हर परिस्थिति को सह लेने की ताक़त है। इस मुसकराहट में और कुछ नहीं है। एक औरत अपने मर्द को देखकर मुसकरा रही है। दर्द, अभिमान, शिकवा और शिकायतें और समर्पण···

वह पलंग के पास जाकर खड़ा हो गया, फिर शीरीं के सिरहाने बैठ गया। उसकी बिखरी हुई लटों में उँगलियाँ लपेटने लगा, तो वह बोली, "मुझे इस शहर से कहीं बाहर ले चलो, निर्मल! यहाँ मैं मर जाऊँगी।"

निर्मल मुसकराया। फिर उसका सिर अपनी गोद में डालता हुआ बोला, "ले जाऊँगा जहाँ कहोगी···तुम्हें साथ ले जाऊँगा। अभी और कुछ बातें मत करो। कुछ मत पूछो।"

शीरीं के पास कोई सवाल था भी नहीं। इन तीन हफ़्तों में उसके सारे सवाल मर चुके थे। वह खुद मर चुकी थी।

दोनों को कब नींद आ गई, किसी को पता नहीं। वह अपने पति की बाईं बाँह पर सिर रखकर सो गई। सुबह उसी की नींद पहले खुली। निर्मल सोया रहा। वह बाथरूम चली गई। देर तक नहाती रही। पानी के बड़े टब में डूबती-तैरती रही। चेहरे पर छींटें मारती रही और कोई पुराना गीत गुनगुनाती रही।

बरसात हुई। जल भर आया···

सूखी पड़ी नदी में फिर, जल भर आया
नीली मछली मरी हुई
जी उठी। प्राण में प्यार, प्यार में प्यास,
प्यास से मरी हुई नीली मछली
के लिए
नदी में जल भर आया।
बरसात हुई !

निर्मल पद्मावत की नींद खुली। फिर भी आँखें बन्द किये वह अजनबी भाषा का यह अजनबी गीत सुनता रहा और उसे लगा कि बाहर बरसात हो रही है। सूखी हुई नदी में पानी भर आया है। समुद्र में ज्वार उठने लगा है। जीवन का ज्वार···

शीरीं दरवाज़ा खोलकर कमरे में आ गई। काले-काले केशों को बाँधकर मनीपुरी जूड़ा बना लिया है उसने ! बालों के बीच मोटी-सी रक्त-रेखा है, सिन्दूर !···सिन्दूर की मोटी लकीर चमक रही है और शीरीं पद्मावत का समूचा चेहरा रंगीन हो उठा है। इस रंगीनी में लज्जा है।···अभिमान है।···और है करुणा !

जैसे किसी जादू के कारण, जैसे अपने अस्तित्व की किसी अनिवार्यता के कारण शीरीं···निर्मल के बहुत क़रीब आ गई पहली बार ! जैसे कोई दुलहिन पहली बार सोने के कमरे की रोशनी बुझाती है।

···निर्मल पद्मावत चुपचाप पलंग से नीचे उतरकर खड़ा हो गया, मुसकराता हुआ। शीरीं से कहने के लिए उसके पास कोई शब्द नहीं था। कोई भाषा नहीं थी। वे दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे और शब्दहीन थे, भाषाहीन।

नदी सूख चुकी थी। समुद्र सूख चुका था।···नीली लहरों पर उछलती हुई वह मछली मर चुकी थी। और मरी हुई मछली के शरीर से प्रकट हो रही थी, ऊपर उठ रही थी एक स्त्री :

शीरीं पद्मावत !

शीरीं जन्म ग्रहण कर चुकी थी। अब वह मरेगी नहीं।...प्यार मरता है। वासनाएँ भी मर जाती हैं। करुणा नहीं ! केवल एक करुणा नहीं मरती है।

It is good... very good... Perhaps the best... to the point.

डा. दिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
८६५२

13692
नेपाल-भारत सांस्कृतिक केन्द्र, पुस्तकालय

13 MAR 1974
16 MAR 1974
21 APR 1974

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
[illegible] रेग्मी स्मारक
[illegible]

८९१.४३३
चौ म८३ मं

H
891.433
CHA/M

13692

डा. ढिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय